मन की बात

जनभागीदारी के 10 साल

सितम्बर 2024

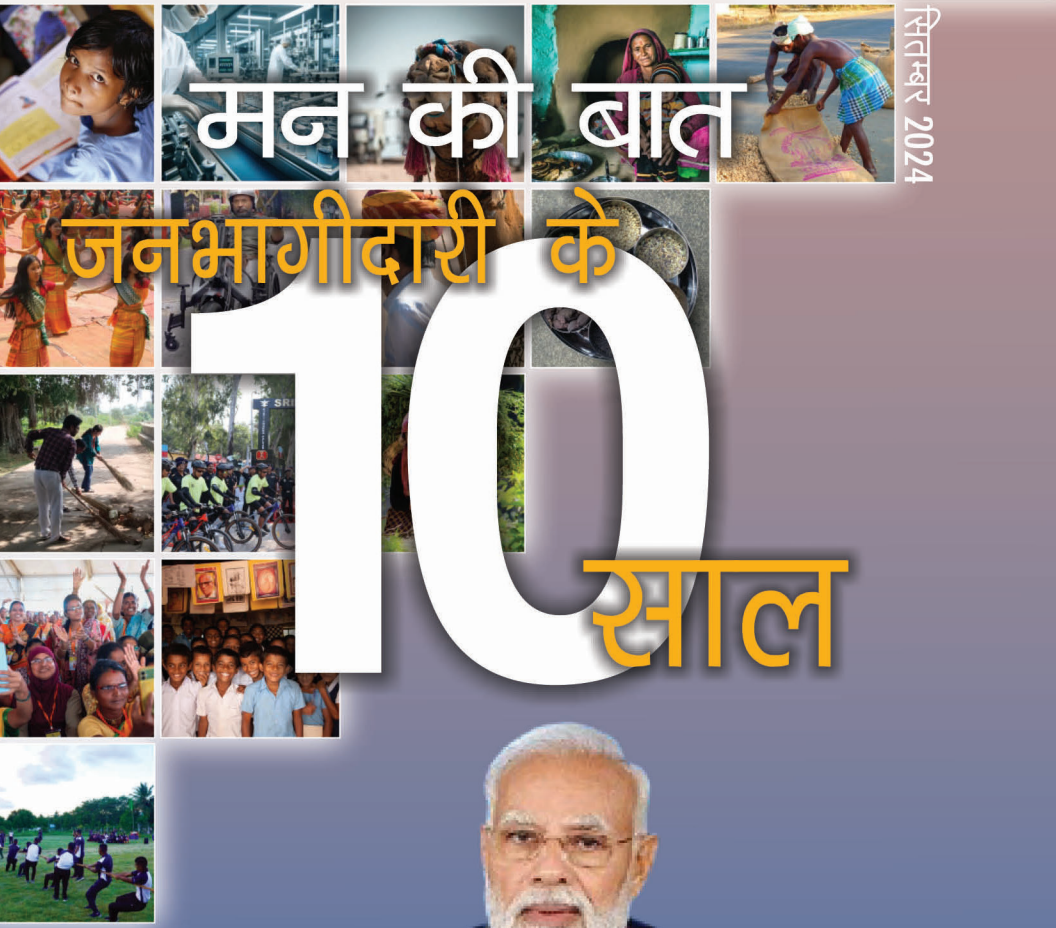

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 1

02 मुख्य आलेख

2.1 **स्वच्छ भारत मिशन का सफल दशक** 32
2.2 **ग्लोबल मेडिकल टूरिज़्म में बढ़ती आयुर्वेद की भूमिका** 54
2.4 **मेक इन इंडिया से बढ़ा सांस्कृतिक आत्मविश्वास** 66

03 संक्षेप में

3.1 कार्रवाई का आह्वान 16
3.2 मन की बात की महती यात्रा 22
3.3 कैच द रेन अभियान 30
3.4 **स्वच्छ भारत मिशन :** वैश्विक नेताओं ने की प्रधानमंत्री मोदी के विज़न की प्रशंसा 40
3.5 प्रधानमंत्री के प्रयासों से प्राचीन कलाकृतियों की वापसी 48
3.6 **वेव्स :** क्रिएटिव स्पेक्ट्रम में अवसर 64

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 सामाजिक परिवर्तन और जन जागरूकता में बढ़ती नागरिक सहभागिता शशि शेखर वेम्पति 20
4.2 जल संरक्षण में भारतीय अभियान - आलोक के. सिक्का 26
4.3 सार्वजनिक स्वास्थ्य और सम्मान का क्रांतिकारी बदलाव - एम. हरि मेनन 36
4.4 कलाकृति और संस्कृति की पुनर्प्राप्ति - रतन पी. वाटल 46
4.5 संथाली भाषा का डिजिटलीकरण सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण रामजीत टुडू 50
4.6 आयुर्वेद बन सकता है आधुनिक चिकित्सा का पूरक - मनोरंजन साहू 57
4.7 वेव्स चैलेंजेज़ : रचनात्मकता और अवसरों का संगम - बीरेन घोष 60
4.8 मेक इन इंडिया विनिर्माण क्षेत्र का पुनरुत्थान काल - पंकज मोहिन्द्रू 70
4.9 एक पेड़ माँ के नाम - के.एन. राजसेखर 73

05 प्रतिक्रियाएँ 77

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

'मन की बात' में एक बार फिर हमें जुड़ने का अवसर मिला है। आज का ये Episode मुझे भावुक करने वाला है, मुझे बहुत-सी पुरानी यादों से घेर रहा है– **कारण ये है कि 'मन की बात' की हमारी इस यात्रा को 10 साल पूरे हो रहे हैं। 10 साल पहले 'मन की बात' का प्रारम्भ 3 अक्तूबर को विजयादशमी के दिन हुआ था और ये कितना पवित्र संयोग है कि इस साल 3 अक्तूबर को जब 'मन की बात' के 10 वर्ष पूरे होंगे, तब नवरात्रि का पहला दिन होगा।** 'मन की बात' की इस लम्बी यात्रा के कई ऐसे पड़ाव हैं, जिन्हें मैं कभी भूल नहीं सकता। 'मन की बात' के करोड़ों श्रोता हमारी इस यात्रा के ऐसे साथी हैं, जिनका मुझे निरंतर सहयोग मिलता रहा। देश के कोने-कोने से उन्होंने जानकारियाँ उपलब्ध कराई।

'मन की बात' के श्रोता ही इस कार्यक्रम के असली सूत्रधार हैं। आमतौर पर एक धारणा ऐसी घर कर गई है कि जब तक चटपटी बातें न हों, नकारात्मक बातें न हों, तब तक उसको ज्यादा तवज्जोह नहीं मिलती है, लेकिन 'मन की बात' ने साबित किया है कि देश के लोगों में positive जानकारी की कितनी भूख है। Positive बातें, प्रेरणा से भर देने वाले उदाहरण, हौसला देने वाली गाथाएँ, लोगों को बहुत पसंद आती हैं। जैसे एक पक्षी होता है 'चकोर', जिसके बारे में कहा जाता है कि वो सिर्फ वर्षा की बूँद ही पीता है। 'मन की बात' में हमने देखा कि लोग भी 'चकोर' पक्षी की तरह देश की उपलब्धियों को, लोगों की सामूहिक उपलब्धियों को कितने गर्व से सुनते हैं। **'मन की बात' की 10 वर्ष की यात्रा ने एक ऐसी माला तैयार की है, जिसमें हर episode के**

2014 2024

10 साल मन की बात के

प्रत्येक कहानी के साथ, उजागर होती अनेक आवाज़ें

साथ नई गाथाएँ, नए कीर्तिमान, नए व्यक्तित्व जुड़ जाते हैं। हमारे समाज में सामूहिकता की भावना के साथ जो भी काम हो रहा हो, उन्हें 'मन की बात' के द्वारा सम्मान मिलता है। मेरा मन भी तभी गर्व से भर जाता है, जब मैं 'मन की बात' के लिए आई चिट्ठियों को पढ़ता हूँ। हमारे देश में कितने प्रतिभावान लोग हैं, उनमें देश और समाज की सेवा करने का कितना जज्बा है। वो लोगों की नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने में अपना पूरा जीवन समर्पित कर देते हैं। उनके बारे में जानकर मैं ऊर्जा से भर जाता हूँ। 'मन की बात' की ये पूरी प्रक्रिया मेरे लिए ऐसी है, जैसे मंदिर जा करके ईश्वर के दर्शन करना। 'मन की बात' के हर बात को, हर घटना को, हर चिट्ठी को मैं याद करता हूँ तो ऐसे लगता है मैं जनता जनार्दन, जो मेरे लिए ईश्वर का रूप है, मैं उनका दर्शन कर रहा हूँ।

साथियो, मैं आज दूरदर्शन, प्रसार भारती और All India Radio से जुड़े सभी लोगों की भी सराहना करूँगा। उनके अथक प्रयासों से **'मन की बात' इस महत्त्वपूर्ण पड़ाव तक पहुँचा है।** मैं विभिन्न TV channels को, Regional TV channels का भी आभारी हूँ जिन्होंने लगातार इसे दिखाया है। 'मन की बात' के द्वारा हमने जिन मुद्दों को उठाया, उन्हें लेकर कई Media Houses ने मुहिम भी चलाई। मैं Print media को भी धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने इसे घर-घर तक पहुँचाया। मैं उन YouTubers को भी धन्यवाद दूँगा, जिन्होंने 'मन की बात' पर अनेक कार्यक्रम किए। **इस कार्यक्रम को देश की 22 भाषाओं के साथ 12 विदेशी भाषाओं में भी सुना जा सकता है।** मुझे अच्छा लगता है जब लोग ये कहते हैं कि उन्होंने 'मन की बात' कार्यक्रम को अपनी स्थानीय भाषा में सुना। आप में

से बहुत से लोगों को ये पता होगा कि 'मन की बात' कार्यक्रम पर आधारित एक Quiz Competition भी चल रहा है, जिसमें कोई भी व्यक्ति हिस्सा ले सकता है। MyGov.in पर जाकर आप इस competition में हिस्सा ले सकते हैं और ईनाम भी जीत सकते हैं। आज इस महत्त्वपूर्ण पड़ाव पर मैं एक बार फिर आप सबसे आशीर्वाद माँगता हूँ। पवित्र मन और पूर्ण समर्पण भाव से मैं इसी तरह भारत के लोगों की महानता के गीत गाता रहूँ। देश की सामूहिक शक्ति को हम सब इसी तरह celebrate करते रहें, यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है, जनता-जनार्दन से प्रार्थना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछले कुछ सप्ताह से देश के अलग-अलग हिस्सों में जबरदस्त बारिश हो रही है। **बारिश का ये मौसम, हमें याद दिलाता है कि 'जल-संरक्षण' कितना जरूरी है, पानी बचाना कितना जरूरी है। बारिश के दिनों में बचाया गया पानी, जल संकट के महीनों में बहुत मदद करता है और यही 'Catch the Rain' जैसे अभियानों की भावना है।** मुझे खुशी है कि पानी के संरक्षण को लेकर कई लोग नई पहल कर रहे हैं। ऐसा ही एक प्रयास उत्तर प्रदेश के झाँसी में देखने को मिला है। आप जानते ही हैं कि 'झाँसी' बुंदेलखंड में है, जिसकी पहचान पानी की किल्लत से जुड़ी हुई है। यहाँ झाँसी में कुछ महिलाओं ने घुरारी नदी को नया जीवन दिया है। **ये महिलाएँ Self help group से जुड़ी हैं और उन्होंने 'जल सहेली' बनकर इस अभियान का नेतृत्व किया है। इन महिलाओं ने मृतप्राय हो चुकी घुरारी नदी को जिस तरह से बचाया है,** उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। इन जल सहेलियों ने बोरियों में बालू भरकर चेकडैम (Check Dam) तैयार किया, बारिश का पानी बर्बाद होने से रोका और नदी को पानी से लबालब कर दिया। इन

महिलाओं ने सैकड़ों जलाशयों के निर्माण और उनके Revival में भी बढ़-चढ़कर हाथ बँटाया है। इससे इस क्षेत्र के लोगों की पानी की समस्या तो दूर हुई ही है, उनके चेहरों पर ख़ुशियाँ भी लौट आई हैं।

साथियो, कहीं नारी-शक्ति, जल-शक्ति को बढ़ाती है तो कहीं जल-शक्ति भी नारी-शक्ति को मज़बूत करती है। मुझे मध्य प्रदेश के दो बड़े ही प्रेरणादायी प्रयासों की जानकारी मिली है। **यहाँ डिंडौरी के रयपुरा गाँव में एक बड़े तालाब के निर्माण से भू-जल स्तर काफी बढ़ गया है। इसका फायदा इस गाँव की महिलाओं को मिला। यहाँ 'शारदा आजीविका स्वयं सहायता समूह' इससे जुड़ी महिलाओं को मछली पालन का नया व्यवसाय भी मिल गया।** इन महिलाओं ने Fish-Parlour भी शुरू किया है, जहाँ होने वाली मछलियों की बिक्री से उनकी आय भी बढ़ रही है। मध्य प्रदेश के छतरपुर में भी महिलाओं का प्रयास बहुत सराहनीय है। यहाँ के खोंप गाँव का बड़ा तालाब जब सूखने लगा तो महिलाओं ने इसे पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया। 'हरी बगिया स्वयं सहायता समूह' की इन महिलाओं ने तालाब से बड़ी मात्रा में गाद निकाली, तालाब से जो गाद निकली, उसका उपयोग उन्होंने बंजर ज़मीन पर fruit forest तैयार करने के लिए किया। **इन महिलाओं की मेहनत से ना सिर्फ तालाब में खूब पानी भर गया, बल्कि फसलों की उपज भी काफी बढ़ी है। देश के कोने-कोने में हो रहे 'जल संरक्षण' के ऐसे प्रयास पानी के संकट से निपटने में बहुत मददगार साबित होने वाले हैं।** मुझे पूरा भरोसा है कि आप भी अपने आस-पास हो रहे ऐसे प्रयासों से जरूर जुड़ेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, उत्तराखंड के उत्तरकाशी में एक सीमावर्ती गाँव है 'झाला'। **यहाँ के युवाओं ने अपने गाँव को स्वच्छ रखने के लिए एक खास पहल शुरू की है। वे अपने गाँव में 'धन्यवाद प्रकृति' या कहें 'Thank you Nature' अभियान चला रहे हैं।** इसके तहत गाँव में रोजाना दो घंटे सफाई की जाती है। गाँव की गलियों में बिखरे हुए कूड़े को समेटकर, उसे गाँव के बाहर, तय जगह पर डाला जाता है। इससे झाला गाँव भी स्वच्छ हो रहा है और लोग जागरूक भी हो रहे हैं। **आप सोचिए, अगर ऐसे ही हर गाँव, हर गली-हर मोहल्ला अपने यहाँ ऐसा ही Thank You अभियान शुरू कर दे, तो कितना बड़ा परिवर्तन आ सकता है।**

साथियो, स्वच्छता को लेकर पुडुचेरी के समुद्र तट पर भी जबरदस्त मुहिम चलाई जा रही है। यहाँ रेम्या जी नाम की महिला, माहे municipality और इसके

आस-पास के क्षेत्र के युवाओं की एक टीम का नेतृत्व कर रही है। इस टीम के लोग अपने प्रयासों से माहे Area और खासकर वहाँ के Beaches को पूरी तरह साफ़-सुथरा बना रहे हैं।

साथियो, मैंने यहाँ सिर्फ दो प्रयासों की चर्चा की है, लेकिन हम आस-पास देखें, तो पाएँगे कि देश के हर किसी हिस्से में, 'स्वच्छता' को लेकर कोई-ना-कोई अनोखा प्रयास जरूर चल रहा है। **कुछ ही दिन बाद आने वाले 2 अक्तूबर को 'स्वच्छ भारत मिशन' के 10 साल पूरे हो रहे हैं। यह अवसर उन लोगों के अभिनंदन का है, जिन्होंने इसे भारतीय इतिहास का इतना बड़ा जन-आंदोलन बना दिया।** ये महात्मा गाँधी जी को भी सच्ची श्रद्धांजलि है, जो जीवनपर्यंत इस उद्देश्य के लिए समर्पित रहे।

साथियो, आज ये 'स्वच्छ भारत मिशन' की ही सफलता है कि **'Waste to Wealth' का मंत्र लोगों में लोकप्रिय हो रहा है। लोग 'Reduce, Reuse और Recycle' पर बात करने लगे हैं, उसके उदाहरण देने लगे हैं।** अब जैसे मुझे केरला में कोझिकोड में एक शानदार प्रयास के बारे में पता चला। यहाँ Seventy four (74) year के सुब्रह्मण्यम जी 23 हज़ार से अधिक कुर्सियों की मरम्मत करके उन्हें दोबारा काम लायक बना चुके हैं। लोग तो उन्हें 'Reduce, Reuse और Recycle यानी RRR (Triple R) Champion भी कहते हैं। उनके इन अनूठे प्रयासों को कोझिकोड सिविल स्टेशन, PWD और LIC के दफ्तरों में देखा जा सकता है।

साथियो, स्वच्छता को लेकर जारी अभियान से हमें ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को जोड़ना है और यह एक अभियान, किसी एक दिन का, एक साल का नहीं होता है, यह युगों-युगों तक निरंतर करने वाला काम है। यह जब तक हमारा स्वभाव बन जाए 'स्वच्छता', तब तक

करने का काम है। मेरा आप सबसे आग्रह है कि आप भी अपने परिवार, दोस्तों, पड़ोसियों या सहकर्मियों के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान में हिस्सा जरूर लें। मैं एक बार फिर 'स्वच्छ भारत मिशन' की सफलता पर आप सभी को बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, हम सभी को अपनी विरासत पर बहुत गर्व है। और मैं तो हमेशा कहता हूँ 'विकास भी-विरासत भी'। यही वजह है कि मुझे हाल की अपनी अमरीका यात्रा के एक खास पहलू को लेकर बहुत सारे सन्देश मिल रहे हैं। एक बार फिर हमारी प्राचीन कलाकृतियों की वापसी को लेकर बहुत चर्चा हो रही है। मैं इसे लेकर आप सबकी भावनाओं को समझ सकता हूँ और 'मन की बात' के श्रोताओं को भी इस बारे में बताना चाहता हूँ।

साथियो, अमरीका की मेरी यात्रा के दौरान अमरीकी सरकार ने भारत को करीब 300 प्राचीन कलाकृतियों को वापस लौटाया है। अमरीका के राष्ट्रपति बाइडेन ने पूरा अपनापन दिखाते हुए डेलावेयर (Delaware) के अपने निजी आवास में इनमें से कुछ कलाकृतियों को मुझे दिखाया। **लौटाई गईं कलाकृतियाँ Terracotta, Stone, हाथी के दाँत, लकड़ी, ताँबा और काँसे जैसी चीज़ों से बनी हुई हैं। इनमें से कई तो चार हज़ार साल पुरानी हैं। चार हज़ार साल पुरानी कलाकृतियों से लेकर 19वीं सदी तक की कलाकृतियों को अमरीका ने वापस किया है– इनमें फूलदान, देवी-देवताओं की टेराकोटा (Terracotta) पट्टिकाएँ,**

जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के अलावा भगवान बुद्ध और भगवान श्री कृष्ण की मूर्तियाँ भी शामिल हैं। लौटाई गईं चीज़ों में पशुओं की कई आकृतियाँ भी हैं। पुरुष और महिलाओं की आकृतियों वाली जम्मू-कश्मीर की Terracotta tiles तो बेहद ही दिलचस्प हैं। इनमें काँसे से बनी भगवान श्री गणेश जी की प्रतिमाएँ भी हैं, जो दक्षिण भारत की हैं। वापस की गई चीज़ों में बड़ी संख्या में भगवान विष्णु की तस्वीरें भी हैं। ये मुख्य रूप से उत्तर और दक्षिण भारत से जुड़ी हैं। **इन कलाकृतियों को देखकर पता चलता है कि हमारे पूर्वज बारीकियों का कितना ध्यान रखते थे। कला को लेकर उनमें गजब की सूझ-बूझ थी।** इनमें से बहुत-सी कलाकृतियों को तस्करी और दूसरे अवैध तरीकों से देश के बाहर ले जाया गया था– यह गम्भीर अपराध है, एक तरह से यह अपनी विरासत को खत्म करने जैसा है, लेकिन मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि पिछले एक दशक में ऐसी कई कलाकृतियाँ और हमारी बहुत सारी प्राचीन धरोहरों की घर वापसी हुई है। इस दिशा में आज भारत कई देशों के साथ मिलकर काम भी कर रहा है। मुझे विश्वास है जब हम अपनी विरासत पर गर्व करते हैं तो दुनिया भी उसका सम्मान करती है और उसी का नतीजा है कि आज विश्व के कई देश हमारे यहाँ से गई हुई ऐसी कलाकृतियों को हमें वापस दे रहे हैं।

मेरे प्यारे साथियो, अगर मैं पूछूँ कि कोई बच्चा कौन-सी भाषा सबसे आसानी से और जल्दी सीखता है, तो आपका जवाब होगा 'मातृ भाषा'। हमारे

देश में लगभग बीस हज़ार भाषाएँ और बोलियाँ हैं और ये सब की सब किसी-न-किसी की तो मातृ-भाषा हैं ही हैं। कुछ भाषाएँ ऐसी हैं, जिनका उपयोग करने वालों की संख्या बहुत कम है, लेकिन आपको यह जानकर ख़ुशी होगी कि उन भाषाओं को संरक्षित करने के लिए आज अनोखे प्रयास हो रहे हैं। ऐसी ही एक भाषा है हमारी 'संथाली' भाषा। 'संथाली' को digital Innovation की मदद से नई पहचान देने का अभियान शुरू किया गया है। 'संथाली' हमारे देश के कई राज्यों में रह रहे संथाल जनजातीय समुदाय के लोग बोलते हैं। भारत के अलावा बाँग्लादेश, नेपाल और भूटान में भी संथाली बोलने वाले आदिवासी समुदाय मौजूद हैं। संथाली भाषा की online पहचान तैयार करने के लिए ओडिशा के मयूरभंज में रहने वाले श्रीमान रामजीत टुडु एक अभियान चला रहे हैं। रामजीत जी ने एक ऐसा Digital Platform तैयार किया है, जहाँ संथाली भाषा से जुड़े साहित्य को पढ़ा जा सकता है और संथाली भाषा में लिखा जा सकता है। दरअसल कुछ साल पहले जब रामजीत जी ने मोबाइल फोन का इस्तेमाल शुरू किया तो वो इस बात से दुखी हुए कि वो अपनी मातृभाषा में सन्देश नहीं दे सकते ! इसके बाद वो 'संथाली भाषा' की लिपि 'ओल चिकी'

संथाली भाषा की लिपि

को टाइप करने की सम्भावनाएँ तलाश करने लगे। अपने कुछ साथियों की मदद से उन्होंने 'ओल चिकी' में टाइप करने की तकनीक विकसित कर ली। आज उनके प्रयासों से 'संथाली' भाषा में लिखे लेख लाखों लोगों तक पहुँच रहे हैं।

साथियो, जब हमारे दृढ़ संकल्प के साथ सामूहिक भागीदारी का संगम होता है तो पूरे समाज के लिए अद्भुत नतीजे सामने आते हैं। इसका सबसे ताज़ा उदाहरण है 'एक पेड़ माँ के नाम'। ये अभियान अद्भुत अभियान रहा, जन-भागीदारी का ऐसा उदाहरण वाकई बहुत प्रेरित करने वाला है। पर्यावरण संरक्षण को लेकर शुरू किए गए इस अभियान में देश के कोने-कोने में लोगों ने कमाल कर दिखाया है। उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और तेलंगाना ने लक्ष्य से अधिक संख्या में पौधारोपण कर नया रिकार्ड बनाया है। **इस अभियान के तहत उत्तर प्रदेश में 26 करोड़ से ज़्यादा पौधे लगाए गए हैं। गुजरात के लोगों ने 15 करोड़ से ज़्यादा पौधे रोपे। राजस्थान में केवल अगस्त महीने में ही 6 करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए हैं।** देश के हज़ारों स्कूल भी

इस अभियान में जोर-शोर से हिस्सा ले रहें हैं।

साथियो, हमारे देश में पेड़ लगाने के अभियान से जुड़े कितने ही उदाहरण सामने आते रहते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है तेलंगाना के के.एन. राजशेखर जी का। पेड़ लगाने के लिए उनकी प्रतिबद्धता हम सब को हैरान कर देती है। करीब चार साल पहले उन्होंने पेड़ लगाने की मुहिम शुरू की। उन्होंने तय किया कि हर रोज एक पेड़ जरूर लगाएँगे। उन्होंने इस मुहिम का कठोर व्रत की तरह पालन किया। वो 1500 से ज़्यादा पौधे लगा चुके हैं। सबसे बड़ी बात ये है कि इस साल एक हादसे का शिकार होने के बाद भी वे अपने संकल्प से डिगे नहीं। मैं ऐसे सभी प्रयासों की हृदय से सराहना करता हूँ। **मेरा आपसे भी आग्रह है कि 'एक पेड़ माँ के नाम' इस पवित्र अभियान से आप जरूर जुड़िए।**

मेरे प्यारे साथियो, आपने देखा होगा, हमारे आस-पास कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो आपदा में धैर्य नहीं खोते, बल्कि उससे सीखते हैं। ऐसी ही एक महिला हैं सुबाश्री, जिन्होंने अपने प्रयास से दुर्लभ और बहुत उपयोगी जड़ी-बूटियों का एक अद्भुत बगीचा तैयार किया है। वो तमिलनाडु के मदुरई की रहने वाली हैं। वैसे तो पेशे से वो एक टीचर हैं, लेकिन औषधीय वनस्पतियों, Medical Herbs के प्रति उन्हें गहरा लगाव है। उनका ये लगाव 80 के दशक में तब शुरू हुआ, जब एक बार उनके पिता को जहरीले साँप ने काट लिया। तब पारम्परिक जड़ी-बूटियों ने उनके पिता की सेहत सुधारने में काफी मदद की थी। इस घटना के बाद उन्होंने पारम्परिक औषधियों और जड़ी-बूटियों की खोज शुरू की। आज मदुरई के वेरिचियुर गाँव में उनका अनोखा Herbal Garden है, जिसमें, 500 से ज़्यादा दुर्लभ औषधीय पौधे हैं। अपने इस बगीचे को तैयार करने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की है। एक-एक पौधे को खोजने के लिए उन्होंने दूर-दूर तक यात्राएँ कीं, जानकारियाँ जुटाईं और कई बार दूसरे लोगों से मदद भी माँगी। कोविड के समय उन्होंने Immunity बढ़ाने वाली जड़ी-बूटियाँ लोगों तक पहुँचाई। आज उनके Herbal Garden को देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं। वो सभी को Herbal पौधों की जानकारी और उनके उपयोग के बारे में बताती हैं। सुबाश्री हमारी उस पारम्परिक विरासत को आगे बढ़ा रही हैं, जो सैकड़ों वर्षों से हमारी संस्कृति का हिस्सा है। उनका Herbal Garden हमारे अतीत को भविष्य से जोड़ता है। उन्हें हमारी ढेर सारी शुभकामनाएँ।

साथियो, बदलते हुए इस समय

में Nature of Jobs बदल रही हैं और नए-नए Sectors का उभार हो रहा है। जैसे Gaming, Animation, Reel Making, Film Making या Poster Making। अगर इनमें से किसी Skill में आप अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं तो आपके Talent को बहुत बड़ा मंच मिल सकता है, अगर आप किसी Band से जुड़े हैं या फिर Community Radio के लिए काम करते हैं, तो भी आपके लिए बहुत बड़ा अवसर है। **आपके Talent और Creativity को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने 'Create In India' इस theme के तहत 25 Challenges शुरू किए हैं।** ये Challenges आपको जरूर दिलचस्प लगेंगे। कुछ Challenges तो Music, Education और यहाँ तक कि Anti-Piracy पर भी Focused हैं। इस आयोजन में कई सारे Professional Organisation भी शामिल हैं, जो इन Challenges को अपना पूरा Support दे रहे हैं। इनमें शामिल होने के लिए आप wavesindia.org पर login कर सकते हैं। **देश-भर के creators से मेरा विशेष आग्रह है कि वे इसमें जरूर हिस्सा लें और अपनी creativity को सामने लाएँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, इस महीने एक और महत्त्वपूर्ण अभियान के 10 साल पूरे हुए हैं। इस अभियान की सफलता में देश के बड़े उद्योगों से लेकर छोटे दुकानदारों तक का योगदान शामिल है। **मैं बात कर रहा हूँ 'Make In India' की।** आज मुझे ये देखकर बहुत ख़ुशी मिलती है कि गरीब, मध्यम वर्ग और MSMEs को इस अभियान से बहुत फायदा मिल रहा है। इस अभियान ने हर वर्ग के लोगों को अपना Talent सामने लाने का अवसर दिया है। **आज, भारत**

Manufacturing का Powerhouse बना है और देश की युवा-शक्ति की वजह से दुनिया-भर की नज़रें हम पर हैं। Automobiles हो, Textiles हो, Aviation हो, Electronics हो, या फिर Defence, हर Sector में देश का Export लगातार बढ़ रहा है। देश में FDI का लगातार बढ़ना भी हमारे 'Make In India' की सफलता की गाथा कह रहा है। **अब हम मुख्य रूप से दो चीज़ों पर focus कर रहे हैं। पहली है 'Quality' यानी हमारे देश में बनी चीज़ें global standard की हों। दूसरी है 'Vocal for Local' यानी, स्थानीय चीज़ों को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ावा मिले।** 'मन की बात' में हमने #MyProductMyPride की भी चर्चा की है। Local Product को बढ़ावा देने से देश के लोगों को किस तरह से फायदा होता है, इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है।

महाराष्ट्र के भंडारा जिले में Textile की एक पुरानी परम्परा है– 'भंडारा टसर सिल्क हैंडलूम' ('Bhandara Tussar Silk Handloom')। टसर सिल्क (Tussar Silk) अपने Design, रंग और मज़बूती के लिए जानी जाती है। भंडारा के कुछ हिस्सों में 50 से भी अधिक 'Self Help Group' इसे संरक्षित करने के काम में जुटे हैं। इनमें महिलाओं की बहुत बड़ी भागीदारी है। **यह Silk तेजी से लोकप्रिय हो रही है और स्थानीय समुदायों को सशक्त बना रही है और यही तो 'Make In India' की Spirit है।**

साथियो, त्योहारों के इस मौसम में आप फिर से अपना पुराना संकल्प भी जरूर दोहराइए। कुछ भी खरीदेंगे, वो 'Made In India' ही होना चाहिए, कुछ भी Gift देंगे, वो भी, 'Made In India' ही होना चाहिए। सिर्फ मिट्टी के दीये खरीदना ही 'Vocal for Local' नहीं है। **आपको अपने क्षेत्र में बने स्थानीय उत्पादों को ज़्यादा-से-ज़्यादा promote करना चाहिए।** ऐसा कोई भी product, जिसे बनाने में भारत के किसी कारीगर का पसीना लगा है, जो भारत की मिट्टी में बना है, वो हमारा गर्व है, हमें इसी गौरव पर हमेशा चार चाँद लगाने हैं।

साथियो, 'मन की बात' के इस Episode में मुझे आपसे जुड़कर बहुत अच्छा लगा। इस कार्यक्रम से जुड़े अपने विचार और सुझाव हमें जरूर भेजिएगा। मुझे आपके पत्रों और सन्देशों की प्रतीक्षा है। कुछ ही दिन बाद त्योहारों का season शुरू होने वाला है। नवरात्र से इसकी शुरुआत होगी और फिर अगले दो महीने तक पूजा-पाठ, व्रत-त्योहार, उमंग-उल्लास, चारों तरफ, यही वातावरण छाया रहेगा। **मैं आने वाले त्योहारों की आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आप सभी अपने परिवार और अपने प्रियजनों के साथ त्योहार का खूब आनंद लें और दूसरों को भी अपने आनंद में शामिल करें।** अगले महीने 'मन की बात' में कुछ और नए विषयों के साथ आपसे जुड़ेंगे। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

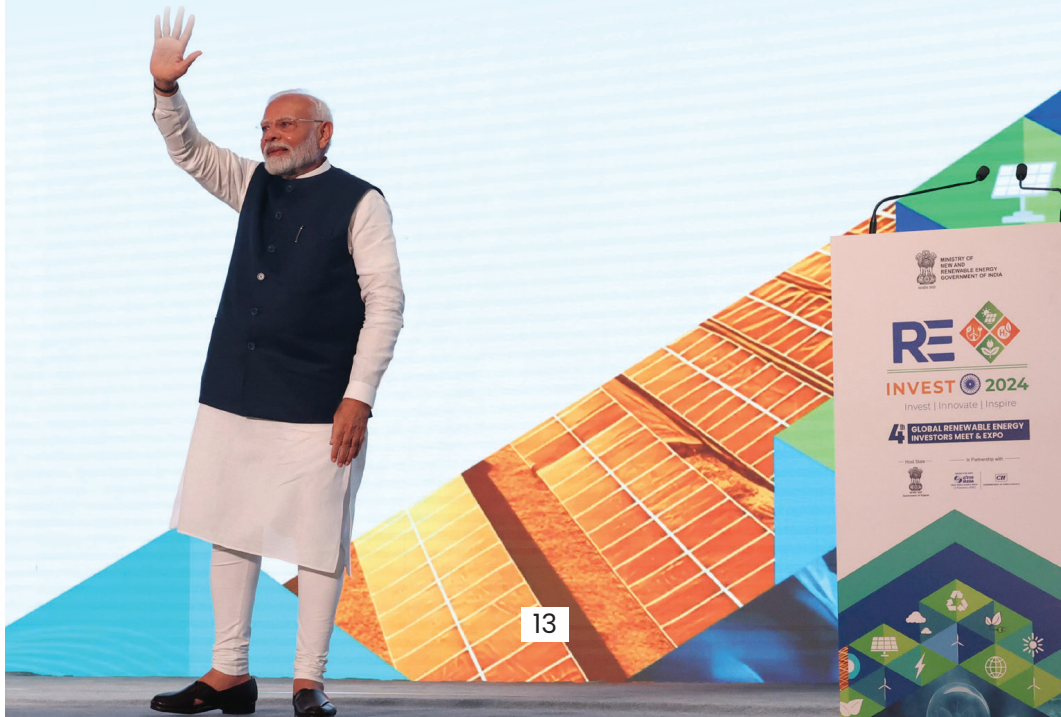

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

कार्रवाई का आह्वान

पिछले एक दशक में, 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नागरिकों को विभिन्न मुद्दों पर कार्रवाई करने के लिए लगातार प्रोत्साहित किया है। कार्रवाई के इन आह्वानों का उद्देश्य नागरिकों में सामुदायिकता और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देना है। इससे पूरे देश में सकारात्मक बदलाव आए। इनमें से कुछ सकारात्मक परिणामों को उजागर करते हुए नीचे उल्लेख किया गया है:

#स्वच्छभारतमिशन

पिछले एक दशक में यह मिशन एक 'जन आंदोलन' में बदल गया है। सभी आयु समूहों के करोड़ों लोगों ने स्वच्छता के प्रति अपने कर्तव्य और जिम्मेदारी को महसूस किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सिंगल-यूज प्लास्टिक के उपयोग को रोकने के आह्वान के बाद से कई लोगों ने खरीदारी के लिए जाते समय जूट और कपड़े के थैलों का उपयोग करने की परम्परा को फिर से शुरू किया है। पिछले वर्षों में शौचालयों के निर्माण से कई क्षेत्रों को लाभ हुआ है। यह न केवल मानवीय गरिमा को बहाल करता है, बल्कि भारत को खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाने के मिशन के लक्ष्य में भी योगदान देता है।

#एकपेड़माँकेनाम

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक अनूठे अभियान 'एक पेड़ माँ के नाम' की शुरुआत की, जो पर्यावरण की जिम्मेदारी को माताओं के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि के साथ जोड़ने वाली एक अनूठी पहल है।

22 सितम्बर, 2024 को पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत प्रादेशिक सेना की एक इकाई 128 इन्फैंट्री बटालियन और इकोलॉजिकल टास्क फोर्स ने केवल एक घंटे में 5 लाख से अधिक पौधे लगाकर एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। प्रादेशिक सेना इकाई के प्रयासों को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन द्वारा मान्यता दी गई।

इस अभियान की सफलता इसकी सादगी और भावनात्मक अपील में निहित है, जो पूरे देश में लोगों को अपनी माताओं को श्रद्धांजलि के रूप में एक पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करती है। ऐसा करके वे प्रकृति और मातृत्व दोनों की पोषण शक्ति का सम्मान करते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि आने वाली पीढ़ियों को एक स्वस्थ और अधिक टिकाऊ दुनिया विरासत में मिले।

#आत्मनिर्भरभारत

यह पहल भारत सरकार द्वारा मई, 2020 में आर्थिक आत्मनिर्भरता और सशक्तता को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई थी। इस अभियान का उद्देश्य आयात पर निर्भरता को कम करना और विभिन्न क्षेत्रों में घरेलू उत्पादन को बढ़ाना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत के व्यापक लक्ष्यों– आर्थिक आत्मनिर्भरता, स्थिरता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के साथ तालमेल बिठाते हुए नागरिकों को खादी को जीवनशैली के विकल्प के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित करना जारी रखा है।

'भारत की खादी' देश में 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की अग्रदूत बन गई है। खादी भारतीयों के लिए भावनात्मक मूल्य रखती है। यह स्वदेशी निर्मित वस्तुओं की आवश्यकता और महत्त्व का प्रतीक है। 2013-14 से 2022-23 तक कारीगरों द्वारा बनाए गए स्वदेशी खादी उत्पादों की बिक्री में 332 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

#वोकलफॉरलोकल

भारत अब दुनिया का बाजार बनने के बजाय 'वोकल फॉर लोकल' और 'आत्मनिर्भरता' के मंत्रों के साथ विनिर्माण का केंद्र बनकर विश्व बाजार पर छा रहा है और स्थानीय भारतीय उत्पाद वैश्विक बाजार की पहली पसंद बन रहे हैं।

'वोकल फॉर लोकल' अभियान ने दूरदराज के इलाकों में रहने वाले आदिवासी समुदाय के जीवन और उत्पादों को एक नई पहचान दी है और अब किसी भी समुदाय से कोई भेदभाव नहीं है, क्योंकि देश के संसाधनों तक सभी की समान पहुँच है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया यह आंदोलन स्थानीय उत्पादों और व्यवसायों का समर्थन करने, स्थानीय की क्षमता का दोहन करने, विनिर्माण समुदायों को बढ़ावा देकर उन्हें आर्थिक रूप से उन्नत बनाने के लिए कार्रवाई का आह्वान है।

#हरघरतिरंगा

'हर घर तिरंगा' एक अभियान है, जो देश की आज़ादी के अमृत महोत्सव के तत्वावधान में लोगों को तिरंगा घर लाने और भारत की आज़ादी के प्रतीक के रूप में इसे फहराने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया है। इस प्रकार एक राष्ट्र के रूप में सामूहिक रूप से ध्वज को घर लाना न केवल तिरंगे से व्यक्तिगत जुड़ाव का प्रतीक बन गया, बल्कि राष्ट्र निर्माण के लिए हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता का भी प्रतीक बन गया।

2022 में 23 करोड़ से अधिक घरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और 6 करोड़ लोगों ने harghartiranga.com पर ध्वज के साथ अपनी सेल्फी अपलोड की। 2023 में हर घर तिरंगा अभियान के तहत 10 करोड़ से अधिक सेल्फी अपलोड की गईं।

2024 में तीसरी बार इस अभियान का उत्सव मनाया गया। अभियान का एक मुख्य आकर्षण 13 अगस्त को सुबह 8 बजे संसद सदस्यों की विशेष तिरंगा बाइक रैली रही। रैली भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली से शुरू हुई और इंडिया गेट से होते हुए मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में समाप्त हुई।

#मेरापहलावोटदेशकेलिए

'मेरा पहला वोट देश के लिए' अभियान का उद्देश्य भारत के युवाओं को चुनावी प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाने के लिए एक साथ लाना है। इस पहल ने मतदान के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाकर चुनावी प्रक्रिया में युवाओं की भागीदारी को अत्यधिक प्रभावित किया है। इसने नौजवानों को जागरूक निर्णय लेने को प्रोत्साहित किया और पहली बार मतदाताओं के बीच जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दिया, जिससे अधिक सकारात्मक और सक्रिय नागरिक बनने में योगदान मिला।

ए. 12 क्षेत्रीय भाषाओं में 1,09,868 #मेरा पहला वोट देश के लिए, शपथ ली गई।

बी. भारत के लोकतंत्र पर आधारित क्विज में 91,610 लोगों ने भाग लिया। 'देश हमारा कैसा हो' पर रील मेकिंग प्रतियोगिता के हिस्से के रूप में 2218 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं।

सी. 'देश हमारा कैसा हो' विषय पर 1258 पॉडकास्ट प्रस्तुत किए गए।

डी. 'देश हमारा कैसा हो' पर 1895 ब्लॉग प्रस्तुत किए गए।

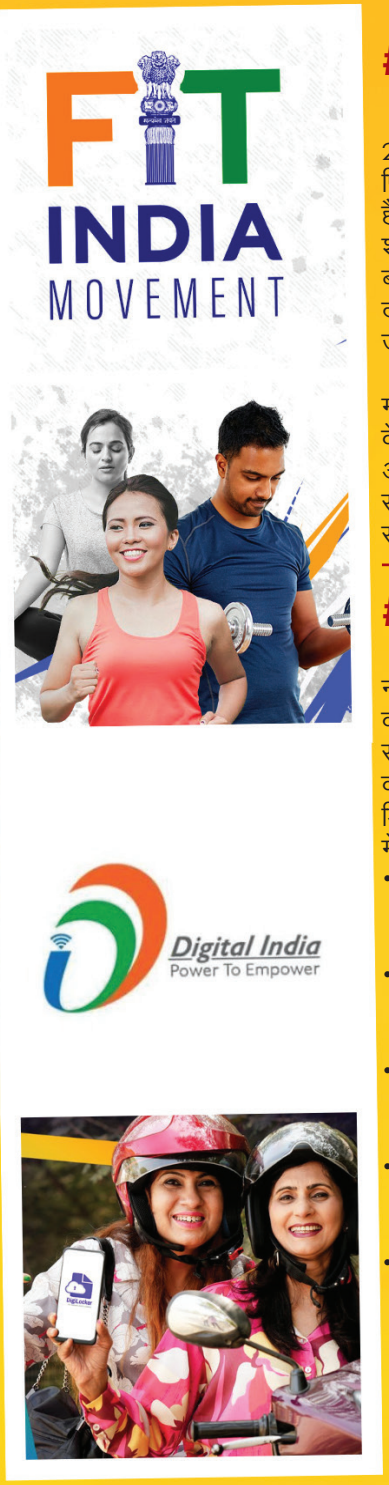

#फिटइंडियाअभियान

फिट इंडिया अभियान की शुरुआत 29 अगस्त, 2019 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की थी। इसका उद्देश्य फिटनेस को हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाना है। इस अभियान का लक्ष्य व्यवहार में बदलाव लाना और शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय जीवनशैली की ओर बढ़ना है। यह अभियान शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों को शामिल करते हुए समग्र स्वास्थ्य के महत्त्व पर जोर देता है।

'फिट इंडिया फ्रीडम रन' के लिए इस्तेमाल किए गए मानव शरीर की सबसे सटीक रूप में 'आज़ादी' भारतीयों के दिलों में गूँज रही है। 2020, 2021 और 2023 में आयोजित तीन 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' में सात करोड़ से अधिक नागरिकों ने भाग लिया। 'फिट इंडिया' अब एक राष्ट्रीय आंदोलन बन गया है।

#डिजिटलइंडिया (डिजिटल इंडिया पहल)

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 01 जुलाई, 2015 को की थी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य डिजिटल सेवाओं, डिजिटल पहुँच, डिजिटल समावेशन, डिजिटल सशक्तीकरण और डिजिटल विभाजन को पाटकर भारत को ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था और डिजिटल रूप से सशक्त समाज में बदलना है। कुछ पहलों में शामिल हैं :

- 135 करोड़ से अधिक आधार कार्ड ने निवासियों, विशेष रूप से गरीबों और कमजोर लोगों को सरकारी सेवाओं का लाभ उठाने के लिए सशक्त बनाया है।
- डिजिलॉकर– लगभग 18.38 करोड़ उपयोगकर्ता ऐप का उपयोग कर रहे हैं और 622 करोड़ दस्तावेज उपलब्ध हैं।
- ई-हॉस्पिटल– भारत भर में 1,000 से अधिक अस्पतालों को ई-हॉस्पिटल सुविधा से सक्षम बनाया गया है।
- राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल (एनएसपी)- केंद्र/राज्य सरकारों की 100 से अधिक छात्रवृत्ति योजनाएँ एनएसपी पोर्टल पर उपलब्ध हैं।
- भाषा सम्बंधी बाधा को और कम करने के लिए भाषिणी नामक एक एआई सक्षम राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मंच शुरू किया गया है। इसका लक्ष्य अंग्रेजी न जानने वाले नागरिकों के लिए इंटरनेट तक पहुँच सुनिश्चित करना है। आज की तारीख में भाषिणी मंच पर 10 भारतीय भाषाओं में भाषा अनुवाद के लिए 1000 से अधिक पूर्व-प्रशिक्षित एआई मॉडल उपलब्ध कराए गए हैं।

सामाजिक परिवर्तन और जन जागरूकता में बढ़ती नागरिक सहभागिता

शशि शेखर वेम्पति
प्रसार भारती के पूर्व सीईओ और 'कलेक्टिव स्पिरिट कंक्रीट एक्शन – मन की बात एंड इट्स इनफ्लूएंस ऑन इंडिया' पुस्तक के लेखक

'मन की बात', पिछले दस वर्षों में सामाजिक परिवर्तन को आगे बढ़ाने और जन जागरूकता तथा नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए एक अनूठा मंच बनकर उभरा है। स्वतंत्र भारत के इतिहास में ये पहले प्रधानमंत्री हैं, जो जमीनी स्तर की आवाज़ को सशक्त बनाने के राष्ट्रीय उद्देश्य को लेकर चल रहे हैं। इसी सामान्य भावना को सुदृढ़ करने और जन-जन तक पहुँचाने का यह महत्त्वपूर्ण उदाहरण है।

'मन की बात' कार्यक्रम अपनी शुरुआत से ही ज़मीनी स्तर पर गतिविधियों को प्रेरित करने और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने में सहायक रहा है। माता-पिता को अपनी बेटियों को अपना सौभाग्य मानकर खुशी से अपनाने और उसे प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करने वाले 'बेटी के साथ सेल्फी' अभियान से लेकर स्वच्छ भारत अभियान के नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं के साथ सीधे जुड़ाव ने इन आंदोलनों को न केवल सरकारी पहल, बल्कि सामाजिक स्तर पर बदलाव के लिए लोगों द्वारा संचालित प्रयास बना दिया है। एक और मार्मिक उदाहरण है अमीर परिवारों के लिए गैस सब्सिडी छोड़ने का आह्वान, जिसके कारण लाखों मध्यम और निम्न-मध्यम वर्ग के परिवारों ने जरूरतमंदों की मदद के लिए स्वेच्छा से अपनी सब्सिडी छोड़ दी। मन की बात द्वारा प्रोत्साहित नि:स्वार्थता का यह कार्य इस बात का प्रमाण है कि इसके प्रसारण ने किस तरह सकारात्मक नागरिक व्यवहार को उत्प्रेरित किया है और सामाजिक जिम्मेदारी की सामूहिक भावना को बढ़ावा दिया है।

कम चर्चित, लेकिन महत्त्वपूर्ण मुद्दों को राष्ट्रीय सुर्खियों में लाकर और जमीनी स्तर के चैम्पियनों के काम को उजागर करके, चाहे वे ग्रामीण क्षेत्रों में चेक डैम बनाने वाले व्यक्ति हों, ऊर्जा संरक्षण रैलियाँ आयोजित कर रहे हों, या स्थानीय उद्यमशीलता प्रयासों के रूप में खादी बुन रहे हों, 'मन की बात' ने गुमनाम नायकों को पहचान दिलाई है। इन व्यक्तिगत कहानियों ने न केवल

श्रोताओं को प्रेरित किया है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में व्यक्तिगत योगदान के महत्त्व को भी रेखांकित किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के समृद्ध इतिहास और संस्कृति के उदाहरणों को समकालीन सामाजिक लक्ष्यों के ताने-बाने में बुनते हुए, नागरिकों को देश की संस्कृति, विरासत और इसके कालातीत प्रतीकों पर गर्व की गहरी भावना पैदा करने के साथ-साथ कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है।

'मन की बात' ने 'प्राचीन प्रचलन' से प्रेरणा लेते हुए प्रौद्योगिकी के अभिनव उपयोग और प्रवीणता; दोनों के माध्यम से 'आधुनिकता' को प्रोत्साहित किया है। कई भाषाओं और बोलियों में इसके अनुवाद के साथ यह प्रसारण भारत के सबसे दूरदराज इलाकों तक भी पहुँचता है। इसकी बहुभाषी उपस्थिति ने प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) और AI में शोध को भी प्रेरित किया है, जिसका उपयोग भारतीय भाषाओं मशीन अनुवाद तकनीकों को बेहतर बनाने के लिए किया जा रहा है।

'मन की बात' के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक इसका गैर-राजनीतिक स्वरूप है। प्रधानमंत्री मोदी ने जानबूझकर प्रसारण को राजनीतिक चर्चा से मुक्त रखा है और इसमें राष्ट्रीय एकता और प्रेरणादायक कहानियों पर ध्यान केंद्रित किया है। इस गैर-राजनीतिक स्वरूप ने कार्यक्रम को राजनीतिक गलियारों के पार इसे नागरिकों के साथ जोड़ा है, जिससे इसकी व्यापक अपील और दीर्घकालिक प्रभाव सुनिश्चित हुआ है।

यदि नेहरू की 'डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' भारत के अतीत की एक स्थायी खिड़की थी, तो नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' भारत के भविष्य का एक संवादात्मक दृष्टिकोण है, जो समय के साथ गतिशील रूप से विकसित हो रहा है। जलवायु चुनौतियों पर क्राउडसोर्सिंग इनपुट से लेकर सार्वजनिक स्वच्छता पर नागरिक प्रयासों की प्रशंसा तक, मन की बात की यात्रा अपनी भूमिका में सहभागी तथा आत्मनिरीक्षक दोनों की रही है और इससे पहले किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री ने इस तरह की यात्रा नहीं की। यह शायद कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि 'मन की बात' ने सार्वजनिक संचार, व्यावहारिक अर्थशास्त्र और भाषा मॉडल से लेकर विविध विषयों पर सहकर्मी समीक्षा पत्रिकाओं में कई हज़ार अकादमिक शोध पत्रों को प्रेरित किया है। ऐसे युग में, जब सार्वजनिक संवाद ईएसजी, डीईआई और सीएसआर के पश्चिमी मॉडलों से भरे हुए हैं, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सामाजिक-आर्थिक विकास के एक विशिष्ट भारतीय मॉडल के उद्भव की नींव रखी है।

'मन की बात' के इन दस वर्षों के माध्यम से उभरने वाला नरेन्द्र मोदी मॉडल, लोगों और स्थानीय समुदायों को अपने दिल में रखता है और उनकी संस्कृति तथा परम्पराओं में गहराई से निहित है। यह मोदी मॉडल आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित है और एक समग्र दृष्टिकोण द्वारा निर्देशित है, जो आजीविका, प्रकृति तथा पर्यावरण पर प्रभावों के प्रति सचेत है। इस प्रकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के माध्यम से इस विशिष्ट भारतीय मॉडल के साथ सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए उच्च मानदंड स्थापित किया है, जिसके आधार पर भविष्य के नेताओं, सरकारों, कॉरपोरेट्स और सार्वजनिक संस्थानों का मूल्यांकन किया जाएगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

मन की बात
की महती यात्रा

3 अक्तूबर, 2014 को लॉन्च किया गया 'मन की बात' पिछले एक दशक में भारत के सबसे प्रभावशाली संचार मंचों में से एक बन गया है। हर महीने के आखिरी रविवार को प्रसारित होने वाले इस मासिक रेडियो सम्बोधन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और सभी क्षेत्रों के नागरिकों के बीच एक अनूठे संवाद को बढ़ावा दिया है। यह केवल शब्दों का नहीं, बल्कि सामूहिक कार्रवाई का कार्यक्रम है, जो जमीनी स्तर के अभियानों को प्रेरित करता है और राष्ट्रीय संवाद को प्रभावित करता है।

आईआईएम रोहतक की 2023 की रिपोर्ट में पाया गया कि 'मन की बात' के 23 करोड़ नियमित श्रोता हैं और 96 प्रतिशत आबादी इस प्रसिद्ध रेडियो कार्यक्रम से अवगत है।

इस पहल ने न केवल पिछले दस वर्षों में भारत की यात्रा का वृत्तांत लिखा है, बल्कि स्वच्छता, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य तथा फिटनेस, पर्यावरण और राष्ट्रीय एकता जैसे प्रमुख मुद्दों पर जागरूकता भी पैदा की है।

महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

अक्तूबर, 2014 - शुभारम्भ

मन की बात का शुभारम्भ राष्ट्र निर्माण और सामाजिक एकता के व्यापक विषय के साथ विजयादशमी के अवसर पर हुआ था। इसके पहले एपिसोड को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली और इसने कई आख्यान के लिए माहौल तैयार किया।

जनवरी, 2015 - एक ऐतिहासिक सहयोग

इस एपिसोड में प्रधानमंत्री मोदी के साथ अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा भी शामिल हुए। यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री और पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति द्वारा एक साथ पहली बार किया गया रेडियो सम्बोधन था। उन्होंने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' मिशन, भाषाओं और विदेशी मामलों जैसे प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की, जिससे यह एपिसोड हफ्तों तक वैश्विक चर्चा का विषय बना रहा।

नवम्बर, 2016 - विमुद्रीकरण संवाद

'मन की बात' के इस एपिसोड के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने 500 और 1000 के नोटों को बंद करने के सरकार के फैसले के पीछे के तर्क को समझाया। उन्होंने नागरिकों को पेश आ रही कठिनाइयों को स्वीकार किया, लेकिन काले धन और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के दीर्घकालिक लाभों पर जोर दिया। यह सन्देश लाखों लोगों के दिलों में गूँजा, जिसने शहरी और ग्रामीण भारत, दोनों को अधिक पारदर्शी अर्थव्यवस्था बनाने के सामूहिक प्रयासों के प्रति एकजुट किया।

जून, 2019 - मन की बात 2.0

2019 के आम चुनावों के बाद, प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात को फिर से शुरू किया, जो मन की बात 2.0 की शुरुआत थी। यह मील का पत्थर नागरिकों को नेतृत्व में उनके विश्वास और भरोसे के लिए सरकार के धन्यवाद देने के तरीके का प्रतीक है। प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि चुनाव अवधि के दौरान उन्हें लोगों के साथ इस सम्बंध की कितनी कमी महसूस हुई। उन्होंने इस कार्यक्रम को एक जीवंत और परिवार जैसी बातचीत बताया, जो बदलाव लाती है। 'मन की बात' 2.0 ने न केवल इस संवाद को फिर से जगाया, बल्कि नए भारत के भविष्य को आकार देने के लिए लोगों की बात सुनने और उनके साथ काम करने की सरकार की प्रतिबद्धता की भी पुष्टि की।

22वां संस्करण
मन की बात 2.0

अप्रैल, 2023 : 100वें एपिसोड की उपलब्धि

'मन की बात' ने अपना 100वाँ एपिसोड पूरा किया, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के लोगों द्वारा साझा की गई साहस और परिवर्तन की अविश्वसनीय कहानियों पर विचार व्यक्त किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने का श्रेय नागरिकों को जाता है, क्योंकि यह स्वच्छता अभियान या आजादी का अमृत महोत्सव जैसे जन आंदोलनों को प्रदर्शित करने का एक मंच बन गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि कैसे हर एपिसोड ने इन विचारों को जन आंदोलनों में बदल दिया है।

जून, 2024 - मन की बात 3.0

इस साल आम चुनावों में ऐतिहासिक जीत के बाद प्रधानमंत्री मोदी अब मन की बात 3.0 के साथ नागरिकों के साथ संवाद की भावना को फिर से जगाना चाहते हैं, इसमें बदलाव और परिवर्तनशीलता की उनकी कहानियों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इस नए चरण में नागरिक जुड़ाव की शक्ति का उपयोग करके सामाजिक मुद्दों पर चर्चा होगी और भारत की समृद्ध संस्कृति तथा इतिहास का कीर्तिगान होगा। चूँकि कार्यक्रम थोड़े अंतराल के बाद फिर से शुरू हुआ है, इसलिए अब यह समुदायों को सशक्त बनाने के लिए तैयार है, जो मोदी सरकार के परिवर्तनशीलता के दृष्टिकोण के तहत सामूहिक प्रगति के लिए एक नई प्रतिबद्धता को बढ़ावा देता है।

क्या आप जानते हैं?

‘मन की बात’ कार्यक्रम 22 भारतीय भाषाओं; अरबी, चीनी तथा फ्रेंच सहित 11 विदेशी भाषाओं और 29 बोलियों में प्रसारित किया जाता है, जो प्रवासी भारतीयों और वैश्विक श्रोताओं तक पहुँचता है।

‘मन की बात’ कार्यक्रम ने 100 करोड़ श्रोताओं तक अपनी पहुँच बनाई, जिससे पूरे देश में इसकी अपार लोकप्रियता और प्रभाव का पता चलता है।

‘मन की बात’ कार्यक्रम का प्रसारण ऑल इंडिया रेडियो के 500 से अधिक प्रसारण केंद्रों से किया जा रहा है।

आकाशवाणी समाचार
Akashvani

इस कार्यक्रम के फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम सहित विभिन्न प्लेटफॉर्म पर 10 मिलियन से अधिक सोशल मीडिया फॉलोअर्स हैं।

अपने दस साल के सफर में, ‘मन की बात’ एक मासिक रेडियो कार्यक्रम से राष्ट्र निर्माण आंदोलन में बदल गया है। लोगों के मानस पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। यह सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देता है और भारत की प्रगति पर गर्व पैदा करता है। यह लाखों लोगों को निरंतर प्रेरित, शिक्षित और संगठित करता है और यह सुनिश्चित करता है कि नागरिक राष्ट्रीय प्रगति के केंद्र में रहें।
जैसे-जैसे ‘मन की बात’ कार्यक्रम आगे बढ़ रहा है, प्रेरणा की साझा कहानियों के माध्यम से देश को एकजुट करने की इसकी विरासत और भी गहरी होती जाती है।

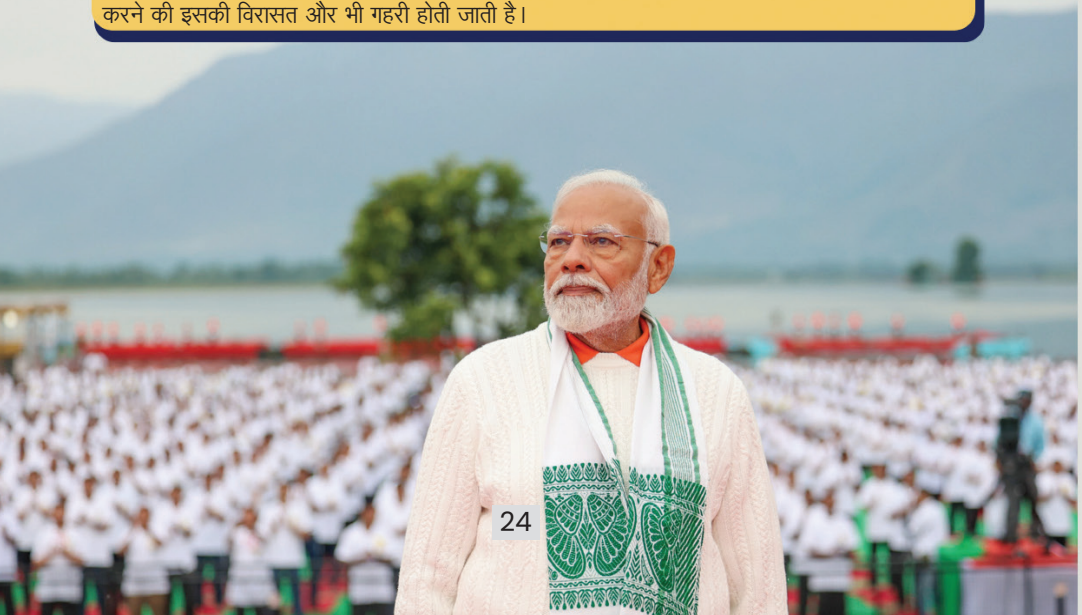

परिवर्तनकारी कहानियाँ

आपदा से अवसर

महामारी के दौरान मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने वैक्सीन के फायदों के बारे में सामुदायिक चर्चाओं को बढ़ावा देकर नागरिकों को टीका लगवाने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके आह्वान से लोगों का भरोसा बढ़ा, टीकाकरण अभियान में लोगों की भारी भागीदारी हुई, जिससे भारत को कोविड-19 से निपटने में मदद मिली।

प्रधानमंत्री मोदी ने मास्क पहनने, सामाजिक दूरी बनाए रखने और स्थानीय व्यवसायों का सहयोग करने पर भी जोर दिया, नागरिकों को संकट को परिवर्तनशीलता और आत्मनिर्भरता के अवसर में बदलने के लिए प्रोत्साहित किया।

ग्रामीण उद्यमियों को सशक्त बनाना

प्रधानमंत्री मोदी ने ‘मन की बात’ के जरिए लगातार ग्रामीण कारीगरों और छोटे व्यवसाय मालिकों की कहानियाँ साझा की हैं, जो ‘वोकल फॉर लोकल’ पहल के तहत सफल हो रहे हैं। इन प्रेरक कहानियों ने अनगिनत छोटे-छोटे उद्यमियों को स्थानीय उत्पादनों को अपनाने, अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने और पूरे भारत में आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया है।

‘एक पेड़ माँ के नाम’ अभियान

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे समुदायों ने ’एक पेड़ माँ के नाम’ अभियान को आगे बढ़ाया है, जिसके चलते देश भर में लाखों पौधे लगाए गए हैं। उन्होंने के.एन. राजसेखर जैसे स्थानीय पर्यावरण चैम्पियन की प्रशंसा की, जिन्होंने हर दिन एक पेड़ लगाया है और कुल मिलाकर 1,500 से अधिक पेड़ लगाए हैं। मन की बात जैसे मंचों के माध्यम से लोगों के प्रयासों को लगातार मान्यता देने वाले प्रधानमंत्री के प्रयासों की बदौलत, 5 जून, 2024 को शुरू किए गए ‘एक पेड़ माँ के नाम’ अभियान ने सितम्बर, 2024 तक 80 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य सफलतापूर्वक हासिल कर लिया है।

फिट इंडिया मूवमेंट और योग

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार फिट इंडिया मूवमेंट तथा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की वैश्विक प्रतिष्ठा को बढ़ावा दिया है और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने में उनके महत्त्व पर जोर दिया है। उन्होंने एक प्रभावशाली कहानी साझा की, जो सूरत की अन्वी की थी, जो डाउन सिंड्रोम और दिल की समस्याओं से पीड़ित थी, जिसने योग के माध्यम से अपना जीवन बदल दिया। अपने माता-पिता से प्रोत्साहित होकर अन्वी ने शुरुआती चुनौतियों को पार किया और योग में कुशलता प्राप्त की, प्रतियोगिताओं में भाग लिया और पदक जीते।

अंतरिक्ष क्षेत्र को बढ़ावा देना

मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी ने अक्सर अंतरिक्ष क्षेत्र में स्टार्टअप के विकास पर प्रकाश डाला है, जो भारत में आर्थिक बढ़ावा लाने पर जोर देता है। अंतरिक्ष सुधारों और उपलब्धियों, जैसे कि चंद्रयान-3 मिशन की सफलता और वाणिज्यिक उपग्रहों के प्रक्षेपण पर उनकी चर्चाओं ने युवाओं को खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी से जुड़ने के लिए प्रेरित किया है। इन प्रयासों के माध्यम से, मन की बात ने नवाचार को बढ़ावा देने और अगली पीढ़ी को उभरते अंतरिक्ष उद्योग में अवसरों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

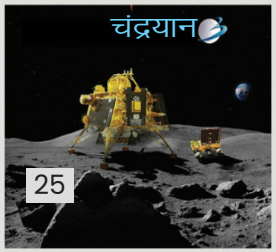

VOCAL FOR LOCAL

जल संरक्षण में भारतीय अभियान

आलोक के. सिक्का
कंट्री रिप्रेजेन्टेटिव (भारत)
अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान, नई दिल्ली

'कैच द रेन' अभियान के परिणामस्वरूप लगातार दो वर्षों (2021-22 और 2022-23) में भूजल के रिचार्ज में मामूली वृद्धि और कुल भूजल निष्कर्षण में कमी, नदियों का पुनरुद्धार और कई स्थानों पर स्थानीय जलाशयों में सतही जल की उपलब्धता में वृद्धि हुई है। इसने न केवल लोगों के बीच वर्षा जल के संरक्षण के महत्त्व के बारे में समझ पैदा की है, बल्कि यह आशा भी जगाई है कि समुदाय के नेतृत्व वाले निरंतर प्रयासों से स्थानीय स्तर पर जलवायु अनुकूलन के माध्यम से जल असुरक्षा को दूर करने में मदद करने के लिए जल संसाधनों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन किया जा सकता है।

भारत का जल से सम्बंध प्राचीन सभ्यताओं से है। यहाँ गंगा और सिंधु नदियों के किनारे की बस्तियाँ जल स्रोतों के निकट होने के कारण फल-फूल रही थीं। बावड़ियाँ, टैंक, खड़ीन आदि जैसी पारम्परिक जल प्रबंधन प्रणालियों को विकसित किया गया, जो जल के प्रति गहरी सांस्कृतिक श्रद्धा को दर्शाती हैं। भारत अब कृषि सम्बंधी माँग में वृद्धि, जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, शहरीकरण, औद्योगीकरण और जलवायु परिवर्तन के कारण जल सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियों का सामना कर रहा है। भूजल पर अत्यधिक निर्भरता और इसके अत्यधिक दोहन के परिणामस्वरूप भूजल में तेजी से कमी आ रही है। अपर्याप्त जल प्रबंधन, प्रति व्यक्ति जल की घटती उपलब्धता और जलवायु परिवर्तन ने जल से जुड़ी असुरक्षा को और बढ़ा दिया है। इसके परिणामस्वरूप जल संरक्षण में सुधारों की तत्काल आवश्यकता का पता चलता है। 'कैच द रेन' अभियान का उद्देश्य वर्षा जल संचयन और संरक्षण को बढ़ावा देकर इन मुद्दों से निपटना है।

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया 'कैच द रेन' अभियान देश भर में वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देता है। इसके अंतर्गत वर्षा का पानी जहाँ भी गिरे, जब भी गिरे, उसे संग्रहित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह अभियान जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन पर केंद्रित है। इसमें जल स्रोतों का पुनरुद्धार, जियोटैगिंग, जल स्रोतों की सूची बनाना, वैज्ञानिक जल संरक्षण योजनाएँ विकसित करना, जल शक्ति केंद्र स्थापित करना, गहन वनरोपण और जागरूकता बढ़ाना शामिल है। इससे न केवल जागरूकता बढ़ी है, बल्कि कई लोगों, विशेषकर महिलाओं और युवाओं में जल संरक्षण के महत्त्व के प्रति मानसिकता भी बदली है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, भारत के 'कैच द रेन' अभियान ने जल सुरक्षा को बेहतर बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके तहत स्थान-विशिष्ट विकेन्द्रीकृत जल संग्रहण सम्बंधी क्रियाकलापों के माध्यम से वर्षा जल को स्थानीय स्तर पर संग्रहित किया जाता है, जिससे कृषि और आजीविका को समर्थन देने के लिए सतही जल की उपलब्धता और भूजल में वृद्धि होती है। लगातार दो वर्षों (2021-22 और 2022-23) में भारत में भूजल में वृद्धि और कुल भूजल निष्कर्षण में गिरावट 'कैच द रेन' अभियान के प्रभाव को उजागर करती है। स्थानीय धाराओं/झरनों के पुनरुद्धार और पोषण एवं आजीविका सुरक्षा के लिए मछलियों को पालने सहित जल के अनेक उपयोग हैं। जल जीवन मिशन (जेजेएम) के तहत पीने के पानी के स्रोत की स्थिरता के लिए

ये प्रयास महत्त्वपूर्ण हैं। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में हाल ही में किए गए एक अध्ययन में अंतरराष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान (आईडब्ल्यूएमआई) ने पाया कि अमृत सरोवर पर स्थानीय अधिकारियों द्वारा किए गए ठोस प्रयासों से भूजल के रिचार्ज और समुदायों के लिए बहुत जरूरी सार्वजनिक स्थान बनाने सहित कई लाभ मिल रहे हैं। मुरादाबाद के बिलारी ब्लॉक में एक महिला स्वयं सहायता समूह तालाबों के निर्माण से लेकर रखरखाव तक का काम करता है। निर्मित तालाब में महिलाएँ मछली पालन करती हैं और भोजन/नाश्ते इत्यादि की बिक्री कर आय अर्जित कर रही हैं।

'कैच द रेन' की सफलता में सरकारी सहायता महत्त्वपूर्ण रही है, जो जल सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियों का सामना कर रहे अन्य देशों के लिए एक मॉडल प्रस्तुत करती है। 2021 में फिर से अपने लॉन्च होने के बाद से इस अभियान ने लगभग 1 लाख करोड़ रुपये के निवेश के साथ 7.9 मिलियन से अधिक जल-सम्बंधी कार्यों की देखरेख की है। विभिन्न जिला प्रशासनों द्वारा ठोस प्रयास किए गए हैं और इसने ग्राम पंचायतों और शहरी स्थानीय निकायों जैसी स्थानीय संस्थाओं को जल संरक्षण कार्यों की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने का अधिकार दिया है। प्रगति पर नज़र रखने के लिए जीआईएस मैपिंग और मोबाइल ऐप सहित डिजिटल टूल से जोड़ना, प्रभावी जल प्रबंधन योजना और पारदर्शी निगरानी सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की बढ़ती वैश्विक प्रवृत्ति को दर्शाता है।

सामुदायिक भागीदारी 'कैच द रेन' अभियान की सफलता का आधार रही है। 2024 की थीम, नारी शक्ति से जल शक्ति का फोकस जल संरक्षण के प्रयासों का नेतृत्व करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाने के महत्त्व पर जोर देता है। मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में जल सहेलियों की सफलता की कहानियाँ स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि जल संसाधनों के प्रबंधन में महिलाएँ कितनी परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायतों और शहरों में शहरी स्थानीय निकायों जैसी स्थानीय संस्थाओं को जल संरक्षण से जुड़ी गतिविधियों की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने के लिए शामिल करने से उनका महत्त्व बढ़ा है। गैर-सरकारी संगठनों, नागरिक समाज संगठनों और राष्ट्रीय कैडेट कोर तथा राष्ट्रीय सेवा योजना जैसे युवा समूहों ने भी बड़ी संख्या में नागरिकों को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया है। इससे व्यापक प्रभाव पैदा हुआ है। समुदाय द्वारा संचालित ये प्रयास दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद करते हैं।

पारम्परिक जल संरक्षण विधियों को आधुनिक प्रबंधन प्रणालियों के साथ जोड़ना कैच द रेन की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण है। जल माँग प्रबंधन और बढ़ी हुई जल उपयोग दक्षता के लिए अभिनव जल प्रबंधन प्रणालियों को जोड़ना एक सशक्त जल प्रबंधन और जलवायु अनुकूलन के लिए महत्त्वपूर्ण होगा। खेत-खलिहान, गाँव,

वाटरशेड और बेसिन व्यापक तौर पर एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन की समग्र अवधारणा में वर्षा जल प्रबंधन को स्थान देना महत्त्वपूर्ण है।

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन की गति तेज होगी, कैच द रेन अभियान जलवायु सशक्तता और टिकाऊ जल प्रबंधन को प्राथमिकता देगा। एआई-संचालित जल निगरानी, पूर्वानुमानित मौसम विश्लेषण और जलवायु-अनुकूल वर्षा जल संचयन प्रणाली जैसी उभरती हुई प्रौद्योगिकियों से भविष्य की रणनीतियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। समुदाय-आधारित वाटरशेड प्रबंधन का विस्तार करना, सार्वजनिक-निजी भागीदारी को मजबूत करना और ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाना महत्त्वपूर्ण होगा। निष्कर्ष के तौर पर कैच द रेन अभियान जल सम्बंधी सुरक्षा का समाधान करने के लिए समुदाय द्वारा संचालित जल संरक्षण की शक्ति को प्रदर्शित करता है।

कैच द रेन अभियान

"बारिश के दिनों में बचाया गया पानी, जल संकट के महीनों में बहुत मदद करता है और यही 'कैच द रेन' जैसे अभियानों की भावना है। मुझे खुशी है कि पानी के संरक्षण को लेकर कई लोग नई पहल कर रहे हैं।"

"साथियो, कहीं नारी-शक्ति जल-शक्ति को बढ़ाती है तो कहीं जल-शक्ति भी नारी-शक्ति को मजबूत करती है।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

'मन की बात' के सम्बोधन में

जल प्रबंधन में जमीनी स्तर पर प्रयास

उत्तर प्रदेश में जल संरक्षण

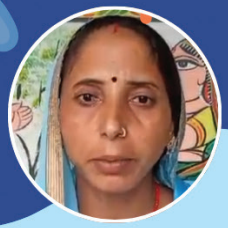

मीना, जल सहेली स्वयं सहायता समूह की सदस्य

हम जल सहेलियों ने एक बैठक आयोजित की और अपने गाँव में लम्बे समय से सूखी घुरारी नदी के पुनरुद्धार के लिए काम करने का फैसला किया। रेत खोदने, उसे बोरियों में भरने और चेक डैम बनाने के लिए उन्हें एक साथ रखने में हमें कई दिन लग गए। हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हमने जो बोरियाँ एक साथ रखी थीं, उन्हें कुछ लोगों ने फेंक दिया, लेकिन हम डरे नहीं। वे कई दिनों तक बोरियां फेंकते रहे और हम उन्हें एक साथ रखते रहे। आखिरकार उन्हें हमारे साहस के आगे झुकना पड़ा और हम चेक डैम बनाने में सफ़ल रहे।

मध्य प्रदेश में मछली पालन

लोग हमें यह कहकर हतोत्साहित करते थे कि हम महिलाएँ हैं, इसलिए यह नहीं कर सकतीं, मछली पालन नहीं कर सकतीं, उन्हें बाहर ले जाकर नहीं बेच सकतीं, लेकिन अपनी हिम्मत और मेहनत से हमने उन्हें गलत साबित कर दिया। हमने उनके सोचने का तरीका बदल दिया। वही लोग, जो कभी हमारा साथ नहीं देते थे, अब हमारे प्रयासों की सराहना करते हैं।

शारदा धुर्वे, प्रमुख, शारदा आजीविका स्वयं सहायता समूह

मध्य प्रदेश में तालाब से बड़ी मात्रा में गाद निकालना

फूला रजक, हरी बगिया स्वयं सहायता समूह की सदस्य

हम बारह सदस्य हैं, जो बहनों की तरह इस समूह में मिलकर काम करते हैं। हम फल और सब्जियाँ उगाते हैं। हमने यहाँ सब कुछ सीखा है। यह एक बंजर जमीन थी। हमने इसकी देखभाल की। जब हमने यहाँ काम करना शुरू किया तो पौधे बहुत छोटे थे। अब वे पेड़ बन गए हैं और आम, अमरूद, कटहल, कद्दू, जामुन, करौंदा आदि फल दे रहे हैं। इन पेड़ों से जो फल मिलते हैं, उन्हें हम खाते हैं, स्कूलों और आँगनबाड़ी में देते हैं और बेचते भी हैं। हमने सभी को सलाह दी है कि वे अधिक मेहनत करें और समृद्ध बनें। यह सभी के लिए अच्छा होगा।

जन भागीदारी के 10 साल

स्वच्छ भारत मिशन
का सफल दशक

“हम आस-पास देखें, तो पाएँगे कि देश के हर किसी हिस्से में, ‘स्वच्छता’ को लेकर कोई-ना-कोई अनोखा प्रयास जरूर चल रहा है। कुछ ही दिन बाद आने वाले 2 अक्तूबर को ‘स्वच्छ भारत मिशन’ के 10 साल पूरे हो रहे हैं। यह अवसर उन लोगों के अभिनंदन का है, जिन्होंने इसे भारतीय इतिहास का इतना बड़ा जन-आंदोलन बना दिया। ये महात्मा गाँधी जी को भी सच्ची श्रद्धांजलि है, जो जीवनपर्यंत, इस उद्देश्य के लिए समर्पित रहे।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“परम्परागत रूप से स्वच्छता एक कलंक से घिरा हुआ विषय था। घरों या समुदायों में इस पर खुलकर चर्चा नहीं की जाती थी। स्वच्छ भारत मिशन ने स्वच्छता को सार्वजनिक चर्चा का विषय और सामूहिक जिम्मेदारी बनाकर इस कहानी को बदल दिया है। इसने एक ‘जन आंदोलन’ को बढ़ावा दिया, जिसमें स्कूली बच्चों से लेकर गाँव के बुजुर्गों तक, कारोबारी नेताओं से लेकर मशहूर हस्तियों तक, पूरा देश एक ही दृष्टिकोण के साथ एकजुट हुआ।”

-एम हरि मेनन
निदेशक, भारत, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन

स्वच्छता के लिए दुनिया के सबसे बड़े जन आंदोलन के 10 वर्ष

‘मन की बात’ के 114वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने देश के नागरिकों की सराहना की। 2014 में 2 अक्तूबर को शुरू हुए इस अभियान को इस एपिसोड के प्रसारण के दिन एक दशक पूरा होने वाला था।

2014 में जब दिल्ली में लाल किले की प्राचीर से स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) की घोषणा की गई थी, तो बहुत कम लोगों ने इस परिवर्तनकारी यात्रा की कल्पना की होगी। ‘स्वच्छ भारत मिशन’ का शुभारम्भ एक नियमित सार्वजनिक घोषणा से कहीं अधिक था। यह भावुक आह्वान, हार्दिक अनुरोध और भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा अपने पहले स्वतंत्रता दिवस सम्बोधन के दौरान राष्ट्र को दिया गया एक साहसिक विज़न स्टेटमेंट था।

इस मिशन को गाँवों के लिए एसबीएम-ग्रामीण और शहरों के लिए एसबीएम-शहरी में विभाजित किया गया है, जिन्हें क्रमशः पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय और आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जाता है।

सितम्बर, 2024 तक समूचे भारत में 5.87 लाख से अधिक गाँवों ने ओडीएफ प्लस दर्जा हासिल कर लिया है, जिसमें 3.92 लाख से अधिक गाँवों ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली लागू की है और 4.95 लाख से अधिक गाँवों ने तरल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली स्थापित की है। प्रभावी स्वच्छता प्रथाओं के साथ जलजनित और स्वच्छता सम्बंधी बीमारियों में कमी आई है, जिससे समुदाय स्वस्थ बने हैं। बेहतर ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं ने प्रदूषण को कम करने और बेहतर पर्यावरणीय स्वास्थ्य में योगदान दिया है। इसके अलावा अपशिष्ट प्रबंधन पर जोर देने से सड़कें और सार्वजनिक क्षेत्र साफ़-सुथरे हो गए हैं, जिससे आस-पास के क्षेत्र अधिक सुखद और रहने योग्य हो गए हैं।

ओडीएफ प्लस का दर्जा हासिल करने की अटूट प्रतिज्ञा में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने, निवासियों के बीच सहयोग और एकता को बढ़ावा देने वाली विभिन्न पहल शामिल हैं। बेहतर स्वच्छता ने निवासियों के बीच गर्व की भावना को बढ़ावा दिया है, जिससे उन्हें अपने पर्यावरण को संवर्धित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

पिछले एक दशक में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत किए गए निरंतर प्रयासों से महिलाओं की गरिमा में सुधार हुआ है, बेहतर स्वास्थ्य परिणाम, लड़कियों की स्कूल उपस्थिति में वृद्धि, छोटे और सूक्ष्म उद्यमियों की वृद्धि और देश भर में ग्रामीण तथा शहरी, दोनों क्षेत्रों में जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार हुआ है। इस वर्ष के अभियान के तीन प्रमुख स्तंभ ‘स्वभाव, स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता’ हैं:

1. स्वच्छता लक्ष्य इकाइयाँ (सीटीयू): स्वच्छता लक्ष्य इकाई (सीटीयू) का तात्पर्य गम्भीर रूप से उपेक्षित, उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों जैसे कचरा स्थल या डम्प साइट से है, जो पर्यावरणीय और स्वास्थ्य सम्बंधी जोखिम पैदा करते हैं, जिन्हें अक्सर विभिन्न क्षेत्रों में नियमित सफाई अभियानों के दौरान अनदेखा कर दिया जाता है।

2. सफाई मित्र सुरक्षा शिविरः निवारक स्वास्थ्य देखभाल उपचार और केंद्रीय तथा राज्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के साथ जुड़ाव के लिए सफाई मित्रों के वास्ते एकल-खिड़की स्वास्थ्य और आरोग्य शिविर।

3. स्वच्छता में जन भागीदारीः विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता और भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए नागरिकों, समुदायों और संगठनों के साथ व्यापक जुड़ाव।

अभियान का ध्यान जन भागीदारी को संगठित करने, स्थायी स्वच्छता प्राप्त करने और सफाई कर्मचारियों (सफाई मित्रों) की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करने पर केंद्रित था।

स्वच्छता ही सेवा 2024 के अंतर्गत 17 करोड़ से अधिक लोगों की जनभागीदारी से 19.70 लाख से अधिक कार्यक्रम पूरे किए जा चुके हैं। लगभग 6.5 लाख स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों का रूपांतरण किया जा चुका है। लगभग 1 लाख 'सफाई मित्र सुरक्षा शिविर' भी आयोजित किए जा चुके हैं, जिनसे 30 लाख से अधिक 'सफाई मित्र' लाभान्वित हुए हैं। इसके अलावा 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत 45 लाख से अधिक पेड़ लगाए जा चुके हैं।

इस आंदोलन से उभरने वाली सबसे प्रभावशाली पहलों में से एक, विशेष रूप से महिलाओं के लिए समावेशी स्वच्छता सुविधाओं का विकास है, जिसमें सामूहिक कार्रवाई और नागरिक भागीदारी सबसे आगे है। कर्नाटक में स्त्री शौचालय और नोएडा में गुलाबी शौचालय, महिला-अनुकूल स्वच्छता के उदाहरण हैं।

सार्वभौमिक स्वच्छता की दिशा में इस यात्रा में, महिला-अनुकूल शौचालयों का निर्माण सभी के लिए स्वच्छता, सुरक्षा और सम्मान के प्रति भारत की विकसित होती प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

इसके अतिरिक्त जैसे-जैसे अभियान आगे बढ़ा, तकनीक-सक्षम, उपयोगकर्ता-अनुकूल स्वच्छता समाधानों पर ध्यान केंद्रित करने को भी गति मिलती गई। इस यात्रा में हुए प्रमुख विकास कार्यों में से एक स्मार्ट ई-शौचालय की शुरुआत है, जो उन्नत सुविधाएँ प्रदान करता है। यह न केवल स्वच्छता मानकों को पूरा करता है, बल्कि शहरी स्थानों में उपयोगकर्ता की अनुभूति को भी बढ़ाता है।

भारत की लगातार बढ़ती और आकांक्षी शहरी आबादी की सहायता करने के लिए, स्वच्छ भारत मिशन ने शहरों में 6.36 लाख सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालयों को एकीकृत किया है, जिससे देश के स्वच्छता बुनियादी ढाँचे में वृद्धि हुई है। शौचालयों और स्वच्छता बुनियादी ढाँचे के निर्माण से न केवल स्वच्छता में सुधार हुआ, बल्कि खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, स्वास्थ्य पर भी काफी प्रभाव पड़ा। स्वच्छ भारत की कहानी हर नागरिक के दिल में बसने वाले कर्तव्य और जुनून की अदम्य भावना का शक्तिशाली प्रमाण है। गंगा के पवित्र तटों से लेकर विस्तृत बंगाल की खाड़ी तक, बिहार और झारखंड के केंद्रीय स्थलों से लेकर पश्चिमी घाटों तक स्वच्छ भारत के दृष्टिकोण को भारत के हर कोने में रहने वाले नागरिकों ने अपनाया है।

स्वच्छ भारत लोगों द्वारा, लोगों के लिए और लोगों के साथ चलाए जाने वाले अभियान का प्रमुख उदाहरण है।

क्या आप जानते हैं?

दुनिया की अग्रणी बहु-विषयक विज्ञान पत्रिका 'नेचर' में प्रमुख विशेषज्ञों द्वारा प्रकाशित एक हालिया अध्ययन से पता चलता है कि भारत के महत्त्वाकांक्षी राष्ट्रीय स्वच्छता कार्यक्रम– स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) ने देश भर में शिशु और पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर को कम करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे हर साल 60,000 - 70,000 शिशुओं की जान बच रही है।

2014 में शुरू किया गया स्वच्छ भारत मिशन दुनिया के सबसे बड़े राष्ट्रीय व्यवहार परिवर्तन स्वच्छता कार्यक्रमों में से एक है, जिसका उद्देश्य समूचे देश के घरों में शौचालय उपलब्ध कराकर खुले में शौच को खत्म करना है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य और सम्मान का क्रांतिकारी बदलाव

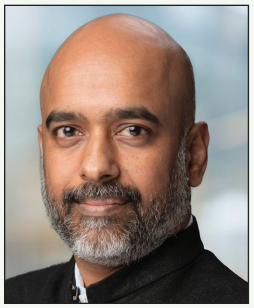

एम. हरि मेनन
निदेशक, भारत, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन

दस साल पहले भारत ने स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) की शुरुआत के साथ एक अभूतपूर्व यात्रा शुरू की थी। यह मिशन सिर्फ बड़े पैमाने पर स्वच्छता पहल से कहीं अधिक बन गया। इसने भारत के सार्वजनिक स्वास्थ्य, महिलाओं की गरिमा और सामुदायिक भागीदारी के प्रति दृष्टिकोण को बदल दिया। जब हम इन सभी आयामों में एक दशक की प्रगति पर विचार करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि स्वच्छ भारत मिशन ने एक सामाजिक क्रांति की शुरुआत की है, जिससे सभी भारतीयों के लिए आर्थिक, पर्यावरणीय, स्वास्थ्यकारी और सामाजिक परिणामों में पर्याप्त सुधार हुआ है।

स्वच्छ भारत मिशन का सबसे गहरा प्रभाव महिलाओं पर पड़ा है। लाखों लोगों के लिए सुरक्षित स्वच्छता तक पहुँच सिर्फ स्वच्छता का मामला नहीं था। यह बुनियादी गरिमा और सुरक्षा का सवाल था, जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने 2014 के स्वतंत्रता दिवस के भाषण में मिशन की शुरुआत करते हुए उजागर किया था। स्वच्छ भारत मिशन से पहले महिलाओं और लड़कियों को अक्सर खुले में शौच से जुड़े अपमान और जोखिमों का सामना करना पड़ता था और उन्हें अपनी सुरक्षा और स्वास्थ्य से समझौता करना पड़ता था। घरों, सार्वजनिक स्थानों, स्कूलों और संस्थानों में लाखों शौचालयों के निर्माण ने यह सुनिश्चित किया है कि महिलाएँ और लड़कियाँ सुरक्षा और सम्मान के अपने अधिकार को पुनः प्राप्त कर सकती हैं और दैनिक जीवन के सभी कार्यों– पढ़ाई, कामकाज या यात्रा में सक्रिय रूप से भाग ले सकती हैं। इसके अलावा, शौचालय निर्माण में भी महिला समूहों

को जोड़ना और शौचालय डिजाइन तथा निर्माण में हजारों महिलाओं को प्रशिक्षण देकर आजीविका के अवसर पैदा करना भी शामिल है। स्वच्छ भारत मिशन, इस नजरिए से शौचालयों तक पहुँच के अलावा महिला सशक्तीकरण की पहल भी है।

स्वच्छ भारत मिशन ने सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता के बीच के सम्बंधों को फिर से परिभाषित करने में मदद की है। स्वच्छता तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करने के उद्देश्य से स्वच्छ भारत मिशन ने कुपोषण और खराब स्वास्थ्य के प्रमुख कारणों में से एक – मल के ज़रिए संक्रमण के प्रसार की समस्या पर नियंत्रण किया है । बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली और उनकी सीखने तथा बढ़ने की क्षमता को बाधित करने वाली तथा बार-बार होने वाली दस्त जैसी बीमारी से राहत मिली है। बाल स्वास्थ्य पर स्वच्छ भारत मिशन का प्रभाव इस बात पर प्रकाश डालता है कि बेहतर स्वच्छता व्यापक सामाजिक प्रगति की कुंजी है। इस बारे में प्राप्त आँकड़े काफी प्रभावशाली हैं। स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से 117 मिलियन से अधिक घरेलू शौचालयों का निर्माण किया गया और 2019 तक 600,000 से अधिक गाँवों को खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ) घोषित किया गया। अनुमान बताते हैं कि स्वच्छ भारत मिशन ने बेहतर स्वच्छता

कवरेज और सुरक्षित स्वच्छता प्रथाओं को बढ़ावा देकर 2014 और 2019 के बीच दस्त सम्बंधी बीमारियों और कुपोषण से सम्बंधित 300,000 से अधिक मौतों को टाला। 640 जिलों में शिशु और पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर के आँकड़ों के हालिया विश्लेषण से पता चला है कि स्वच्छ भारत मिशन ने सालाना लगभग 60,000-70,000 शिशु मौतों को टाला है। ये परिणाम स्वच्छ भारत मिशन को आधुनिक भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में से एक बना देंगे। शौचालयों के निर्माण और जान बचाने से परे स्वच्छ भारत मिशन की विरासत इसके द्वारा शुरू किए गए सांस्कृतिक बदलाव में निहित है। परम्परागत रूप से स्वच्छता एक कलंक से घिरा हुआ विषय था– घरों या समुदायों में इस पर खुलकर चर्चा नहीं की जाती थी। स्वच्छ भारत मिशन ने स्वच्छता को सार्वजनिक चर्चा का विषय और सामूहिक जिम्मेदारी बनाकर इस कहानी को बदल दिया है। इसने एक 'जन आंदोलन' को बढ़ावा दिया, जिसमें स्कूली बच्चों से लेकर गाँव के बुजुर्गों तक, कारोबारी नेताओं से लेकर मशहूर हस्तियों तक, पूरा देश एक ही दृष्टिकोण के साथ एकजुट हुआ।

यह व्यवहार परिवर्तन शायद बुनियादी ढाँचे के निर्माण की तुलना में

हासिल करना अधिक चुनौतीपूर्ण था, साथ ही यह सबसे चिरस्थायी भी है। आज स्वच्छता और सफाई समुदायों के सामाजिक ताने-बाने में बुनी हुई है और जन आंदोलन की संरचना का उपयोग कई अन्य विकास प्राथमिकताओं के लिए किया जा रहा है।

स्वच्छ भारत मिशन दिखाता है कि दृढ़ राजनीतिक नेतृत्व और पूर्ण सरकारी स्वामित्व, सामुदायिक भागीदारी के साथ मिलकर सामूहिक रूप से क्या हासिल कर सकते हैं। ग्लोबल साउथ के देश इसकी सफलता से प्रभावित होकर इसे अपनाने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि वे स्वच्छ भारत अभियान में बड़े पैमाने पर परिवर्तनकारी बदलाव के लिए एक बेहतरीन ब्लूप्रिंट देख रहे हैं। हमारी फाउंडेशन को सितम्बर, 2019 में न्यूयॉर्क में गोलकीपर्स इवेंट में माननीय प्रधानमंत्री को 'ग्लोबल गोलकीपर अवार्ड' देकर भारत की स्वच्छता प्रगति को मान्यता देने का सौभाग्य मिला।

तेजी से हो रहे शहरीकरण और पर्यावरण संरक्षण के साथ स्वच्छ भारत मिशन से सीखे गए सबक और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। स्वच्छ भारत मिशन और कायाकल्प तथा शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन– 'अमृत' के तहत उपयोग किए गए पानी (तरल अपशिष्ट) प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्वच्छता मिशन का संकल्प शहरी स्वच्छता चुनौतियों का समाधान करने के लिए निरंतर प्रतिबद्धता का संकेत देता है। यह महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि भारतीय शहर बढ़ रहे हैं और बढ़ते कूड़े के ढेर, पानी की कमी और पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए परिवर्तनशील तथा टिकाऊ बुनियादी ढाँचे की माँग बढ़ रही है। इसके अलावा समावेशी स्वच्छता को प्राथमिकता देना अनिवार्य है, ताकि कम आय वाले लोगों की बस्तियों और आपदा-ग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाली आबादी उच्च गुणवत्ता वाली सेवा सुलभता के साथ उचित स्वच्छता समाधान तक पहुँच सके।

स्वच्छ भारत मिशन ने अपनी स्थापना के बाद से एक दशक में, शौचालय बनाने से कहीं अधिक काम किया है। इसने समुदायों का निर्माण किया है, परिवर्तन को प्रेरित किया है और सार्वजनिक स्वास्थ्य में भारत की दिशा को मौलिक रूप से बदल दिया है। विशेषकर महिलाओं और बच्चों पर इसका प्रभाव, इसकी व्यापक सफलता का प्रमाण है। जैसे-जैसे यह आगे बढ़ेगा, गरिमा, स्वास्थ्य और सामूहिक जिम्मेदारी के इसके मूल सिद्धांत दुनिया भर के देशों को प्रेरित करेंगे और स्वस्थ, स्वच्छ तथा अधिक समावेशी समाज बनाने में मदद करेंगे।

स्वच्छ भारत मिशन

वैश्विक नेताओं ने की प्रधानमंत्री मोदी के विज़न की प्रशंसा

स्वच्छ भारत मिशन ने स्वच्छ और स्वस्थ भारत की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा को पहचान दी है। खुले में शौच से मुक्त करने, स्वच्छता के बुनियादी ढाँचे में सुधार और स्वच्छता सम्बंधी जागरूकता को बढ़ावा देने के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ यह मिशन दुनिया के सबसे बड़े स्वच्छता अभियानों में से एक बन गया है। पिछले एक दशक में इसने गाँवों और शहरों में स्वच्छता के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार किया है, व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से समुदायों को सशक्त और सार्वजनिक स्वास्थ्य के परिणामों को बेहतर बनाया है। इससे स्वच्छता एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गई है। 2024 में जब यह मिशन अपने 10 साल पूरे करेगा, तो इसका प्रभाव न केवल साफ़-सुथरी सड़कों और बेहतर स्वास्थ्य में दिखाई देगा, बल्कि स्वच्छता के प्रति जागरूक समाज की ओर भी बदलाव होगा।

> “2 अक्तूबर को ‘स्वच्छ भारत मिशन’ के 10 साल पूरे हो रहे हैं। यह अवसर उन लोगों के अभिनंदन का है, जिन्होंने इसे भारतीय इतिहास का इतना बड़ा जन-आंदोलन बना दिया। ये महात्मा गाँधी जी को भी सच्ची श्रद्धांजलि है, जो जीवनपर्यंत इस उद्देश्य के लिए समर्पित रहे।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

स्वच्छ भारत मिशन एक अग्रणी पहल बन गया है, जिसने अपने व्यापक प्रभाव और दृष्टिकोण के लिए वैश्विक स्तर पर अपनी ओर ध्यान आकर्षित किया है। इस मिशन ने पूरे भारत में स्वच्छता और सफाई को बदला है। विश्व भर के प्रभावशाली नेताओं ने सार्वजनिक स्वास्थ्य और जीवन स्तर को बेहतर बनाने में इसकी सफलता को स्वीकार भी किया है। इस पहल की पहुँच ने अन्य देशों के लिए एक बेंचमार्क स्थापित किया है। इसके परिणामस्वरूप, 110 मिलियन से अधिक शौचालयों का निर्माण हुआ और 6 लाख गाँव खुले में शौच से मुक्त घोषित किए गए। इसकी परिवर्तनकारी शक्ति को मान्यता देते हुए वैश्विक स्तर के दिग्गजों ने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की प्रशंसा की है और स्वच्छ भारत को दुनिया भर में स्वच्छता चुनौतियों से निपटने के लिए एक मॉडल के रूप में पाया है। मिशन की सफलता ने अन्य विकासशील क्षेत्रों में इसी तरह के बड़े पैमाने पर सफाई अभियान को दोहराने के बारे में अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं को जन्म दिया है।

भारत सरकार ने संसाधनों को जुटाकर, समुदायों को शामिल करके और खुले में शौच से मुक्त करने और एक स्वच्छ, स्वस्थ राष्ट्र को बढ़ावा देने के लिए एक आंदोलन की ज्योति प्रज्वलित कर स्वच्छता और सफाई को राष्ट्रीय प्राथमिकता बना दिया। स्वच्छ भारत अभियान भारत की अपनी विशाल जनसंख्या के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार के लिए अनुकरणीय प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

-डॉ. टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस, विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक

दस वर्ष पहले, स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत स्वच्छता में सुधार के माध्यम से भारत को बदलने के एक साहसिक दृष्टिकोण के साथ की गई थी। आज, जब हम इस अभियान की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर विचार करते हैं और उनका जश्न मनाते हैं, तो विश्व बैंक को इस यात्रा में एक दृढ़ भागीदार होने पर गर्व है। प्रधानमंत्री मोदी को बधाई, जिनके व्यक्तिगत नेतृत्व और भागीदारी ने इस साहसिक दृष्टिकोण को भारत के लिए एक नई वास्तविकता बना दिया।

-अजय बंगा, विश्व बैंक अध्यक्ष

पिछले दशक में स्वच्छ भारत अभियान ने भारत भर में लाखों लोगों के जीवन को बदल दिया है, स्वच्छ शहर और बेहतर स्वच्छता प्रदान की है। एशियाई विकास बैंक को इस दूरदर्शी पहल पर भारत के साथ भागीदारी करने और शुरू से ही इसका समर्थन करने पर गर्व है। मैं इस परिवर्तनकारी अभियान का नेतृत्व करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सराहना करना चाहूँगा। इसने महिलाओं और शहरी गरीबों को सशक्त बनाया है, स्वास्थ्य में सुधार किया है और नए अवसर पैदा किए हैं।

-मासात्सुगु असकावा, एशियाई विकास बैंक अध्यक्ष

महात्मा गाँधी की जयंती पर मनाए जाने वाले स्वच्छ भारत दिवस पर भारत के लोगों को बधाई। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एक दशक पहले देश भर में खुले में शौच से मुक्त करने के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की गई थी। तब से भारत ने स्वच्छता और सफाई में सुधार, लाखों शौचालय स्थापित करने और हजारों मल-कीचड़ उपचार संयंत्रों का निर्माण करने में जबरदस्त प्रगति की है। इससे लाखों लोगों के लिए सुरक्षित स्वच्छता सुनिश्चित हुई है। भारत का दृष्टिकोण समुदाय द्वारा संचालित कार्यक्रमों के लिए एक मॉडल बन गया है, जो पूरे देश में लोगों को प्रेरित और संगठित कर रहा है।

-बिल गेट्स, माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक

स्वच्छ भारत के लोकल हीरोज़

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

धन्यवाद प्रकृति अभियान

"'मेरे प्यारे देशवासियो, उत्तराखंड के उत्तरकाशी में एक सीमावर्ती गाँव है 'झाला'। यहाँ के युवाओं ने अपने गाँव को स्वच्छ रखने के लिए एक खास पहल शुरू की है। वे अपने गाँव में 'धन्यवाद प्रकृति' या कहें 'थैंक्यू नेचर' अभियान चला रहे हैं। इसके तहत गाँव में प्रतिदिन दो घंटे सफ़ाई की जाती है। गाँव की गलियों में बिखरे हुए कूड़े को समेटकर, उसे गाँव के बाहर, तय जगह पर डाला जाता है। इससे झाला गाँव भी स्वच्छ हो रहा है और लोग भी जागरूक हो रहे हैं। आप सोचिए, अगर ऐसे ही हर गाँव, हर गली-हर मोहल्ला अपने यहाँ ऐसा ही थैंक्यू अभियान शुरू कर दे, तो कितना बड़ा परिवर्तन आ सकता है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'मन की बात' सम्बोधन में

उत्तरकाशी, उत्तराखंड में ग्राम झाला के युवाओं द्वारा शुरू किया गया 'धन्यवाद प्रकृति अभियान' (थैंक्यू नेचर) समुदाय के नेतृत्व वाले स्वच्छता प्रयासों का एक मॉडल बन गया है। इस पहल के तहत ग्रामीण अपनी गलियों की सफाई, कचरा एकत्र करने और गाँव के बाहर निर्धारित स्थानों पर उसका निपटान करने के काम के लिए रोजाना दो घंटे देते हैं। योग मंगल समूह ने 2020 में अपनी स्थापना के बाद से स्वच्छता के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने और निवासियों के बीच जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके लगातार प्रयासों और सोशल मीडिया की शक्ति के माध्यम से इस अभियान ने न केवल गाँव को बदल दिया है, बल्कि व्यापक राष्ट्रीय जुड़ाव को भी प्रेरित किया है।

"स्वच्छ भारत मिशन की परिकल्पना को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' के 114वें एपिसोड में ग्राम झाला के युवाओं द्वारा चलाए जा रहे 'धन्यवाद प्रकृति अभियान' का जिक्र किया। 8 जुलाई से हम स्वच्छता अभियान चला रहे हैं, जो 2020 में शुरू किए गए प्रयासों पर आधारित है।

हमने इसकी शुरुआत ग्राम सभा झाला से की और हर्सिल घाटी के आठ वाइब्रैंट गाँवों और गंगोत्री की कल्पगेदर मंदिर समिति के सहयोग से हमें सफलता का पूरा भरोसा है। उन्होंने पूरे गंगोत्री क्षेत्र में 'धन्यवाद प्रकृति अभियान' के विस्तार के लिए अपना पूरा सहयोग देने का संकल्प लिया है।"

-अभिषेक रौतेला, अध्यक्ष, धन्यवाद प्रकृति अभियान, झाला गाँव

दोस्तो, पुडुचेरी के समुद्र तटों पर स्वच्छता को लेकर एक बहुत बड़ा अभियान चलाया जा रहा है। यहाँ रेम्याजी नाम की एक महिला माहे नगर पालिका और उसके आस-पास के इलाकों के युवाओं की एक टीम का नेतृत्व कर रही हैं। इस टीम के लोग अपने प्रयासों से माहे एरिया और खास तौर पर वहाँ के समुद्र तटों को पूरी तरह साफ़-सुथरा बना रहे हैं।

-प्रधानमंत्री मोदी 'मन की बात' सम्बोधन में

पुडुचेरी के माहे नगर पालिका की रेम्या, माहे समुद्र तटों और आस-पास के इलाकों को साफ़ करने के लिए युवाओं द्वारा संचालित स्वच्छता पहल का नेतृत्व कर रही हैं। स्वच्छ भारत मिशन से प्रेरित रेम्या की पहल, माहे में बढ़ते कूड़े और प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए शुरू हुई। शुरुआती चुनौतियों के बावजूद समुदाय की सक्रिय भागीदारी, खासतौर पर स्थानीय युवाओं और निवासियों की भागीदारी ने इस इलाके को बदल दिया है।

इस अभियान की वजह से नियमित सफाई अभियान, कचरे को अलग-अलग करने और स्वच्छता के बारे में समुदाय में जागरूकता बढ़ी है। स्वयंसेवी कार्यक्रमों और सोशल मीडिया के माध्यम से स्थानीय युवाओं को सक्रिय रूप से शामिल करके यह पहल न केवल पर्यावरण को बेहतर बनाती है, बल्कि स्वच्छता की स्थायी संस्कृति को भी बढ़ावा देती है, जो अन्य शहरों के लिए एक मॉडल के रूप में काम करती है।

"प्रधानमंत्री द्वारा 'मन की बात' जैसे मंच पर इसका उल्लेख किया जाना एक महत्त्वपूर्ण स्वीकृति है, जो इस पहल के महत्त्व को उजागर करती है और अधिक लोगों को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित कर सकती है। स्वच्छता अभियान शुरू करने की प्रेरणा हमारे आस-पास बढ़ते कूड़े और प्रदूषण की समस्या को देखने से मिली, जिसने न केवल हमारे गाँव की सुंदरता को प्रभावित किया था, बल्कि स्वास्थ्य के लिए जोखिम भी पैदा किया।

हमारे समुदाय ने नियमित रूप से सफाई अभियान तथा जागरूकता सत्र आयोजित करके और बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन समाधानों के लिए स्थानीय अधिकारियों के साथ सहयोग करके 'स्वच्छ भारत मिशन' में सक्रिय रूप से योगदान दिया है। जो सड़कें कभी कूड़े से भरी रहती थीं, अब नियमित रूप से साफ़ की जाती हैं और कई घरों में कचरे को अलग-अलग करने का काम भी किया जाता है।"

-रेम्या के, जिला युवा अधिकारी, नेहरू युवा केंद्र, पुदुचेरी

"रिड्यूस, रीयूज और रीसाइकिल" (ट्रिपल आर) का मंत्र हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। यह टिकाऊ प्रयासों को बढ़ावा देता है, जो न केवल पर्यावरण को लाभ पहुँचाते हैं बल्कि संसाधनशीलता को भी प्रोत्साहित करते हैं। देश भर में लोग इन सिद्धांतों को विभिन्न तरीकों से अपना रहे हैं। उदाहरण के लिए, कई लोग सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के बजाय कपड़े के थैलों का उपयोग कर रहे हैं, स्थानीय कारीगर बेकार पड़ी सामग्री को सुंदर हस्तशिल्प में बदल रहे हैं। पुणे और बेंगलुरु जैसे शहरों में समुदाय द्वारा संचालित एक पहल निवासियों को स्रोत पर ही कचरे को अलग करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे रीसाइक्लिंग अधिक प्रभावी हो जाती है।

"साथियो, आज 'स्वच्छ भारत मिशन' की ही सफलता है कि 'वेस्ट टू वेल्थ' का मंत्र लोगों के बीच लोकप्रिय हो रहा है। लोग 'रिड्यूस, रीयूज और रीसाइकिल' के बारे में बात करने लगे हैं और इसके उदाहरण देने लगे हैं। अब मुझे केरल के कोझीकोड में एक शानदार प्रयास के बारे में पता चला है। यहाँ 74 वर्षीय सुब्रमण्यमजी ने 23 हजार से अधिक कुर्सियों की मरम्मत करके उन्हें फिर से इस्तेमाल के लायक बनाया है। लोग उन्हें 'रिड्यूस, रीयूज और रीसाइकिल' यानी आरआरआर (ट्रिपल आर) चैम्पियन भी कहते हैं। उनके ये अनोखे प्रयास कोझीकोड सिविल स्टेशन, पीडब्ल्यूडी और एलआईसी के दफ्तरों में देखे जा सकते हैं।"

-प्रधानमंत्री मोदी 'मन की बात' सम्बोधन में

इस मंत्र का एक शानदार उदाहरण केरल के कोझीकोड के 74 वर्षीय सुब्रमण्यमजी हैं, जिन्होंने 23,000 से अधिक कुर्सियों की मरम्मत की है, जिससे वे नई लगने लगी हैं। उनके उल्लेखनीय प्रयासों ने उन्हें 'आरआरआर चैम्पियन' का खिताब दिलाया है, जिससे उनके समुदाय के कई लोग प्रेरित हुए हैं। मन की बात में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा उनकी उपलब्धियों का उल्लेख करने के बाद सुब्रमण्यमजी को उनके गाँव में आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित एक स्वागत समारोह में सम्मानित किया गया, जो इस बात को दर्शाता है कि इस तरह की सतत पहल व्यक्तियों और उनके समुदायों को कितना गौरव और मान्यता दिला सकती है। आइए देखें कि प्रधानमंत्री से इस मान्यता पर सुब्रमण्यमजी की क्या प्रतिक्रिया रही।

"'मन की बात' में प्रधानमंत्री द्वारा मेरा उल्लेख किए जाने से मेरा परिवार और पड़ोसी बहुत खुश और गौरवान्वित हैं। शो के प्रसारण के बाद मेरे गाँव की आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने मेरे लिए एक स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया।"

"जब किसी क्षतिग्रस्त कुर्सी की मरम्मत की जाती है, तो उसका दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे कचरे को किसी उपयोगी वस्तु में बदला जा सकता है। इस प्रकार की कुर्सी खासतौर पर पीठ दर्द से पीड़ित लोगों के लिए उपयुक्त है। जब मैं कुर्सियों की मरम्मत करता हूँ, तो सफाई कर्मचारी मरम्मत से उत्पन्न कचरे को इकट्ठा करते हैं, जो आमतौर पर सप्ताह में एक बार होता है।

पहले मैं एक दिन में छह कुर्सियों की मरम्मत करता था। अब मैं अपनी वृद्धावस्था के कारण, एक दिन में केवल दो कुर्सियों की मरम्मत कर सकता हूँ।"

-सुब्रह्मण्यम मलयाथोडी, कोझीकोड- केरल

कलाकृति और संस्कृति की पुनर्प्राप्ति

रतन पी. वाटल
अध्यक्ष, सेंट्रल विस्टा ओवरसाइट कमेटी, आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार

कला और संस्कृति न केवल किसी देश की पहचान के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर राष्ट्रीय गौरव, एकता और सम्मान को बढ़ावा देने में कारगर भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से हमारी स्वतंत्रता के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अपने देश से बाहर भेजी गई कलाकृतियों की पुनर्प्राप्ति के प्रयास निश्चित तौर पर इस महत्त्व को दर्शाते हैं। भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का अभिन्न अंग, कलाकृतियाँ शुरू में औपनिवेशिक काल के दौरान उपमहाद्वीप से बाहर ले जाई गई थीं। स्वतंत्रता के बाद हमने चोरी की घटनाओं और तस्करी के माध्यम से विदेश भेजे जाने के कारण कई अमूल्य कलाकृतियाँ खो दीं। उनकी वापसी केवल भौतिक वस्तुओं को फिर से प्राप्त करना भर नहीं है, बल्कि भारत के लिए सांस्कृतिक पहचान और न्याय की भावना को पुनर्जीवित करना भी है।

2014 से इसे प्राथमिकता दी गई है और इसका भरपूर लाभ भी मिला है। यह नीति सांस्कृतिक कलाकृतियों को उनके वास्तविक उत्तराधिकारियों तक वापस पहुँचाने के वैश्विक अभियान के साथ भी जुड़ी हुई है। सैकड़ों कलाकृतियाँ विदेशों में संदिग्ध परिस्थितियों में ले जाई गई और नीलाम की गई कलाकृतियाँ भी है। 2014 के बाद से इन कलाकृतियाँ की वापसी में तेजी आई। इससे पहले के दशकों में बहुत कम संख्या में उनकी वापसी हो पाई थी। इनमें से कई कलाकृतियाँ विदेशों में निजी और सार्वजनिक संग्रहालयों में रखी गई थीं। इन्हें जिन समुदायों से लिया गया था, उनके लिए उनका गहरा धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व था। इन खजानों की वापसी नैतिक न्याय का एक स्वरूप है और अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक क्षेत्र में एक प्रभावशाली देश के रूप में भारत की व्यापक स्वीकृति है। ऑस्ट्रेलिया से नटराज और अर्धनारीश्वर एवं कनाडा से पैरट लेडी जैसी मूर्तियों की वापसी इसके उदाहरण हैं। इसके परिणामस्वरूप भारत की विदेश नीति में एक मजबूत मिसाल कायम हुई है और वैश्विक-सांस्कृतिक संवादों में भारत का बढ़ता प्रभुत्व भी प्रदर्शित हुआ है।

2014 से भारत को जर्मनी से महिषासुरमर्दिनी मूर्ति और सिंगापुर से उमा परमेश्वरी काँस्य मूर्ति सहित कई अनमोल खजाने मिले हैं। चोरी या तस्करी के बाद ये वस्तुएँ भारत में अपने सही स्थानों पर वापस आ गई हैं। इससे लोगों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से फिर से जुड़ने का मौका मिला है। वर्तमान में कई मूर्तियाँ नए संसद भवन में प्रदर्शित की गई हैं। इन कलाकृतियों को वापस लाना इतिहास के संरक्षण और अपनेपन की भावना में योगदान देता है।

ये कलाकृतियाँ भविष्य में नई दिल्ली में रायसीना हिल पर सेंट्रल विस्टा में बनाए जा रहे नए युगीन भारत संग्रहालय में प्रदर्शित वस्तुओं को और भी अधिक समृद्ध करेंगी। यह संग्रहालय पेरिस के लौवर संग्रहालय से भी बड़ा होगा। भारत सरकार ने पिछले दशक से लालच और औपनिवेशिक शोषण के कारण अपनी खोई हुई सांस्कृतिक विरासत की विविधता को बहाल करने के लिए एक ठोस प्रयास किया है। प्रधानमंत्री की आधिकारिक यात्रा के बाद हाल ही में अमरीका से कलाकृतियों की वापसी इस प्रयास का एक प्रमाण है। कलाकृतियों की ऐसी वापसी भारत के इतिहास और गौरव की पुनः प्राप्ति का प्रतीक है, जो अन्य देशों में भी व्यापक वैश्विक प्रयास के साथ तालमेल रखता है।

यदि निष्कर्ष के तौर पर देखा जाए तो कलाकृतियों की वापसी भौतिक वस्तुओं को वापस पाने से कहीं ज़्यादा है। यह सांस्कृतिक कायाकल्प और ऐतिहासिक न्याय की दिशा में भारत की यात्रा का प्रतिनिधित्व करती है। इस सम्बंध में किए गए प्रयास सराहनीय हैं। वे भारत की विरासत में गौरव को बहाल करते हैं और सांस्कृतिक अधिकारों की व्यापक वैश्विक मान्यता में योगदान करते हैं। जैसे-जैसे भारत अपने खोए हुए खजानों को वापस पाने की कोशिश करता रहेगा, दुनिया इसकी समृद्ध संस्कृति और इतिहास को उतना ही स्वीकार करेगी और इनको महत्त्व देगी।

द होमकॉमिंग!

प्रधानमंत्री के प्रयासों से प्राचीन कलाकृतियों की वापसी

मेरे प्यारे देशवासियो, हम सभी को अपनी विरासत पर बहुत गर्व है और मैं तो हमेशा कहता हूँ 'विकास भी-विरासत भी'। अमरीकी सरकार ने भारत को करीब 300 प्राचीन कलाकृतियों को वापस लौटाया है। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि पिछले एक दशक में ऐसी कई कलाकृतियाँ और हमारी बहुत सारी प्राचीन धरोहरों की घर वापसी हुई है। मुझे विश्वास है जब हम अपनी विरासत पर गर्व करते हैं तो दुनिया भी उसका सम्मान करती है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

जब सांस्कृतिक विरासत की बात आती है, तो स्मारक, कलाकृतियाँ, प्राचीन लिपियाँ आदि हमारी विरासत के ठोस सबूत होते हैं। सितम्बर में ही भारत अमरीका से 297 कलाकृतियाँ घर लाया, जिससे हमारे पहले से ही भरे हुए भंडार में और वृद्धि हुई। आइए हम उनमें से कुछ के इतिहास, विशेषताएँ और प्रासंगिकता सम्बंधी विवरण पर एक नजर डालें।

क्या आप जानते हैं?

2016 से अब तक अमरीका से भारत को कुल 578 सांस्कृतिक कलाकृतियाँ वापस की गई हैं। यह किसी भी देश द्वारा भारत को लौटाई गई सांस्कृतिक कलाकृतियों की सबसे अधिक संख्या है।

अप्सरा

- बलुआ पत्थर की मूर्ति
- मध्य भारत से
- 10-11वीं शताब्दी से सम्बंधित
- सुंदर त्रिभंग मुद्रा में महिला की आकृति
- मुकुट जैसे सिर के पहनावे और बड़ी गोलाकार बालियों सहित जटिल आभूषणों से सजी।
- विस्तृत शिल्प कौशल और शांत चेहरे के भावों के लिए ध्यान देने योग्य।

जैन तीर्थंकर

- काँस्य मूर्ति
- मध्य भारत से
- 15-16वीं शताब्दी से सम्बंधित
- मूर्ति में जैन तीर्थंकर को एक ऊँचे आसन पर ध्यान साधना में लीन दिखाया गया है। इसमें देवताओं की आकृतियाँ भी शामिल हैं, जिन्हें शेरों और हाथियों द्वारा सहारा दिया गया है।
- धार्मिक भक्ति को दर्शाती है।

टेराकोटा फूलदान

- टूटा हुआ एकल टुकड़ा फूलदान
- पूर्वी भारत से
- 3-4वीं शताब्दी से सम्बंधित
- हाथियों की जटिल आकृतियों से सजाया गया, मगरमच्छ पर सवार एक महिला, जलीय जानवर आदि।
- मिट्टी के बर्तनों में प्राचीन भारतीय कलात्मकता का प्रतीक है।

चूना पत्थर की मूर्ति

- दक्षिण भारत से
- पहली ईसा पूर्व शताब्दी से सम्बंधित।
- एक पगड़ी पहने हुए पुरुष को खड़ा दिखाया गया है, जिसके साथ दो महिलाएँ और एक महावत है।
- निचले हिस्से में एक घोड़े का सिर और एक पहिया है।
- अपने ऐतिहासिक महत्त्व के लिए ध्यान देने योग्य।

भगवान बुद्ध

- खड़ी बलुआ पत्थर की मूर्ति
- उत्तर भारत से
- 15-16वीं शताब्दी से सम्बंधित
- एक प्रवाही वस्त्र में लिपटी शांत आकृति।
- भगवान बुद्ध को अभय मुद्रा में दिखाया गया है।
- शांति का प्रतीक और आध्यात्मिक ज्ञान।

भगवान गणेश

- काँस्य मूर्ति
- दक्षिण भारत से
- 17-18वीं शताब्दी से सम्बंधित
- चार भुजाओं वाली मूर्ति में देवता को पासा, दाँत, मोदक और परशु पकड़े हुए दिखाया गया है।
- अपनी दक्षिण भारतीय काँस्य शिल्पकला और धार्मिक भक्ति के लिए प्रसिद्ध।

संथाली भाषा का डिजिटलीकरण

सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण

रामजीत टुडू
ओडिशा

भारत, बाँग्लादेश और नेपाल में बोली जाने वाली संथाली भाषा विलुप्त होने के कगार पर है। अपनी समृद्ध मौखिक परम्पराओं के लिए जाने जाने वाले संथाल लोगों ने ऐतिहासिक रूप से कहानियों और लोकगीतों के माध्यम से अपने सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं और इतिहास को साझा किया है। आज के डिजिटल युग में संथाली भाषा का संरक्षण तेजी से डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहा है। यह प्रयास संथाल समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और उनकी भाषायी विरासत के अस्तित्व को सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सांस्कृतिक संरक्षण में डिजिटलीकरण की भूमिका

संथाल लोगों के लिए भाषा उनकी विरासत और विश्वदृष्टि को व्यक्त करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण माध्यम के रूप में कार्य करती है। संथाली भाषा का डिजिटलीकरण इसके विलुप्त होने और हाशिए पर जाने जैसे महत्त्वपूर्ण जोखिमों का समाधान करता है। यह डिजिटल परिवर्तन सांस्कृतिक संरक्षण को मूर्त रूप लेने में सक्षम बनाता है। इंटरनेट भौगोलिक सीमाओं से परे भाषा के प्रसार की सुविधा प्रदान करता है। ऑनलाइन शब्दकोश, अनुवाद उपकरण और समर्पित संथाली वेबसाइटें भाषा को मानकीकृत और प्रलेखित करते हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और यूट्यूब भी संथाली लोकगीत और संगीत को बढ़ावा देते हैं। इससे युवा पीढ़ी को हिन्दी और अंग्रेजी जैसी प्रमुख भाषाओं के बढ़ते प्रभाव के बीच अपनी जड़ों से जुड़े रहने में भी मदद मिलती है। यह जुड़ाव समुदाय के भीतर पहचान और गर्व की एक मजबूत भावना को बढ़ावा देता है।

OLCHIKI में टाइपिंग तकनीक का विकास

1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा बनाई गई ओएल चिकी लिपि ने संथाली भाषा को लिखित रूप प्रदान करके इसे बदल दिया। हालाँकि मानक फोंट और कीबोर्ड लेआउट की अनुपस्थिति के कारण डिजिटल प्लेटफॉर्म में इसके एकीकरण को शुरुआती बाधाओं का सामना करना पड़ा।

मुझे उस समय अजीब लगा, क्योंकि मोबाइल फोन और डेस्कटॉप ओएल चिकी यूनिकोड को सपोर्ट नहीं करते थे। सबसे बुरी बात यह थी कि हम अपने विचारों को ठीक से व्यक्त करने में असमर्थ थे, क्योंकि कुछ स्वरों को अन्य लेखन प्रणालियों में नहीं लिखा जा सकता है। इसने मुझे त्वरित शोध करने और एक ओएल चिकी यूनिकोड फोंट और कीबोर्ड लेआउट विकसित करने के लिए प्रेरित किया, जिसका उपयोग NHM राइटर, कीमैन कीबोर्ड, कीमैजिक कीबोर्ड आदि जैसे लोकप्रिय सॉफ्टवेयर के साथ किया जा सकता है। 2014 में प्ले स्टोर में कोई एंड्राइड कीबोर्ड नहीं था, जो ओएल चिकी स्क्रिप्ट में इनपुट की सुविधा दे सके। हालाँकि मुझे केवल एक कीबोर्ड मिला, सी-डीएसी जीआईएसटी कीबोर्ड, जो सी-डीएसी वेबसाइट पर उपलब्ध था, उसे हमने तब समुदाय के भीतर लोकप्रिय बनाया। डिजिटल स्पेस में संथाली साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए यह सफलता महत्त्वपूर्ण थी। आज

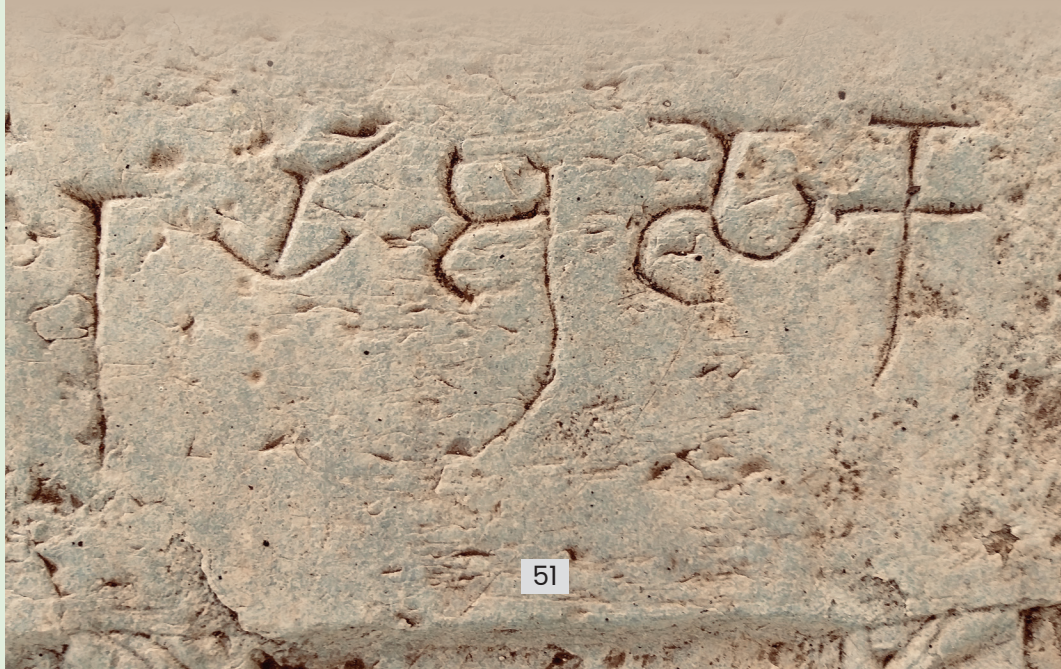

ऑनलाइन टूल, मोबाइल ऐप और टाइपिंग सॉफ्टवेयर हैं, जो ओएल चिकी का समर्थन करते हैं। इससे संथाली बोलने वालों के लिए ऑनलाइन संवाद करना, लिखना और सामग्री साझा करना आसान हो गया है।

संथाली भाषा को डिजिटल तौर पर बढ़ावा देने की सफल पहल

भाषा के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने की इच्छा ने OL_CHIKI_TECH के गठन को जन्म दिया, जिसका समर्थन आर. अश्वनी बंजन मुर्मू और बापी मुर्मू ने किया। हमारा प्राथमिक लक्ष्य एक ब्लॉग, www.Olchikidr.blogspot.com के माध्यम से विभिन्न डिजिटल उपकरणों और तकनीकों को पेश करना था। इसके लिए हमने सोहागी यूनिकोड फोंट, कीबोर्ड लेआउट फाइल और अन्य सहायक फाइलों का प्रबंध किया। इस पहल का विस्तार करने के लिए हमने संथाल समुदाय के भीतर सार्वजनिक समारोहों में आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किए। परिणामस्वरूप आधुनिक उपकरणों ने OL_CHIKI का समर्थन करना शुरू कर दिया। 2017 में भारत, नेपाल और

बाँग्लादेश के स्वयंसेवकों ने विकिपीडिया इनक्यूबेटर में सहयोगात्मक रूप से योगदान दिया, जो अगस्त, 2018 में लाइव हुआ। अब संथाली विकिपीडिया में 13,000 से अधिक लेख हैं, जो इसे ज्ञान का एक बड़ा भंडार बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, 2020 में मेरे दो दोस्तों– फागू बास्के और आर अश्वनी बंजन मुर्मू के साथ हमने बिरमाली, संथाली में पहली साहित्यिक ई-पत्रिका लॉन्च की, जिसे www.birmali.com के माध्यम से ऑनलाइन मुफ्त में पढ़ा जा सकता है।

संथाली को डिजिटल बढ़ावा देने में शेष चुनौतियाँ

इन प्रगतियों के बावजूद संथाली भाषा को बढ़ावा देने में कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। एक महत्त्वपूर्ण बाधा ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है, जहाँ यह भाषा मुख्य रूप से बोली जाती है। सीमित इंटरनेट पहुँच और कम स्मार्टफोन पहुँच डिजिटल साक्षरता को सीमित करती है, जिससे लोगों के लिए संथाली सामग्री से जुड़ना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, बहुत कम शैक्षणिक संस्थान संथाली भाषा पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पाठकों की संख्या घटती जा रही है। गूगल, विकिपीडिया और सोशल मीडिया जैसे प्रमुख प्लेटफॉर्म पर संथाली भाषा सामग्री की कमी भाषा की दृश्यता को और सीमित करती है।

संथाली भाषा का भविष्य

डिजिटल युग में संथाली भाषा का भविष्य आशाजनक है, लेकिन यह डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने और सामग्री निर्माण का विस्तार करने के निरंतर प्रयासों पर निर्भर करता है। भविष्य के विकास में ऑनलाइन उपलब्ध संथाली में अधिक शैक्षिक सामग्री, पुस्तकें और सांस्कृतिक संसाधन शामिल होने की उम्मीद है। जैसे-जैसे डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर होता है और समुदाय के अधिक सदस्य इंटरनेट तक पहुँचते हैं, वैसे-वैसे भाषा सीखने, संचार और सांस्कृतिक गौरव के लिए डिजिटल स्पेस तेजी से महत्त्वपूर्ण होता चला जाएगा।

मौजूदा चुनौतियों पर काबू पाने के लिए सरकारी संस्थाओं, तकनीकी कम्पनियों और संथाली समुदाय के बीच सहयोग महत्त्वपूर्ण है। डिजिटल पहुँच को बढ़ाकर और नई सामग्री बनाकर संथाली भाषा न केवल जीवित रह सकती है, बल्कि फल-फूल सकती है। इससे संथाल लोगों को दुनिया के तीव्र आधुनिकीकरण की दौड़ में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में सशक्त बनाया जा सकता है।

ग्लोबल मेडिकल टूरिज़्म
में बढ़ती आयुर्वेद की भूमिका

“मेरे प्यारे साथियो, आपने देखा होगा, हमारे आस-पास कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो आपदा में धैर्य नहीं खोते, बल्कि उससे सीखते हैं। ऐसी ही एक महिला हैं सुबाश्री, जिन्होंने अपने प्रयास से दुर्लभ और बहुत उपयोगी जड़ी-बूटियों का एक अद्भुत बगीचा तैयार किया है।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“आयुर्वेद एक प्रकृति-समर्थक चिकित्सा प्रणाली है। यह चिकित्सा प्रणाली रोग-केंद्रित होने के बजाय उपचार के समग्र, व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर जोर देती है। आयुर्वेद वर्षों के अवलोकन के बाद एकत्र की गई अनुकूल अनुभवात्मक शिक्षाओं से प्राप्त हुआ है। यह आधुनिक चिकित्सा प्रणाली से अलग है, जो अनुसंधान-आधारित साक्ष्य की कठोरता पर निर्भर है।”

–मनोरंजन साहू
पूर्व डीन, आयुर्वेद संकाय, आईएमएस, वाराणसी और पूर्व निदेशक, एआईआईए, नई दिल्ली

भारत की प्राचीन धरोहरों में से एक आयुर्वेद आज वैश्विक स्तर पर एक नए रूप में उभर रहा है। आयुर्वेद सिर्फ एक चिकित्सा पद्धति नहीं है, बल्कि जीवन का एक समग्र दृष्टिकोण है, जो शरीर, मन और आत्मा के सामंजस्य पर ज़ोर देता है। आयुर्वेदिक उपचारों की इस अनूठी प्रणाली ने न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान बना लिया है। इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है भारत का तेज़ी से उभरता ग्लोबल मेडिकल टूरिज़्म, जिसमें आयुर्वेद एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

आयुर्वेद की उत्पत्ति भारत में हज़ारों वर्ष पहले हुई थी। यह शरीर के तीन दोषों – वात, पित्त और कफ के संतुलन को महत्त्व देता है। वास्तव में इनका असंतुलन ही विभिन्न बीमारियों का कारण बनता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य शरीर में इस संतुलन को बहाल रखना और जीवनशैली में सुधार लाकर विभिन्न रोगों की रोकथाम करना है।

इस चिकित्सा पद्धति के तहत औषधीय जड़ी-बूटियों, पंचकर्म, योग, ध्यान और आहार सम्बंधी नियमों का उपयोग किया जाता है, जो शरीर की आंतरिक शुद्धि, मानसिक शांति और दीर्घायु को बढ़ावा देने के लिए जाने जाते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल शरीर को ठीक करता है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जो इसे एक सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति बनाता है।

वैश्विक चिकित्सा पर्यटन में आयुर्वेद की भूमिका

भारत आयुर्वेदिक चिकित्सा का जन्मस्थल माना जाता है। यही वजह है कि भारत आज वैश्विक चिकित्सा पर्यटन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बन रहा है। हर साल दुनिया भर से लाखों लोग भारत आते हैं, ताकि वे आयुर्वेदिक चिकित्सा के ज़रिए स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकें। इस प्रक्रिया को मेडिकल टूरिज़्म के रूप में जाना जाता है, जहाँ लोग अपने देश से बाहर जाकर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाते हैं।

आयुर्वेदिक चिकित्सा की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण यह है कि यह बिना किसी दुष्प्रभाव के उपचार प्रदान करती है। इसमें हृदय रोग, मधुमेह, मोटापा, अवसाद और त्वचा रोगों का प्राकृतिक उपचार किया जाता है। इसके साथ ही आयुर्वेदिक चिकित्सा न केवल बीमारी का इलाज करती है, बल्कि रोगों की रोकथाम और जीवनशैली में सुधार भी करती है, जो इसे वैश्विक चिकित्सा पर्यटन के लिए आदर्श बनाता है।

भारत में आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्र

भारत में कई प्रमुख आयुर्वेदिक चिकित्सा केंद्र और रिसॉर्ट्स हैं, जो उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करते हैं। केरल, गोवा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और उत्तराखंड जैसे राज्य आयुर्वेदिक चिकित्सा के बड़े केंद्र हैं। इन राज्यों में विदेशी पर्यटक, विशेष रूप से पंचकर्म, शरीर शुद्धि और योग-ध्यान सत्रों के लिए आते हैं। केरल तो विशेष रूप से ‘आयुर्वेद की भूमि’ के रूप में जाना जाता है, जहाँ पारम्परिक आयुर्वेदिक उपचार और चिकित्सीय प्रक्रियाएँ विदेशी पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं।

आयुर्वेदिक चिकित्सा सेवाओं

की उपलब्धता और कम लागत के कारण वर्तमान समय में भारत वैश्विक चिकित्सा पर्यटकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र बन चुका है।

वैश्विक स्वीकृति और चुनौतियाँ

आयुर्वेद की वैश्विक स्वीकृति तेजी से बढ़ रही है। कई पश्चिमी देश अब आयुर्वेदिक चिकित्सा को अपनी स्वास्थ्य प्रणाली में शामिल कर रहे हैं। अमरीका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में आयुर्वेदिक उत्पादों और उपचारों की माँग बढ़ रही है। इसके अलावा आयुर्वेदिक चिकित्सा पर आधारित कई अनुसंधान और वैज्ञानिक अध्ययन भी हो रहे हैं। यह इसकी प्रभावशीलता और लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आयुर्वेदिक चिकित्सा के व्यापक प्रसार के बावजूद कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती है मानकीकरण की कमी। विभिन्न चिकित्सा केंद्रों में गुणवत्ता और प्रक्रियाओं में अंतर होता है। इससे विदेशी पर्यटकों के लिए सही चिकित्सा केंद्र चुनना मुश्किल हो सकता है। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयुर्वेदिक उपचारों के वैज्ञानिक प्रमाणों को और भी मज़बूत करने की आवश्यकता है, ताकि इसे वैश्विक चिकित्सा प्रणाली में पूरी तरह से स्वीकार किया जा सके।

भारत की प्राचीनतम धरोहरों में से एक आयुर्वेद आज वैश्विक चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में भारत के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान कर रहा है। इसकी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियाँ बिना दुष्प्रभाव वाले उपचार और जीवनशैली में सुधार की दृष्टि दुनियाभर के लोगों को आकर्षित कर रही है। भारत अपनी आयुर्वेदिक धरोहर को सही दिशा में विकसित कर वैश्विक चिकित्सा पर्यटन का केंद्र बन सकता है। यह कहना उचित होगा कि भारत के अंदर आयुर्वेद के ज़रिए स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में एक वैश्विक नेता के तौर पर उभरकर सामने आने की सारी सम्भावनाएँ मौजूद हैं।

आयुर्वेद बन सकता है आधुनिक चिकित्सा का पूरक

मनोरंजन साहू
पूर्व डीन, आयुर्वेद संकाय, आईएमएस,
वाराणसी और पूर्व निदेशक,
एआईआईए, नई दिल्ली

लोगों के सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक गतिशीलता के विकास के साथ भारत में स्वास्थ्य सेवा की वर्तमान जरूरतें धीरे-धीरे संक्रामक बीमारियों से हटकर मधुमेह, कैंसर, हृदय सम्बंधी बीमारियों, उम्र से जुड़ी समस्याओं आदि जैसी गैर-संक्रामक और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों की ओर बढ़ रही हैं। स्वास्थ्य सेवा का भविष्य स्वास्थ्य के निवारक और सम्वर्धक पहलुओं पर अधिक केंद्रित होगा और योग के साथ आयुर्वेद इस लक्ष्य को हासिल करने में अहम भूमिका निभा सकता है यह स्वस्थ आहार और पोषण दिनचर्या और मौसमी प्रणाली (ऋतुचर्या) के अनुसार उचित व्यक्तिगत आचरण (विहार) तथा बाहरी और आंतरिक शुद्धि से जुड़े उपायों (पंचकर्म) के कार्यान्वयन पर जोर देता है।

आयुर्वेद एक प्रकृति-समर्थक चिकित्सा प्रणाली है। यह चिकित्सा प्रणाली रोग-केंद्रित होने के बजाय उपचार के समग्र, व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर जोर देती है। आयुर्वेद वर्षों के अवलोकन के बाद एकत्र की गई अनुकूल अनुभवात्मक शिक्षाओं से प्राप्त हुआ है। यह आधुनिक चिकित्सा प्रणाली से अलग है, जो अनुसंधान-आधारित साक्ष्य की कठोरता पर निर्भर है। हालाँकि आधुनिक चिकित्सा प्रणाली और आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों एवं तकनीकों का एकीकरण इस युग में आयुर्वेद के सिद्धांतों और प्रणालियों की स्वीकार्यता और प्रयोज्यता में सुधार कर सकता है।

ऐसे कई सफल उदाहरण हैं, जहाँ आयुर्वेद का समकालीन चिकित्सा विज्ञान के साथ एकीकरण अधिक प्रभावी

रहा है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में एनोरेक्टल रोगों का राष्ट्रीय संसाधन केंद्र ऐसा ही एक उदाहरण है। आयुष मंत्रालय के समर्थन से 2013 में स्थापित यह केंद्र अपनी तरह का अनूठा है, जो सुश्रुत के सिद्धांतों और प्रणालियों के आधार पर विभिन्न एनोरेक्टल रोगों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएँ प्रदान करता है। केंद्र ने आधुनिक तकनीकों और कई नैदानिक परीक्षणों के साथ एकीकरण करके जटिल गुदा फिस्टुला के प्रबंधन के लिए प्राचीन शल्य चिकित्सा तकनीक, क्षारसूत्र चिकित्सा को फिर से स्थापित और मान्य किया है। उपचार की इस अनूठी प्रकृति के कारण इस केंद्र को देश के किसी भी अन्य केंद्र की तुलना में सबसे अधिक रोगियों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त है। पुणे के वाघोली में स्थित एकीकृत कैंसर उपचार एवं अनुसंधान केंद्र एक और संगठन है जो पिछले दो दशकों से एकीकृत दृष्टिकोण से हजारों कैंसर रोगियों की सफलतापूर्वक देखभाल कर रहा है। केंद्र कैंसर के प्रबंधन के लिए आयुर्वेद उपचार के साथ-साथ सर्जरी, कैंसर कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी चिकित्सा जैसी सभी उन्नत सुविधाओं से सुसज्जित है। उनके एकीकृत दृष्टिकोण से कीमो और रेडियोथेरेपी के प्रतिकूल प्रभावों को कम करके कैंसर का उपचार अधिक प्रभावी हो गया है और घातक रूप से बीमार कैंसर रोगियों को भी बेहतर जीवन स्तर प्रदान करता है। इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड डर्मेटोलॉजी, केरल जैसे अन्य केंद्र हैं, जो एलिफेंटियासिस (फाइलेरिया के कारण अंगों की सूजन) और अन्य लिम्फेडेमा के प्रभावी प्रबंधन के लिए उपचार के एकीकृत मॉडल का उपयोग कर रहे हैं।

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के साथ एकीकरण के अलावा आयुर्वेद के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एकीकरण स्वास्थ्य सेवा में और सुधार कर सकता है। यह दवा वितरण प्रणाली में सुधार कर सकता है, दवाओं की शेल्फ-लाइफ बढ़ा सकता है और रोगियों के बीच आयुर्वेद दवाओं की स्वीकार्यता में सुधार कर सकता है। घाव के उपचार के क्षेत्र में आयुर्वेद संकाय और आईआईटी, बीएचयू का हाल ही में किया गया संयुक्त वैज्ञानिक कार्य इस सम्बंध में एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। पंचवल्कल (पाँच पौधों की छालों से बना मिश्रित सूत्रीकरण) आयुर्वेद में घाव प्रबंधन के लिए ताजे काढ़े के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली एक महत्त्वपूर्ण पारम्परिक औषधि है। टीम पंचवल्कल से बायोडिग्रेडेबल पॉलीमर आधारित ड्रेसिंग सामग्री विकसित करने में सफल रही है, ताकि घाव के स्थान पर दवा का असर लम्बे समय तक रहे। इसने ड्रेसिंग बदलने की आवृत्ति को भी कम कर दिया है। इसके फलस्वरूप रोगी को होने वाले दर्द और परेशानी में कमी होने से उन्हें राहत मिली है तथा ड्रेसिंग की लागत भी कम हुई है, साथ ही ऐसे उत्पादों से घाव भरने की प्रक्रिया घाव ड्रेसिंग की अन्य कई पारम्परिक प्रक्रिया की तुलना में बहुत तेज हो जाती है। इस तरह के नवाचारों को बढ़ावा देने से विदेशों से महँगी ड्रेसिंग सामग्री के आयात में भी कमी आ सकती है।

इसलिए समतापूर्ण, किफायती, उत्तरदायी और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आधुनिक विज्ञान और चिकित्सा के साथ आयुर्वेद का समुचित एकीकरण, अधिक सस्ता और कुल मिलाकर लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल से जुड़ी आवश्यकताओं को पूरा करने का सबसे अच्छा मॉडल होगा।

वेव्स चैलेंजेज़

रचनात्मकता और अवसरों का संगम

बीरेन घोष
अध्यक्ष, एबीएआई

मैंने राष्ट्रीय एवीजीसी टास्कफोर्स के भागीदार के रूप में कार्य किया है, जिसने पिछले कुछ वर्षों में उद्योग का रोडमैप लिखा और प्रचारित किया है। यह 4 मंत्रालयों, 2 व्यापार निकायों, 1 परामर्श समूह और शिक्षा, कौशल, खेल, उद्योग और नवाचार में कार्य समूहों के बीच वास्तव में सफल सहयोग का परिणाम था। इसका नतीजा, सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा संचालित राष्ट्रीय गतिशक्ति में प्रतिफलित हुआ।

भारत के एनिमेशन, विज़ुअल इफेक्ट्स, गेम्स और कॉमिक्स एक्सटेंडेड रियलिटी (एवीजीसी-एक्सआर) क्षेत्र को एक विविध और कुशल कार्यबल सशक्त बनाता है, जो तकनीकी विशेषज्ञता और रचनात्मकता को मिलाता है। भारत आज सूक्ष्म रचनात्मक कौशल के हमारे राष्ट्रीय सहयोग से प्रेरित होकर वैश्विक मंच पर अपने मनोरंजन कौशल को बढ़ाने के लिए तैयार है। हम भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस आह्वान से और भी प्रेरित हैं कि इसे भारत के लिए 'सॉफ्ट-पावर' बनाया जाए और उनका सहयोग वैश्विक पहल के रूप में 'क्रिएट इन इंडिया' की नई लॉन्च की गई थीम पर निर्माण को और भी गति प्रदान करता है। हम सभी इस बात से बेहद उत्साहित हैं कि सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा क्रिएट इन इंडिया मिशन को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के निर्णय को 2025 में आगामी वर्ल्ड ऑडियो विज़ुअल एंटरटेनमेंट समिट (वेव्स) में प्रदर्शित किया जाएगा। वेव्स एक बड़ा आयोजन है और वैश्विक मीडिया तथा मनोरंजन उद्योग को भारत में लाने के लिए पूरी तरह तैयार है। सरकार, उद्योग और शैक्षणिक समुदाय सभी ने मिलकर काम किया है और हम इस पहले संस्करण के लिए मंच तैयार करने की दिशा में काम कर रहे हैं। उद्योग और शिक्षा के बीच साझेदारी को बढ़ावा देना अभिनव अनुसंधान और विकास के लिए आवश्यक होगा, जो एवीजीसी-एक्सआर में सम्भव की सीमाओं को आगे बढ़ाएगा। 'क्रिएट इन इंडिया चैलेंज - सीजन 1' के अंतर्गत आने वाली चुनौतियाँ राष्ट्र निर्माण के भावी कार्यबल को प्रोत्साहित तथा सशक्त करेंगी और भारत में विश्वस्तरीय रचनात्मक पेशेवरों और विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए सर्वश्रेष्ठ में से सर्वोत्तम की पहचान करेंगी। गेमिंग, वीएफएक्स, एनिमेशन और कॉमिक्स से लेकर ब्रॉडकास्ट, रेडियो, जनरेटिव एआई और उससे आगे तक ये चुनौतियाँ इस अभियान को सफल बनाने के लिए जमीनी स्तर पर संगठित करेंगी। कम्पनियाँ और व्यापार संघ देश के सभी क्षेत्रों में वेव्स 2025 के लिए अंतर्निहित सन्देश फैलाने के लिए एक साथ आए हैं। इन चुनौतियों का उद्देश्य सामग्री निर्माण और प्रौद्योगिकी दोनों में विशिष्ट क्षेत्रों में प्रतिभा पूल बनाना है। इसके लिए नई प्रौद्योगिकियों को देखते हुए सामग्री सुरक्षा के लिए प्रबल सुरक्षा और सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है, जिसके लिए सीआईआई ने 'एंटी-पायरेसी चैलेंज' का बीड़ा उठाया है। इसके अंतर्गत प्रतिभागी उपकरण तथा प्रौद्योगिकी विकसित की जाएगी। वे पायरेसी से निपटने और रचनात्मक सामग्री तथा डिजिटल सम्पत्तियों की सुरक्षा के लिए पहल का प्रस्ताव देंगे। प्रत्येक चुनौती को विशेष रूप से देश के हर 'नुक्कड़ और कोने' में हजारों भारतीयों को संगठित करने के लिए क्यूरेट किया जाता है ताकि एवीजीसी-एक्सआर के हर पहलू को उजागर किया जा सके और उत्कृष्टता को 'शीर्ष पर पहुँचाया जा सके' तथा फाइनल के लिए 'विश्व मंच' पर वेव्स पर प्रस्तुत किया जा सके। एवीजीसी-

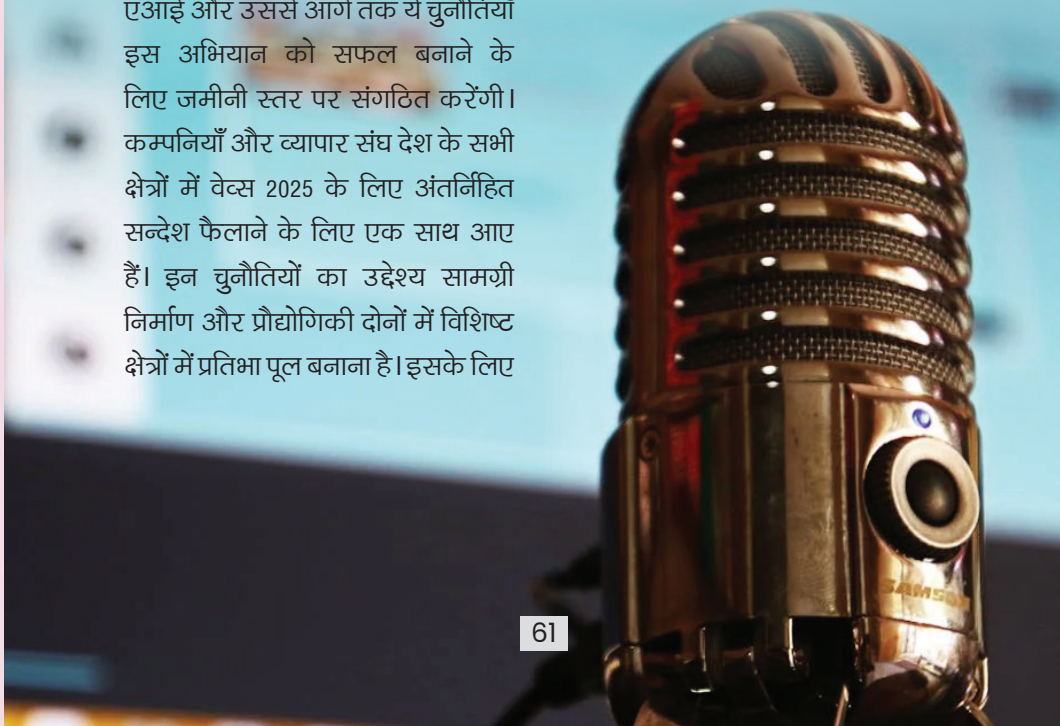

एक्सआर उद्योग के लिए कर्नाटक स्थित अग्रणी व्यापार संघ एबीएआई में हमने 'डब्ल्यूएएफएक्स चैलेंज' नामक एक राष्ट्रीय पहल शुरू की है इसमें सभी उभरते विजुअल इफेक्ट्स कलाकारों को शानदार वीएफएक्स मास्टरपीस बनाने के लिए 'कॉल टू एक्शन' के आधार पर सभी प्रेरित किया है। इसकी समापन थीम है– 'ए डेली लाइफ सुपर हीरो'। रचनात्मक क्षेत्र एक उल्लेखनीय परिवर्तन से गुजर रहा है, जिसमें तकनीकी प्रगति और अत्याधुनिक इमर्सिव सामग्री उपभोक्ता अनुभव को बढ़ा रही है। जैसे-जैसे हम इस नई अर्थव्यवस्था में प्रवेश कर रहे हैं, इमेजरी और स्टोरीटेलिंग टीवी तथा फिल्मों से आगे बढ़कर संग्रहालयों, हवाई अड्डों और सार्वजनिक स्थानों पर पहुँच रही है। इससे नवाचार को बढ़ावा मिलेगा और नई कौशल-आधारित प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। इससे 'भारत में और भारत से सृजन' के लिए विविध रोजगार अवसर उपलब्ध होंगे।

वेव्स एक गेम-चेंजर है : विकसित दुनिया एम एंड ई को अपने सकल घरेलू उत्पाद का 1-3 प्रतिशत मानती है। हमारे जैसे देश जहाँ कहानियों की में बहुलता हैं, हमारी सांस्कृतिक जीवंतता के साथ, भारत का एम एंड ई राजस्व हमारे सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 0.5 प्रतिशत है। इस अंतर को पाटने का समाधान हमारे बुनियादी वितरण ढाँचे को बढ़ाने में निहित है। इसके लिए यह सुनिश्चित करें कि हम किसी भी पायरेसी को रोककर अधिकार धारकों को लाभान्वित करें। दुनिया भर में बसे भारतीय मूल के लोगों के विशाल समूह का लाभ उठाकर और भारतीय मूल की कहानी फ्रेंचाइजी और यूनिवर्सेस का निर्माण करके दुनिया को उसी तरह 'आश्चर्यचकित' करें जैसे हॉलीवुड ने अतीत में किया है। ये वेव्स के लिए प्रमुख उद्देश्यों और प्राथमिकताओं में से एक हैं, जैसा कि हम हमेशा गतिशील वैश्विक एम एण्ड ई परिदृश्य में भारत की स्थिति को मजबूत करने के साथ-साथ एवीजीसी-एक्सआर व्यवसाय को भी देखते हैं, हम आशावाद से भरे हुए हैं कि वेव्स रचनात्मकता, नवाचार, व्यवसाय और वैश्विक स्तर पर प्रभाव को बढ़ाने में मदद करेगा।

यहाँ भारत को सम्बोधित करने के लिए चार क्षेत्र है।

- इस मुद्दे को सम्बोधित करें कि भारतीय क्रिएटिव और उद्यम, उत्पादन उपकरण, हार्डवेयर, भंडारण और रेंडर इत्यादि के लिए भारी लागत का भुगतान करते हैं।
- विदेशों (प्रारूपों) से खरीदे गए लाइसेंसिंग प्रारूपों के लिए शुल्क का भुगतान करना और फिर उन्हें भारतीय भाषाओं में बनाना ताकि जोखिम से बचा जा सके। (यह दूसरे तरीके से होना चाहिए– हमें प्रारूपों का निर्यात करना चाहिए)
- कहानियों की रचना करने और कहानी निर्माण के लिए तकनीकी उपकरण तथा सॉफ्टवेयर का आविष्कार करने में विचारों की सुरक्षा के लिए वित्त पोषण और सहायक तंत्र को सक्षम करके।
- चूँकि हम फिल्म बाजारों में भाग लेते हैं, फिल्म खंड भारत के एम एण्ड ई में केवल 9 प्रतिशत का योगदान देता है। हमें इसी तरह 'वेव्स इंटरनेशनल' पहल पर विचार करना चाहिए और गेम्स, एक्सआर, वीएफएक्स, एनिमेशन के कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए। इनमें से प्रत्येक मामले में, एक वेव्स पैवेलियन होना चाहिए, जो उन बाजारों में भारत/इंडिया पैवेलियन का पर्याय बन जाना चाहिए। इंडिया वेव्स इवेंट तभी प्रभावी रूप से, एनेसी (एनीमेशन), एफएमएक्स (वीएफएक्स), किडस्क्रीन, सीएमसी, व्यू कॉन्फ्रेंस (एनीमेशन), जीडीसी और गेम्सकॉन (गेम्स) और उससे आगे के साथ वैश्विक पारस्परिकता का निर्माण करता है...।

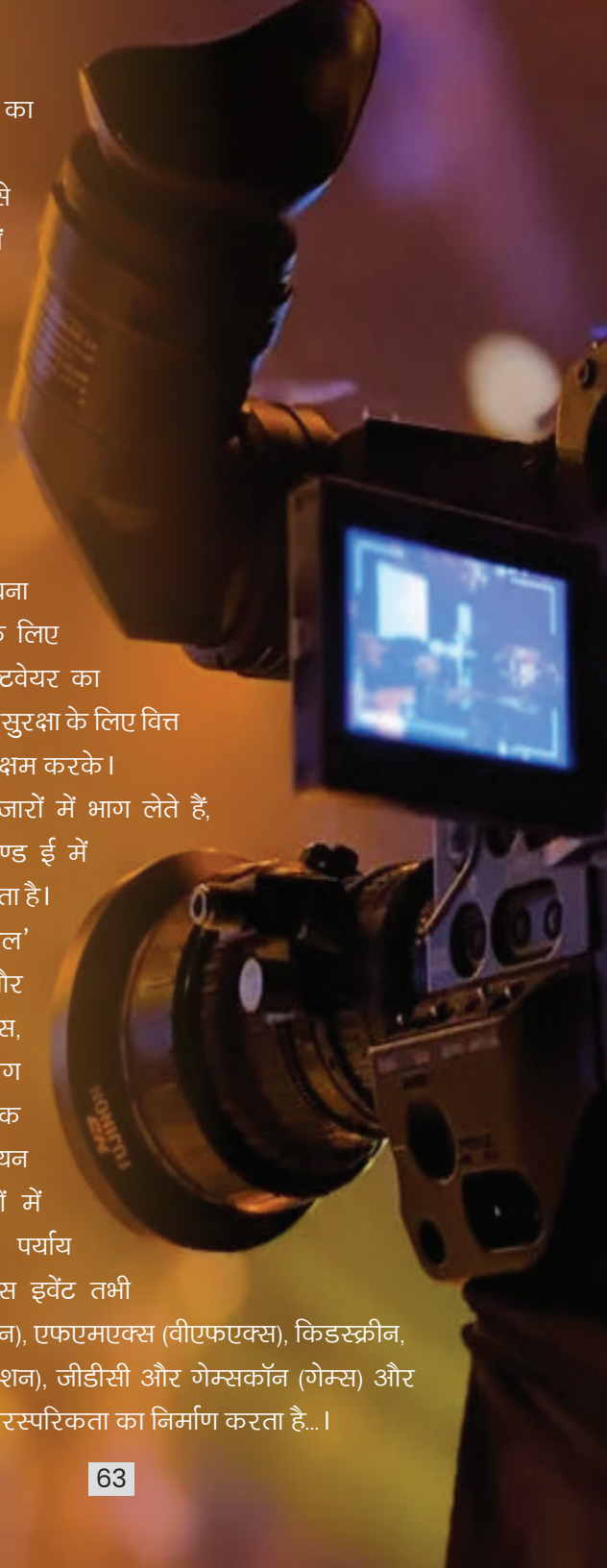

वेव्स

क्रिएटिव स्पेक्ट्रम में अवसर

भारत किफायती, उच्च-गुणवत्ता वाली सामग्री के विकास के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभर रहा है। वर्ल्ड ऑडियो विजुअल एंड एंटरटेनमेंट समिट (वेव्स) का उद्देश्य मीडिया और मनोरंजन उद्योग के भीतर चर्चा, सहयोग और नवाचार को बढ़ावा देना है। इससे भारत वैश्विक मंच पर आगे बढ़ सकेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वेव्स और 'क्रिएट इन इंडिया चैलेंज' के समर्थन के साथ, देश भर के क्रिएटर भारत की बढ़ती क्रिएटर अर्थव्यवस्था में योगदान करने के लिए प्रेरित हैं। इस उद्योग के दिग्गजों और एसोसिएशन के प्रमुखों ने भी प्रधानमंत्री मोदी के समर्थन के बारे में आशा व्यक्त की है।

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, 'मन की बात' सम्बोधन में

वेव्स चैलेंज भारत के इलेक्ट्रॉनिक उद्योग के लिए अपार सम्भावनाएँ प्रदान करते हैं, विशेष रूप से एआई, ई-स्पोर्ट्स और डिजिटल मीडिया में। अपने तेजी से बढ़ते गेमिंग बाजार के साथ, भारत एक वैश्विक अग्रणी बन रहा है। पात्रों को सक्रिय बनाने और उनकी तल्लीनता को बढ़ाने में एनिमेशन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। एवीजीसी उद्योग तेजी से विस्तार कर रहा है। 2026 तक इसके 6.8 बिलियन डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है। वेव्स ई-स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप (डब्ल्यूईएससी) 'क्रिएट इन इंडिया चैलेंज - सीजन 1' के तहत प्रमुख चुनौतियों में से एक है। क्रिएटर इकॉनमी में भारत में रोजगार के महत्त्वपूर्ण अवसर पैदा करने की क्षमता है। वेव्स जैसी पहल विभिन्न रणनीतियों के माध्यम से भारत में ई-स्पोर्ट्स के विकास में योगदान दे सकती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वेव्स का समर्थन देश के रचनात्मक समुदाय को प्रेरित और संगठित कर सकता है।

लोकेश सूजी
निदेशक- ईस्पोर्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, उपाध्यक्ष- एशियन इलेक्ट्रॉनिक स्पोर्ट्स फेडरेशन

वेव्स एक ऐसा मंच है, जिसका उद्देश्य भारत में रचनात्मकता को लोकतांत्रिक बनाना है। यह नागरिकों को संगीत, बोलियों और कथा वाचन जैसे विभिन्न रूपों में भाग लेने और अपनी प्रतिभा को दर्शाने का अवसर प्रदान करता है। स्थानीय रचनात्मकता की पहचान करके और उसे बढ़ावा देकर, वेव्स आर्थिक विकास और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में योगदान दे सकता है। इस पहल को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मान्यता मिली है, जो वैश्विक रचनात्मक समुदाय और निवेश के लिए भारत के खुलेपन का संकेत देता है। वेव्स भारतीय रचनाकारों के लिए वैश्विक मंच तक पहुँचने के लिए एक स्थानीय मंच के रूप में ठीक उसी तरह कार्य करता है, जैसे आईपीएल ने भारतीय क्रिकेट के लिए किया था।

ब्लेज जे फर्नांडीस
अध्यक्ष, भारतीय संगीत उद्योग

वेव्स चैलेंज छात्रों को उनकी शिक्षा के हिस्से के रूप में फिल्म निर्माण और अन्य रचनात्मक विषयों का पता लगाने के लिए प्रेरित करने के लिए डिजाइन किया गया है। हालाँकि भारत में अपार रचनात्मक प्रतिभाएँ हैं, लेकिन फिल्म निर्माण में औपचारिक शिक्षा अभी भी हाई स्कूल पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है। वेव्स न केवल छात्रों को क्रिएटिव प्रोजेक्ट करने के लिए प्रोत्साहित करेगा, बल्कि उन्हें मीडिया और मनोरंजन उद्योग के भीतर करियर के विभिन्न विकल्पों से भी परिचित कराएगा। रचनात्मक और प्रदर्शन कलाओं को मुख्यधारा में लाकर, ये चैलेंज छात्रों के दिमाग में मीडिया से जुड़े कौशल के महत्त्व को बढ़ाएँगे, जो भारत के 'क्रिएट इन इंडिया' मिशन के अनुसार होंगी। यह पहल देश की विशाल सांस्कृतिक विरासत को भी उजागर करती है, जो भारतीय रचनाकारों को इसे वैश्विक स्तर पर साझा करने के लिए सशक्त बनाती है।

चैतन्य चिंचलिकर
उपाध्यक्ष, व्हिसलिंग वुड्स इंटरनेशनल

आईएएमएआई तीन वेव्स चैलेंज : एआई आर्ट, रील मेकिंग और एक्सप्लोरर पर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के साथ साझेदारी कर रहा है। ये रचनाकारों और प्रौद्योगिकीविदों को अपनी रचनात्मकता को दर्शाने और भारत की 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' पहलों में योगदान देने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर ध्यान केंद्रित करने वाला वेव्स एक्सप्लोरर इन लक्ष्यों के साथ पूरी तरह से मेल खाता है। भारत में प्रतिभा विकास के लिए वेव्स जैसी सरकार समर्थित पहल महत्त्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अपने 'मन की बात' सम्बोधन में वेव्स का समर्थन करने से इस पहल को काफी बढ़ावा मिला है। प्रधानमंत्री मोदी ने रचनाकारों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित किया है और घरेलू प्रतिभा और नवाचार के केंद्र के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत किया है। वेव्स, मूल और गुणवत्तापूर्ण सामग्री के माध्यम से भारतीय संस्कृति और नवाचार की समृद्धि को प्रदर्शित करके भारत की रचनात्मक प्रतिभा को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने के लिए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अभियान पर जोर देता है।

डॉ. सुभो रे
अध्यक्ष- इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया

वेव्स चैलेंज एवीजीसी, प्रसारण और डिजिटल मीडिया में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के साथ ही सहयोग, प्रतिभा विकास और तकनीक अपनाने को भी बढ़ावा देते हैं। वे स्थानीय प्रतिभा को बढ़ावा देकर और वैश्विक निर्यात के अवसर पैदा करके मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत पहल का समर्थन करते हैं। वेव्स प्रतिभा को प्रदर्शित करने, कौशल विकास को प्रोत्साहित करने और यथासाध्य मॉडल को आगे बढ़ाने के लिए एक मंच प्रदान करता है। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा जिक्र होना इस पहल को प्रोत्साहित करता है साथ ही, राष्ट्रीय मान्यता, उद्यमशीलता और संस्थागत समर्थन को बढ़ाता है, जिससे भारत की रचनात्मक प्रतिभा को वैश्विक मंच पर स्थान मिलता है।

सिद्धार्थ जैन
महासचिव- इंडियन ब्रॉडकास्टिंग एंड डिजिटल फाउंडेशन

जन भागीदारी के 10 साल

मेक इन इंडिया
से बढ़ा सांस्कृतिक आत्मविश्वास

"मेरे प्यारे देशवासियो, इस महीने एक और महत्त्वपूर्ण अभियान के 10 साल पूरे हो रहे हैं। इस अभियान की सफलता में देश के बड़े उद्योगों के साथ-साथ छोटे दुकानदारों का भी योगदान है। मैं 'मेक इन इंडिया' की बात कर रहा हूँ। आज मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि इस अभियान से गरीब, मध्यम वर्ग और MSMEs को बहुत लाभ मिल रहा है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

"मेक इन इंडिया पहल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में 2014 में शुरू की गई थी पिछले एक दशक में इसने न केवल जीडीपी में वृद्धि की है और रोजगार को बढ़ावा दिया है, बल्कि देश को भी एक उभरती हुई वैश्विक विनिर्माण शक्ति के रूप में आगे बढ़ाया है। कपड़ा और इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर ऑटोमोबाइल, विमानन, अक्षय ऊर्जा और रक्षा तक भारत के विनिर्माण क्षेत्र आगे बढ़ गए हैं।"

–पंकज मोहिन्द्रू
अध्यक्ष, इंडिया सेलुलर एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन (आईसीईए)

जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, 'देश मेक इन इंडिया अभियान की सफलता की गाथा सुना रहा है,' हालाँकि, यह विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल से कहीं अधिक है। 2014 में शुरू किया गया 'मेक इन इंडिया' भारत की सांस्कृतिक विरासत का आईना है और वैश्विक मंच पर इसकी क्षमता की पुष्टि करता है। अभियान का उद्देश्य भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलना है, लेकिन इसके सांस्कृतिक निहितार्थ गहराई से प्रतिध्वनित होते हैं, जो भारतीय शिल्प कौशल, नवाचार और उद्यमिता में गर्व की नई भावना को बढ़ावा देते हैं।

पारम्परिक उद्योगों को पुनर्जीवित करना

'मेक इन इंडिया' अभियान का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पारम्परिक भारतीय उद्योगों को पुनर्जीवित करना और बढ़ावा देना है। कपड़े से लेकर मिट्टी के बर्तनों, हथकरघा से लेकर धातु के काम तक, इस अभियान ने कारीगरों और शिल्पकारों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इन पारम्परिक प्रथाओं को आधुनिक विनिर्माण तकनीकों के साथ एकीकृत करके 'मेक इन इंडिया' भारतीय संस्कृति के समृद्ध ताने-बाने का सम्मान करता है और साथ ही इसे आज की अर्थव्यवस्था में प्रासंगिक बनाता है। इससे न केवल रोजगार के अवसर पैदा होते हैं, बल्कि स्थानीय संस्कृतियों तथा शिल्पों को बनाए रखने और उन्हें पुनर्जीवित करने में भी मदद मिलती है, जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं।

नवाचार और उद्यमिता

यह अभियान नवाचार की भावना को बढ़ावा देता है, युवा उद्यमियों को अपनी रचनात्मकता और सांस्कृतिक विरासत को नए तथा रोमांचक तरीकों से इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करता है। स्वदेशी उत्पादों और संधारणीय प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले स्टार्टअप तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं, जो दर्शाता है कि सांस्कृतिक गौरव, आर्थिक विकास को कैसे गति दे सकता है। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, 'इस अभियान ने हर वर्ग के लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान किया है। आज भारत एक विनिर्माण महाशक्ति बन गया है और यह देश की युवा शक्ति की वजह से है कि पूरी दुनिया हमारी ओर देख रही है।' कम्पनियाँ अब पारम्परिक रूपांकनों से प्रेरित समकालीन डिजाइन बना रही हैं, जो विरासत को आधुनिक सौंदर्यशास्त्र के साथ मिलाते हैं। यह न केवल घरेलू उपभोक्ताओं को आकर्षित करता है, बल्कि प्रामाणिक भारतीय उत्पादों के लिए उत्सुक अंतरराष्ट्रीय बाजारों को भी आकर्षित करता है।

स्थानीय पहचान के साथ वैश्विक उपस्थिति

'मेक इन इंडिया' का उद्देश्य भारतीय उत्पादों के लिए एक मज़बूत वैश्विक उपस्थिति स्थापित करना भी है, जो 'वोकल फॉर लोकल' मंत्र की हिमायत करता है। यह अभियान उपभोक्ताओं को स्थानीय ब्रांड्स का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जो अक्सर सांस्कृतिक महत्त्व से ओत-प्रोत होते हैं। स्थानीय वस्तुओं को बढ़ावा देकर यह अभियान समुदाय और पहचान की भावना को बढ़ावा देता है, इस विचार को पुष्ट करता है कि प्रत्येक खरीद सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में योगदान देती है। जब उपभोक्ता भारतीय निर्मित उत्पाद खरीदते हैं, तो वे केवल खरीदारी नहीं कर रहे होते हैं, वे राष्ट्रीय गौरव और पहचान के गुणगान में भाग ले रहे होते हैं। जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने उल्लेख किया है, '50 से अधिक स्वयं सहायता समूह 'भंडारा टसर सिल्क' को संरक्षित करने के लिए काम कर रहे हैं। इसमें महिलाओं की बड़ी भागीदारी है। यह रेशम तेजी से लोकप्रिय हो रहा है और स्थानीय समुदायों को सशक्त बना रहा है और यही 'मेक इन इंडिया' अभियान की भावना है।'

सांस्कृतिक कूटनीति

इसके अलावा 'मेक इन इंडिया' अभियान सांस्कृतिक कूटनीति के लिए एक संसाधन के रूप में कार्य करता है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेलों और एक्सपो में भारतीय शिल्प कौशल और नवाचार का प्रदर्शन करके यह पहल भारत को अपनी सांस्कृतिक समृद्धि को दुनिया के

सामने पेश करने का मौका देती है। यह भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाता है, इसे एक ऐसे राष्ट्र के रूप में स्थापित करता है, जो अपनी विरासत को महत्त्व देता है, साथ ही आगे की सोच रखने वाला और गतिशील भी है। 'भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला' जैसे आयोजन कारीगरों के लिए वैश्विक दर्शकों से जुड़ने, अपनी उपलब्धियों और कौशल को साझा करने का मंच बन गए हैं।

शैक्षिक पहल

यह अभियान शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के महत्त्व पर भी जोर देता है, जो निर्माताओं और उद्यमियों की अगली पीढ़ी के पोषण के लिए महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न पहलों का उद्देश्य युवाओं को पारम्परिक कला, शिल्प और विनिर्माण प्रक्रियाओं के बारे में शिक्षित करना है, जिससे उनकी सांस्कृतिक जड़ों में गर्व की भावना पैदा होती है। यह शिक्षा न केवल कौशल विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि युवाओं को अपनी सांस्कृतिक विरासत के ढाँचे के भीतर नवाचार के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे अतीत और भविष्य के बीच एक पुल बनता है।

निष्कर्ष के रूप में, 'मेक इन इंडिया' अभियान एक बहुआयामी पहल है, जो आर्थिक लक्ष्यों से परे है। यह सांस्कृतिक विरासत का प्रचार करता है, पारम्परिक उद्योगों को पुनर्जीवित करता है और नवाचार तथा उद्यमिता का आह्वान करता है। इस विरासत को आधुनिक विनिर्माण के साथ जोड़कर, 'मेक इन इंडिया' राष्ट्रीय पहचान की भावना को बढ़ावा देता है, स्थानीय उद्योगों के लिए सामुदायिक सहयोग को प्रोत्साहित करता है और भारत की वैश्विक उपस्थिति को बढ़ाता है। जैसे-जैसे भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपना रास्ता बना रहा है, 'मेक इन इंडिया' अभियान में निहित सांस्कृतिक सार भविष्य के लिए इसकी कहानी को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मेक इन इंडिया विनिर्माण क्षेत्र का पुनरुत्थान काल

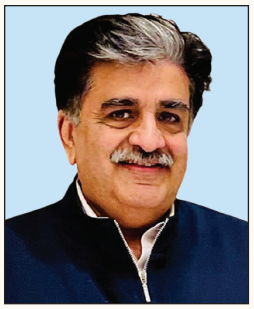

पंकज मोहिन्द्रू
अध्यक्ष, इंडिया सेलुलर एंड
इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन (आईसीईए)

"लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती"

–हरिवंश राय बच्चन

भारत की आर्थिक यात्रा महत्त्वाकांक्षा, लचीलेपन और परिवर्तन से परिपूर्ण रही है। 1991 में अर्थव्यवस्था को अत्यधिक विनियमन की बैसाखी से उदार बनाने के बाद हम आईटी और आईटीईएस सेवाओं के माध्यम से विश्व में अग्रणी बनकर उभरे हैं। हालाँकि हमने विनिर्माण में एक महत्त्वपूर्ण अवसर खो दिया, जबकि यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसने अपार रोजगार के अवसर पैदा किए हैं और कई प्रतिस्पर्धी देशों को महत्त्वपूर्ण आर्थिक समृद्धि की ओर अग्रसर किया है।

'मेक इन इंडिया' पहल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में 2014 में शुरू की गई थी। इसने राजसी बंगाल टाइगर के प्रतीक के रूप में वैश्विक मंच पर भारत के नेतृत्व और नवाचार की तत्परता की घोषणा की। पिछले एक दशक में इसने न केवल जीडीपी में वृद्धि की है और रोजगार को बढ़ावा दिया है, बल्कि देश को भी एक उभरती हुई वैश्विक विनिर्माण शक्ति के रूप में आगे बढ़ाया है। कपड़ा और इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर ऑटोमोबाइल, विमानन, अक्षय ऊर्जा और रक्षा तक भारत के विनिर्माण क्षेत्र आगे बढ़ गए हैं। मेक इन इंडिया को जो चीज अद्वितीय बनाती है, वह है हमारा लोकतांत्रिक ढाँचा, जो पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करता है।

हमारा युवा और गतिशील कार्यबल एक महत्त्वपूर्ण जनसांख्यिकीय लाभांश प्रदान करता है। 2024-25 में 6.5-7 प्रतिशत के बीच अनुमानित जीडीपी वृद्धि के साथ, भारत के मजबूत संवैधानिक मूल्य और स्थिर राजनीतिक नीति तथा कानूनी प्रणालियाँ अनुकूल व्यावसायिक वातावरण प्रदान करती हैं। 14 प्रमुख उद्योगों में शानदार पीएलआई योजना के जरिए मिले प्रोत्साहन ने भारत को एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में स्थापित करने, परिवर्तनशीलता दिखाने और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (जीवीसी) में एकीकृत करने में मदद की है। सतत आर्थिक विकास के लिए वैश्विक बाजार एकीकरण आवश्यक है। वैश्विक व्यापार का लगभग 70 प्रतिशत वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं से जुड़ा हुआ है, जहां विभिन्न देशों में उत्पादन के विभिन्न चरण स्थित हैं। मोबाइल फोन और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में यह आँकड़ा और भी अधिक है तथा लगभग सभी व्यापार जीवीसी से जुड़े हैं। इसे पहचानते हुए, भारत ने अपने उद्योगों को इन वैश्विक नेटवर्क में एकीकृत करने, दक्षता बढ़ाने, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और बाजार पहुँच के लिए ठोस प्रयास किए हैं। भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग को काफी लाभ हुआ है, विनिर्माण 2023-24 में 5 गुना बढ़कर 9,52,000 करोड़ रुपये का हो गया है, जो मुख्य रूप से मोबाइल फोन द्वारा संचालित है। निर्यात में भी तेजी देखी गई है, इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 2023-24 में बढ़कर 2,41,157 करोड़ रुपये का हो गया है और मोबाइल फोन निर्यात 1,29,000 करोड़ रुपये तक पहुँच गया है। यह एक उल्लेखनीय परिवर्तन को दर्शाता है, जो वैश्विक बाजार में भारत की बढ़ती प्रमुखता को रेखांकित करता है। यह क्षेत्र अब लगभग 15 लाख लोगों को सीधे और लगभग 60 लाख लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार देता है। घरेलू ऑटो-कम्पोनेंट उद्योग भी वैश्विक स्तर पर पार्ट्स और कम्पोनेंट की आपूर्ति करके विस्तार करने में सक्षम रहा है। इसने लगभग 10 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 74.1 बिलियन अमरीकी डॉलर का उच्चतम कारोबार और 21.2 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक का निर्यात किया है। व्यापार सुगमता के लिए विनियमनों को कम करके, एकल-खिड़की मंजूरी को बढ़ावा देकर और न्यूनतम प्रक्रियाओं

जैसी पहलों के साथ माननीय प्रधानमंत्री द्वारा स्वयं के नेतृत्व में गहन विश्वव्यापी आउटरीच से प्रोत्साहित कम्पनियों ने भारत में कुछ सबसे बड़ी फैक्ट्रियाँ बनाई हैं, जिनमें बड़ी संख्या में श्रमिक कार्यरत हैं। ये उपलब्धियाँ अनुकूल नीतिगत माहौल से उपजी हैं, जो 'सम्पूर्ण सरकार' दृष्टिकोण और उद्योग तथा प्रमुख सरकारी मंत्रालयों के बीच घनिष्ठ सहयोग से सम्भव हुआ है। प्रधानमंत्री ने विकसित भारत का एक महत्त्वाकांक्षी दृष्टिकोण रखा है। ये 2047 तक भारत को 'विकसित अर्थव्यवस्था' बनाने के बारे में है, जिसमें विनिर्माण उद्योग बहुत महत्त्व रखता है, जो सकल घरेलू उत्पाद में 25 प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है। भारत का ध्यान अब जीवीसी के साथ गहराई से एकीकृत होने, बड़े पैमाने पर विनिर्माण इकाइयाँ स्थापित करने और निर्यात पर प्रमुखता से जोर देते हुए घरेलू मूल्य संवर्धन बढ़ाने पर है। इसके लिए आर्थिक समृद्धि, तकनीकी उन्नति और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए सभी स्तरों पर नीतियों और पहलों को सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता है। अपनी वैश्विक तकनीकी स्थिति को ऊपर उठाने के लिए हमें नवाचार और डिजाइन को एकीकृत करके मेक इन इंडिया को और आगे बढ़ाना होगा– असेंबलिंग से आगे बढ़कर अत्याधुनिक उत्पाद विकास और बौद्धिक सम्पदा निर्माण का केंद्र बनना होगा। केवल विनिर्माण पर्याप्त नहीं है, अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देकर हम वैश्विक बाजार में अपने मूल्य प्रस्ताव को बढ़ा सकते हैं। 'मेक एंड डिजाइन इन इंडिया' को बढ़ावा देकर हमारा लक्ष्य मजबूत हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना है। उत्पाद डिजाइन में क्रांति लाने और अभिनव व्यवसाय मॉडल बनाने के लिए एआई, मशीन लर्निंग और ब्लॉकचेन जैसी उन्नत तकनीकों का लाभ उठाना है। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की पहल को हमारा मार्गदर्शक बनना चाहिए, क्योंकि हम आगे बढ़ते हैं और भारत की विनिर्माण क्षमता को ऐसी ऊँचाइयों तक ले जाते हैं। तो हम न केवल अपने भाग्य को, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के भविष्य को भी आकार देते हैं।

एक पेड़ माँ के नाम

के.एन. राजसेखर
तेलंगाना

"जब हमारे दृढ़ संकल्प और सामूहिक भागीदारी का संगम होता है, तो इससे पूरे समाज के लिए अद्भुत परिणाम सामने आते हैं। इसका सबसे हालिया उदाहरण 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान है। यह एक अद्भुत अभियान है। जनभागीदारी का ऐसा उदाहरण वाकई प्रेरणादायक है..."

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'मन की बात' सम्बोधन में

ऐसी ही एक प्रेरणा भद्राद्री कोठागुडेम जिले के प्रकृति प्रेमी के.एन. राजसेखर हैं, जिन्होंने 'पंद्रह दिवसीय वृक्षारोपण गतिविधि' शुरू की, जिसमें 1,500 से अधिक पौधे लगाए गए।

प्रतिदिन एक पेड़ लगाने के पीछे की प्रेरणा और अभियान में समुदाय की भागीदारी तथा सहयोग के बारे में केएन राजशेखर के साथ साक्षात्कारः

आपको प्रतिदिन पेड़ लगाने की प्रेरणा कहाँ से मिली और अभियान का विचार कैसे आया?

मेरा नाम कोट्टुरी नूरवी राजशेखर है। कई लोग मुझे मोक्काला राजशेखर कहते हैं। मैं कोठागुडेम (तेलंगाना) में सिंगरेनी सेंट्रल वर्कशॉप में फिटर के तौर पर काम कर रहा हूँ। प्रकृति प्रेमी बनने की मेरी पहली प्रेरणा मेरे पिता के. पांडु थे। 1980 के दशक में जब मैं 11 साल का था, तब मेरे पिता ने मुझे पौधों के लाभ के बारे में बताया और इसी से मुझे पौधारोपण करने की प्रेरणा मिली। मेरे पिता द्वारा लगाए गए कुछ पेड़ बड़े हो गए हैं और मुझे फल दे रहे हैं। मैं सभी को बताना चाहता हूँ कि अब लगाए गए पेड़ भविष्य में हम सभी को

लाभान्वित करेंगे।

1,500 से अधिक पौधे लगाना एक असाधारण उपलब्धि है। इस प्रतिबद्धता को बनाए रखने में आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

जब मैंने पौधारोपण का काम शुरू किया, तो कई लोगों ने मुझे अपमानित किया। यह तब भी जारी रहा, जब मैं पौधों के साथ बाइक से यात्रा करता था। वे मुझसे पूछते थे कि तुम हर दिन पौधारोपण क्यों कर रहे हो? लेकिन, मुझे कभी भी उनके शब्दों का बुरा नहीं लगा, क्योंकि मैं यह गतिविधि प्रकृति के लिए करता रहा हूँ। मैं हमेशा चाहता था कि मेरे अच्छे इरादे उन लोगों को पता चलें, जो मुझे अपमानित कर रहे थे। मेरी यह चाहत तब पूरी हुई, जब माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 114वें मन की बात में मेरा नाम लिया। अब वे सभी लोग, जो मुझे अपमानित करते थे, मेरी सराहना कर रहे हैं और वे स्वयं भी वृक्षारोपण गतिविधि में आगे आ रहे हैं।

एक दुर्घटना का सामना करने के बाद भी आपने अपना अभियान जारी रखा। ऐसे कठिन समय में भी आप कैसे प्रेरित रहे?

1563 दिनों की वृक्षारोपण गतिविधि के दौरान मैंने कई बाधाओं का सामना किया है। एक सड़क दुर्घटना के कारण मेरे पेट में चोट लग गई और इस दौरान मेरे परिवार के सदस्य भी बीमार हो गए। मुझे आर्थिक कठिनाइयों का सामना

करना पड़ा। इन सबके बावजूद मैंने अपने प्रकृति प्रेमी परिवार के सदस्यों और दोस्तों की मदद से वृक्षारोपण गतिविधि जारी रखी। मैंने पौधे लगाते समय सेल्फी और वीडियो भी लिए।

आपकी राय में, पर्यावरण संरक्षण में व्यक्तिगत रूप से और अधिक योगदान कैसे दिया जा सकता है?

पर्यावरण संरक्षण में रुचि रखने वाला हर व्यक्ति पौधे लगा रहा है। चाहे वह प्रकृति प्रेमी हो या कोई भी। पौधे लगाना अच्छा है, क्योंकि पौधा ही है, जो हमें ऑक्सीजन देता है, फल तथा सब्जियाँ देता है, छाया देता है और हमें हर्बल दवाइयाँ देता है। यह मिट्टी के कटाव को भी रोकता है और बारिश लाता है। इसलिए सभी को वृक्षारोपण को एक आंदोलन की तरह अपनाना चाहिए और मुझे प्रकृति को बचाने में खुशी होती है।

मन की बात कार्यक्रम में प्रेरक पहल के साथ शामिल होने पर आपको कैसा लगा?

माननीय प्रधानमंत्री ने 'प्रकृति की सेवा' और मेरे प्रयासों की प्रशंसा की है। उन्होंने मन की बात के 114वें एपिसोड में मेरा उल्लेख किया है। यह एक यादगार दिन है। मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि उन्होंने मेरा नाम लिया। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री द्वारा मेरा नाम लिए जाने पर मेरी पत्नी, मेरी बेटी, मेरे रिश्तेदारों, सिंगरेनी के कर्मचारियों और सभी प्रकृति प्रेमियों ने मुझे बधाई दी। उन्होंने पूरी दुनिया को मेरे प्रयासों से अवगत कराया है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

आपकी राय में पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक पहलों में लोगों को शामिल करने के लिए प्रेरित करने में 'मन की बात' की क्या भूमिका है?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक ऐसा अनूठा कार्यक्रम शुरू किया है, जो किसी अन्य प्रधानमंत्री ने नहीं किया। 'मन की बात' बहुत लाभकारी है, क्योंकि यह सरकार की कई योजनाओं को लोगों तक पहुँचा रहा है। इतना ही नहीं, समाज में विशेष योगदान देने वाले लोगों, चाहे वे शीर्ष पदों पर बैठे हों या गरीब हों, को मन की बात के माध्यम से सुर्खियों में लाया गया। इससे लोग प्रेरित हो रहे हैं। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने समाज के लिए स्वच्छ भारत, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आदि जैसे कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। उन्होंने लोगों को किफायती कीमत पर गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने के लिए 'आयुष्मान भारत' की शुरुआत की। उन्होंने कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। इनके परिणामस्वरूप लोगों को लाभ मिल रहा है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

K.Annamalai
@annamalai_k

On behalf of @BJP4TamilNadu, we thank our Hon PM Thiru @narendramodi avl for appreciating the noble efforts of Smt Subashree avl of Madurai through #MannKiBaat today. She had been growing medicinal herbs and helping hundreds of people with remedies for their ailments.

Heartiest wishes to Smt Subashree avl.

Chief Minister, MP
@CMMadhyaPradesh

हर क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छूता मध्यप्रदेश
जल संरक्षण की दिशा में भी प्रयास हो रहे विशेष

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने #MannKiBaat के 114वें एपिसोड में #मध्यप्रदेश में #जल_संरक्षण को लेकर किए जा रहे विशेष प्रयासों और #एक_पेड़_माँ_के_नाम अभियान में देश के हृदय प्रदेश की सशक्त भागीदारी की सराहना की है...

@PMOIndia
@DrMohanYadav51
#DrMohanYadav #CMMadhyaPradesh #MadhyaPradesh

Translate post

Ganesh Shankar Mishra, IAS Retd.
@gsmishraCG

खादी ग्रामोद्योग लगातार नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है!

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने #MannKiBaat कार्यक्रम के दौरान स्वदेशी अपनाने की अपील की थी, जिसके परिणामस्वरूप #GandhiJayanti के दिन नई दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित खादी भवन में सिर्फ एक दिन में 2 करोड़ रुपये से अधिक के खादी उत्पाद बिके।

Translate post

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने आज 'मन की बात' कार्यक्रम में संथाली भाषा का उल्लेख किया। यह हमारे जनजातीय समुदायों की भाषा है और झारखंड, ओड़िशा, बंगाल समेत कई राज्यों में बोली जाती है।

Digital India के माध्यम से संथाली भाषा और संथाली साहित्य को लोकप्रिय बनाने एवं जन-जन तक पहुंचाने के लिए मयूरभंज, ओडिशा के रामजीत टुडू का कार्य हर किसी के लिए प्रेरणादाई है। उनके अभूतपूर्व कार्य की बदौलत आज लाखों लोग संथाली साहित्य से जुड़ रहे हैं। उनके प्रयासों को देशवासियों के समक्ष सराहना करने के लिए प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ। मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत सरकार भी अनेक पहल कर रही है। आइए, हम सभी देशवासी मिलकर देश की महान संस्कृति को संजोए रखने वाली सभी मातृभाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी बहुमूल्य सहभागिता सुनिश्चित करें।

#MannKiBaat

Translate post

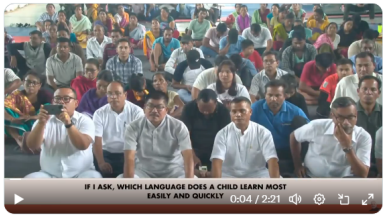

Dr Dinesh Sharma BJP
@drdineshbjp

अमेरिका की मेरी यात्रा के दौरान, अमेरिकी सरकार ने भारत की करीब 300 प्राचीन कलाकृतियां वापस लौटाईं।

लौटाई गईं कलाकृतियां Terracotta, Stone, हाथी के दांत, तकड़ी, तांबा और कांसे जैसी चीजों से बनी हुई हैं। इनमें से कई तो चार हजार साल पुरानी हैं।

मुझे इस बात की बहुत खुशी है, पिछले एक दशक में ऐसी कई कलाकृतियों और प्राचीन धरोहरों की घर वापसी हुई है।

- पीएम श्री नरेंद्र मोदी

@narendramodi @JPNadda @AmitShah @blsanthosh @myogiadityanath @idharampalsingh @pmoindia @BJP4India @BJP4UP #MannKiBaat

Translate post

Kiren Rijiju
@KirenRijiju

जब हमारे दृढ़ संकल्प के साथ सामूहिक भागीदारी का संगम होता है तो पूरे समाज के लिए अद्भुत नतीजे सामने आते हैं। इसका सबसे ताज़ा उदाहरण है 'एक पेड़ मां के नाम': माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate post

12:31 PM · Sep 29, 2024 · **2,137** Views

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

Create in India - A wonderful opportunity for the creators - Hon PM Shri @narendramodi Ji

#MannKiBaat

@PMOIndia @MIB_India

12:11 PM · Sep 29, 2024 · **5,194** Views

Jagat Prakash Nadda
@JPNadda

आज दिल्ली स्थित महिपालपुर में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के #MannKiBaat कार्यक्रम के 114वें संस्करण को भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ सुना।

मोदी जी ने इस अवसर पर जल संरक्षण, भाषाओं के संवर्धन, स्वच्छता, समाज निर्माण में मीडिया की भूमिका, देशभर में विभिन्न लोगों के द्वारा किए जा रहे सकारात्मक प्रयासों आदि के संदर्भ में विस्तृत चर्चा की।

इस कार्यक्रम के 10वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। प्रधानमंत्री जी का यह आत्मीय संवाद देशभर में बड़े परिवर्तनों की पहल बना है। सामाजिक-आर्थिक विमर्श हो या रूपांतरणकारी प्रयास 'मन की बात' के प्रोत्साहन से राष्ट्रव्यापी हुए हैं।

Translate post

2:37 PM · Sep 29, 2024 · **9,316** Views

Devendra Fadnavis
@Dev_Fadnavis

मा. पंतप्रधान नरेंद्र मोदीजींकडून 'भंडारा टसर सिल्क' या वस्त्रोद्योगातील पुरातन परंपरेचा आवर्जून उल्लेख, स्थानिक महिलांना रोजगार देणारी ही परंपरा 'व्होकल फॉर लोकल' तसेच #MyProductMyPride चे उत्तम उदाहरण असल्याचं सांगत मा. पंतप्रधानांकडून गौरव.

(मन की बात | 29-9-2024)
@narendramodi @mannkibaat
#MannKiBaat #VocalforLocal

Translate post

Pankaj Mohindroo
@PankajMohindroo

ICEA ANSWERS HON'BLE PRIME MINISTER'S CALL FOR CREATING IN INDIA

In association with the @MIB_India, @ICEA_India is pleased to organize the "TruthTell Hackathon" to create technological solutions that can help tackle the growing problem of fake news.

Under the 'Create in India Challenge' in the run-up to the World Audio Visual and Entertainment Summit (WAVES) Summit 2025, this Hackathon aims to utilize the potential of Artificial Intelligence (AI) to empower broadcasters to deliver reliable information to the masses and enable viewers to know fact from fiction.

Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi Ji also invited people to join this challenge through his latest "#MannkiBaat" on 29th September 2024.

Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank
@DrRPNishank

आज केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में अध्यापकों, विद्यार्थियों व स्थानीय जनों के साथ आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' को सुनते हुए।

'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी जी ने आम नागरिकों के साथ संवाद स्थापित कर राष्ट्र निर्माण में उन्हें भागीदार बनाया है। 'मन की बात' कार्यक्रम सदैव हम सभी को राष्ट्रहित में अपने कर्तव्यों के निर्वहन की प्रेरणा देता है।

Translate post

Shashi Shekhar Vempati शशि शेखर @shashidigital · Sep 29

While Nehru's Discovery of India was a look to the past with a perspective that was frozen in time, PM @narendramodi's Mann Ki Baat in contrast is a dynamic evolving perspective on India that looks to the Future drawing inspiration from the past making it a distinctive Prime

Show more

> **PMO India** @PMOIndia · Sep 29
> Today's #MannKiBaat is special as it marks the completion of ten years of this iconic programme. Do tune in at 11 AM today!
>
>
>

Yogi Adityanath
@myogiadityanath

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी द्वारा आज @mannkibaat कार्यक्रम में जनपद झाँसी के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं द्वारा 'जल सहेली' बनकर मृतप्राय घुरारी नदी के संरक्षण और पुनर्जीवन के प्रयासों का उल्लेख, पूरे उत्तर प्रदेश के लिए गर्व का विषय है। निश्चित ही इससे जल संरक्षण के कार्यों को नई ऊर्जा प्राप्त होगी।

सैकड़ों जलाशयों के निर्माण में सहयोग कर महिला सशक्तिकरण की अद्भुत प्रतीक बनीं इन 'जल सहेली' महिलाओं ने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए जल संरक्षण एवं संवर्धन का एक बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत किया है।

जल संरक्षण के लिए प्रेरणा बनीं मातृशक्ति का हार्दिक अभिनंदन एवं प्रधानमंत्री जी का आभार।

Translate post

1:27 PM · Sep 29, 2024 · **37.4K** Views

Swachh Bharat Urban @SwachhBharatGov

PM Modi, in #MannKiBaat, shared the inspiring story of Subramanian Ji from Kerala, who has given a new life to over 23,000 chairs. His efforts reflect the powerful mantra of 'Reduce, Reuse, Recycle.' #SwachhBharatMission #SwachhataHiSeva2024

Swatantra Dev Singh @swatantrabjp

जल संरक्षण में जल संकट का समाधान...

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के उत्साहवर्धन से देश और प्रदेश में जल संचयन के कार्य में जनभागीदारी बढ़ती जा रही है। झांसी, उत्तर प्रदेश की ऐसी ही एक प्रेरणादायक कहानी का उल्लेख आज मोदी जी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में किया।

Translate post

Prof.Subash Nayak @ProfSubashNayak

#ଏବେ_ମୋଦୀଙ୍କ_ଭାଷଣରେ_ମଧ୍ୟ_ସାନ୍ତାଳୀ_ଭାଷା
ସାନ୍ତାଳୀ ଭାଷାକୁ ଡିଜିଟାଲ ପ୍ଲାଟଫର୍ମ ଦେଇ ଚର୍ଚ୍ଚାରେ ମୟୂରଭଞ୍ଜର ରାମଜିତ ଟୁଡୁ, 'ମନ କି ବାତ'ରେ ପ୍ରଶଂସା କଲେ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ । 10 ବର୍ଷ ପୂରଣ କରିଲେ ପ୍ରୟାସ ।
#Ramjeet_Tudu #Santhali_Language #PMModi #Maankibaat 🙏
@PMOIndia 🙏

Translate post

Col Rajyavardhan Rathore @Ra_THORe

जब हमारे दृढ़ संकल्प के साथ सामूहिक भागीदारी का संगम होता है तो पूरे समाज के लिए अद्भुत नतीजे सामने आते हैं। इसका सबसे ताजा उदाहरण है #एक_पेड़_मां_के_नाम

ये अभियान अद्भुत अभियान रहा, जन-भागीदारी का ऐसा उदाहरण वाकई बहुत प्रेरित करने वाला है। राजस्थान में केवल अगस्त महीने में ही 6 करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए हैं।

-आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat #10YearsOfMannKiBaat

Translate post

Jyotiraditya M. Scindia @JM_Scindia

"'मन की बात' की हमारी इस यात्रा को 10 साल हो रहे हैं। 10 साल पहले 'मन की बात' का प्रारंभ 3 अक्टूबर को विजयादशमी के दिन हुआ था और ये कितना पवित्र संयोग है, कि इस साल 3 अक्टूबर को जब 'मन की बात' के 10 वर्ष पूरे होंगे, तब नवरात्रि का पहला दिन होगा। 'मन की बात' की ये पूरी प्रक्रिया मेरे लिए ऐसी है, जैसे मंदिर जा करके ईश्वर के दर्शन करना।

'मन की बात' की हर बात को, हर घटना को, हर चिट्ठी को मैं याद करता हूं, तो ऐसे लगता है जैसे मैं ईश्वर रूपी जनता जनार्दन के दर्शन कर रहा हूं।" - माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate post

Swatantra Dev Singh @swatantrabjp

जल संरक्षण में जल संकट का समाधान...

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के उत्साहवर्धन से देश और प्रदेश में जल संचयन के कार्य में जनभागीदारी बढ़ती जा रही है। झांसी, उत्तर प्रदेश की ऐसी ही एक प्रेरणादायक कहानी का उल्लेख आज मोदी जी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में किया।

Translate post

मन की बात | 3 अक्टूबर को 10 साल पूरे हो रहे हैं

साबित हुआ लोग पॉजिटिव स्टोरी पसंद करते हैं: मोदी

महिलाओं की तीन स्टोरी बताईं

पानी की किल्लत वाले झांसी में महिलाओं ने नदी को जीवन दिया

मप्र की महिलाओं ने तालाब बनाया, नया व्यवसाय भी मिला

मदुराई की सुब्बाश्री ने 500 दुर्लभ औषधियों का बगीचा बनाया

ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ಮಾತು
ವಿಶ್ವದ ಉತ್ಪಾದನಾ ಶಕ್ತಿ ಕೇಂದ್ರವಾಗಿದೆ ಭಾರತ

'मन की बात' के 10 साल, पीएम का स्वदेशी पर ज़ोर

'मन की बात' ने साबित किया है कि देश के लोगों में पॉजिटिव जानकारी की भूख है। वे गर्व से इसे सुनते हैं।
-नरेंद्र मोदी, पीएम

■ विस, नई दिल्ली : पीएम नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में देशवासियों से कहा कि त्योहारों के मौकों पर देश में बनी चीजें ही खरीदनी चाहिए। रेडियो पर प्रसारित होने वाले इस कार्यक्रम के साथ ही 'मेक इन इंडिया' अभियान ने भी एक दशक का सफर तय किया है। रविवार को पीएम ने कहा कि इस कार्यक्रम ने साबित किया है कि पॉजिटिव बातें और हौसला देने वाली कहानियां लोगों को बहुत पसंद आती हैं। पीएम ने कहा, '10 साल पहले मन की बात की शुरुआत 3 अक्टूबर को विजयादशमी के दिन हुई थी। इस साल 3 अक्टूबर को जब इसके 10 वर्ष पूरे होंगे, तब नवरात्रि का पहला दिन होगा।'

पुणे मेट्रो की पीएम मोदी ने शुरुआत की

पीएम मोदी ने विडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए महाराष्ट्र में 11,200 करोड़ रुपये की परियोजनाओं की शुरुआत और शिलान्यास किया। उन्होंने डिस्ट्रिक्ट कोट से स्वारगेट तक अंडरग्राउंड पुणे मेट्रो सेक्शन की शुरुआत की और मेट्रो को हरी झंडी दिखाई। पीएम ने कहा कि पुणे मेट्रो के फर्स्ट फेज से लोगों का आना-जाना आसान होगा।

मेक इन इंडिया ने टैलेंट उभारा, क्रिएट इन इंडिया से रचनात्मकता बढ़ेगी : मोदी

मन की बात के 10 साल : प्रधानमंत्री ने कहा-कार्यक्रम ने साबित किया, लोगों में सकारात्मक जानकारी की भूख

झांसी की जल सहेलियों ने मृतप्राय नदी को बचाया

छत्तीसगढ़ : जल संरक्षण में मिसाल बना परसतराई गांव

Listeners real anchors of Mann Ki Baat: Modi

Dheer Chawla
letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi marked the 10th anniversary of his radio programme "Mann Ki Baat" on Sunday, reflecting on the show's journey as a novel outreach mechanism and expressing his gratitude to listeners for enabling a unique connection with people across India and the world.

Appreciating the people who were featured on the show and helped push social change and new ideas, Modi emphasised that the success of the programme highlighted that listeners love stories with a positive message.

"The listeners are the real anchors of 'Mann Ki Baat'," said the Prime Minister.

Modi used the platform to encompass significant issues, starting with water conservation and the heavy rainfall in many parts of India. "We are reminded of the importance of saving water," he said, highlighting initiatives like "Catch the Rain", which encourage citizens to make every drop count.

Modi then shared a story of women in Jhansi, Bundelkhand, who revitalised the Ghurari River, a lifeline that had dried up, by constructing check dams using sandbags. "Woman power empowers water power, and water power empowers woman power," the Prime Minister remarked.

Modi's address also coincided with the upcoming 10-year anniversary of the Swachh Bharat Mission on October 2. Modi called this milestone a "real tribute" to Mahatma Gandhi and shared several stories of extraordinary citizens who have made a difference in the campaign.

Among these was the efforts of a 74-year-old man from Kozhikode, Kerala, who has repaired over 33,000 broken chairs, promoting the ethos of "Reduce, Reuse, Recycle". The PM emphasised that cleanliness and waste reduction efforts should continue to be supported, urging citizens to participate in making India cleaner, greener, and more sustainable.

Modi also turned focus onto India's cultural heritage as he touched upon the return of 300 ancient artefacts to India from the United States, an achievement he referred to as testament to India's growing respect for its history.

These artifacts, he noted, had been illegally smuggled out of India over the years. "When we take pride in our heritage, the world also respects it," Modi said.

Modi also mentioned the ongoing efforts to revive endangered languages, focusing on the Santhali language, spoken by the Santhal community in India, Bangladesh, Nepal, and Bhutan. He praised the work of Ramjit Tudu from Mayurbhanj, Odisha, who has developed a digital platform for Santhali literature, enabling people to read and write in their native language. "Collective participation, combined with determination, yields amazing results for the entire society," the Prime Minister said.

The Prime Minister also spoke about Subashree, a teacher from Madurai, Tamil Nadu, who has created a herbal garden with over 500 species of medicinal plants. Subashree's journey into herbal medicine, Modi noted, began in the 1980s after her father was bitten by a snake, and traditional herbal remedies helped him recover.

Modi then turned to the evolving nature of work and noted the rise of new sectors like gaming, animation, film making, and digital content creation. He mentioned the Create in India initiative launched by the ministry of information and broadcasting, which includes 25 challenges focused on encouraging innovation in these fields.

The PM also commemorated the 10th anniversary of the Make in India initiative, which he described as a game-changer for India's economy, benefiting the poor, middle class, and MSMEs. He highlighted the country's rise as a manufacturing powerhouse, with increasing exports in sectors like automobiles, textiles, aviation, electronics, and defence.

Foreign Direct Investment (FDI) inflows, Modi noted, are a clear indication of the initiative's success. He emphasised two key goals: ensuring that products made in India meet global standards of quality and promoting the use of local products. "Vocal for Local is not just about buying diyas during Diwali," he said, urging citizens to make Made in India products their first choice during the upcoming festival season.

As he concluded his address, Modi expressed his warm wishes to the nation as it enters the festive season, starting with Navratri. He urged citizens to celebrate with pride by supporting local products, promoting sustainability, and continuing the spirit of community-driven change. "I wish you all warm wishes for the festive season," said the Prime Minister, concluding the 114th episode of Mann ki Baat.

Observers of the outreach programme said the radio show's 10-year journey had significantly widened the reach of Modi's messaging.

"[Mann ki Baat] has been an important way of communication between the prime minister and the people. The preparation for that and the collation of data and information has been phenomenal. Each time he speaks and chooses a theme, he makes sure to take examples like this time he spoke of the Santhali language. There is no doubt that those who support him, his party and his government would see it as a very important chronicling of his communication with the people, whereas those on the other side of the fence would have questions as they always have," said Sandeep Shastri, political scientist.

"The politics of it would always be there. But, it's an interesting way of addressing the people. And the Prime Minister has been very adept at that. Every time he wishes to make a major point it's not at a press conference, but it is through Mann ki Baat and similar such direct addresses to the people. That is his style of communicating with people."

Highlights from address

ON 10 YRS OF MANN KI BAAT
"There are many phases in this long journey of Mann ki Baat I can never forget. Crores of listeners have been our companions in this journey."

CONSERVING WATER
"It has been raining heavily in different parts of the country. This rainy season reminds us how important water conservation is."

PRESERVING LANGUAGES
"In our country, there are almost 20,000 languages. Unique efforts are being made to preserve them."

CELEBRATING 10 YEARS OF SWACHH BHARAT
"Swachh Bharat is not a campaign for one day or one year; it is a task to be undertaken continuously for ages."

Odisha's Santali language activist finds mention in PM Modi's Mann Ki Baat

EXPRESS NEWS SERVICE
@ Bhubaneswar

AS Prime Minister Narendra Modi's monthly radio programme 'Mann Ki Baat' completed 10 years on Sunday, one of the heroes who featured in the special edition of the broadcast was Odisha's **Ramjit Tudu**.

A techie who works as an assistant revenue inspector under Jashipur tehsil of Mayurbhanj district, Ramjit has been providing a digital platform to Santali literary voices from across the world to express themselves.

The New Indian Express in its Brightside section had recently featured Ramjit who for the last one decade has been digitising his mother tongue Santali and giving it an online identity.

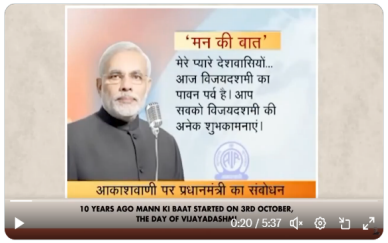

Stating that mother tongue is the first language that a child identifies with, the prime minister said Ramjit has started a campaign to give a new identity to Santali language with the help of digital innovation.

"Ramjit ji has prepared a digital platform where literature related to Santali language can be read and written. A few years back when he started using mobile phone, he was saddened by the fact that he could not send messages in his mother tongue. After that, he started exploring the possibilities of typing 'Ol Chiki' script of Santali language. Today, due to his efforts, articles written in Santali language are reaching millions of people," Modi said.

Ramjit had launched Ol Chiki Tech - a platform on Facebook - with two other language activists R Ashwani Banjan Murmu and Bapi Murmu to promote and share tools to type in the script. He continues to upgrade these tools and guide Santali writers on how to use them even today.

After Santali Wikipedia was formed in 2018, he along with Wikipedians contributed over 11,000 articles in Santali language on various topics. With very little Santali literature available on the web for people of the community to read online, Ramjit also founded and designed 'Birmali' (www.birmali.com), the first literary e-magazine in Santali language four years back. This magazine is aimed at giving a platform to Santali writers to publish their works online for a wider reach.

चकोर पक्षी जैसे हैं देशवासी, गर्व से सुनते देश की उपलब्धियां : मोदी

ਭਾਰਤ ਨਿਰਮਾਣ ਖੇਤਰ 'ਚ ਪਾਵਰਹਾਊਸ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ-ਮੋਦੀ

3 ਅਕਤੂਬਰ ਨੂੰ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਦੇ 10 ਸਾਲ ਪੂਰੇ ਹੋ ਜਾਣਗੇ

મન કી બાત 3 ઓક્ટોબરે 10 વર્ષ પૂરાં થઈ રહ્યાં છે

સાબિત થયું કે લોકો પોઝિટિવ સ્ટોરી પસંદ કરે છેઃ PM મોદી

પાણીની અછતવાળા ઝાંસીમાં મહિલાઓએ નદીને જીવન આપ્યું

મધ્ય પ્રદેશની મહિલાઓએ તળાવ બનાવ્યું, નવો વ્યવસાય પણ મળ્યો

મદુરાઈની સુબાશ્રીએ 500 દુર્લભ ઔષધિના બગીચો બનાવ્યો

सणासुदीला 'मेड इन इंडिया' वस्तू खरेदी करा

पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांचे आवाहन

सकाळ न्यूज नेटवर्क

नवी दिल्ली, ता. २९ : सणासुदीच्या काळात देशवासीयांनी 'मेड इन इंडिया' वस्तूंची खरेदी करावी, असे आवाहन पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी रविवारी आकाशवाणीवरील मन की बात कार्यक्रमात बोलताना केले. कोणतेही सामान खरेदी करताना किंवा भेट वस्तू देताना ते 'मेड इन इंडिया' असेल, याची खात्री करा, असे मोदी म्हणाले.

'मन की बात' या कार्यक्रमाला दहा वर्षे पूर्ण होत आहेत. हा कार्यक्रम विजयादशमीच्या दिवशी सुरु झाला होता आणि दहा वर्षे ज्यादिवशी पूर्ण होतील, तो नवरात्रीचा पहिला दिवस असेल. 'मन की बात' चे अनेक टप्पे आपण विसरू शकत नाही," असे मोदी म्हणाले. मोदी यांनी आजच्या कार्यक्रमात पुदुचेरीच्या समुद्र किनाऱ्यावरील स्वच्छता अभियानाचे उदाहरण दिले. "दोन ऑक्टोबर रोजी स्वच्छ भारत अभियानाची दहा वर्षे पूर्ण होत आहेत. देशाच्या कोणत्या ना कोणत्या भागात स्वच्छता अभियानाच्या अनुषंगाने काही ना काही कामे सुरू आहेत. उत्तराखंडमधील उत्तरकाशी भागात झाला नावाचे गाव आहे. या गावातील लोक दिवसातील दोन तास स्वच्छतेची कामे करतात. असे कार्यक्रम अन्यत्र होणे आवश्यक आहे," असेही मोदी यांनी सांगितले.

'मन की बात' के 10 साल को पीएम मोदी ने बताया अहम

भारत को अपनी 4 हजार पुरानी विरासत पर गर्व झांसी की 'जल सहेलियों' की जमकर तारीफ की

11,200 करोड़ की परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास

जल सहेली ने मृतप्राय नदी को लबालब किया

സുബ്രഹ്മണ്യന്റേത് വിസ്മയകരമായ പ്രയത്നം: അഭിനന്ദിച്ച് പ്രധാനമന്ത്രി

Promote local, produce global quality: PM to manufacturers

Prime Minister Narendra Modi on Sunday urged Indian manufacturers to focus on meeting global quality standards and promoting local products under the 'Vocal for Local' initiative.

Speaking on 'Mann Ki Baat,' a monthly radio programme the prime minister uses to reach out to the citizens, Modi credited his government's 'Make in India' campaign for transforming India into a global manufacturing powerhouse.

"The success of this campaign (Make in India) includes the contribution of the country's big industries as well as small shopkeepers," he said.

"Today, India has become a manufacturing powerhouse, and it is because of the youth power of the country that the whole world is looking up to us. Be it automobiles, textiles, aviation, electronics or defence...every sector in the country's exports is constantly on the rise," he added.

Launched in September 2014, the Make in India initiative aims to foster domestic production by encouraging companies to develop, manufacture, and assemble products within the country. RHIK KUNDU

Prime Minister Narendra Modi PTI

Found many talented Indians in 10 yrs of 'Mann Ki Baat': PM

NEW DELHI, SEPTEMBER 29

Prime Minister Narendra Modi on Sunday said that through his monthly radio show "Mann Ki Baat", he had, over the past 10 years, become familiar with several talented people across the country.

Pointing out that the first episode of the show was broadcast 10 years ago on Vijayadashami day on October 3, 2014, Modi said, "There are so many talented people in our country... How much passion they have, to serve the country and society. They dedicate their entire life to serving people selflessly. Knowing about them fills me with energy. This whole process of 'Mann Ki Baat', for me, is like going to temple to have a 'darshan' of the Almighty."

Uttarakhand CM Pushkar Dhami and others listen to 'Mann Ki Baat'.

Referring to the 10 years of "Make in India", the PM said the continual rise of FDI in the country was narrating the initiative's success. "Now, we are mainly focusing on two things. The quality of goods we manufacture should be of global standard; and the local products should get maximum promotion under the 'Vocal for Local' scheme," he said.

Mentioning his recent US visit, Modi said the Joe Biden government had returned around 300 ancient artefacts to India. "Biden, very affectionately, showed me some of these artefacts at his residence in Delaware. The returned artefacts are made of materials such as terracotta, stone, ivory, wood, copper and bronze. Many of these are 4,000 years old," he said. —TNS

A decade of 'Make in India': Modi asks people to buy local products for festivals

RAJESH KUMAR THAKUR @ New Delhi

ON completion of 10 years of 'Make in India' initiative, Prime Minister Narendra Modi in his 114th episode of the monthly radio programme 'Maan Ki Baat' on Sunday urged the people to buy locally made products during festivals.

He also invited the creator community to showcase their talent and strengthen the 'Create in India' movement.

He also said that 'Mann Ki Baat' shows people like positive stories and inspiring examples. "This episode today is going to make me emotional. It is flooding me with a lot of memories. The reason is that this journey of ours in 'Mann Ki Baat' is completing 10 years. 'Mann Ki Baat' started on the day of Vijayadashami on October 3, a decade ago", he said.

"This year on October 3 when 10 years of 'Mann Ki Baat' are completed, it will be the first day of Navratri," he said.

The PM cited many examples of Make in India initiative taken up across the country. He also emphasised water conservations practices and cited some examples from several states.

Highlighting the success of Make in India initiative, the PM said the programme has facilitated a rise in exports from every sector. The rise in Foreign Direct Investment is a testimony to its success, he said.

Speaking about his mantra of governance —Vikas (development) with 'Virasat' (heritages), the PM referred to his recent visit to the US. "The return of nearly 300 antiquities to India has widely been appreciated. It shows when people start taking pride in their heritage, the world respects their sentiments," he said, adding that a large number of ancient artefacts were brought back from different countries in the last 10 years of his government.

"In today's world, India has become a manufacturing powerhouse and it is because of the youth power of the country that the whole world is looking up to us," he said.

He also suggested that people gift their loved ones something made locally. "Any product that has been made with the sweat of an Indian artisan is our pride — we always have to lend glory to this pride," he said.

> In today's world, India has become a manufacturing powerhouse and it is because of the youth power of the country that the whole world is looking up to us
>
> Narendra Modi, Prime Minister

पीएम मोदी ने मन की बात में छतरपुर और डिंडोरी जिले में स्व सहायता समूह के काम को सराहा

महिलाओं ने बंजर जमीन पर तैयार किया फ्रूट फॉरेस्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

गांव का बड़ा तालाब जब सूखने लगा तो महिलाओं ने पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया। महिलाओं ने बड़ी मात्रा में गाद निकाली। गाद का उपयोग बंजर जमीन पर फ्रूट फॉरेस्ट तैयार करने में किया। महिलाओं की मेहनत से ना सिर्फ तालाब में पानी भर गया, बल्कि फसलों की उपज भी बढ़ी है। -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

छतरपुर. जिला मुख्यालय से 10 किमी दूर खोंप गांव की महिलाओं की चर्चा रविवार को देशभर में हुई। पीएम मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में इनका जिक्र किया। दरअसल, 10 महिलाओं ने हरि बगिया नाम से स्वसहायता समूह बनाया है। समूह ने अपनी मेहनत, प्रशासन के सहयोग से आर्गेनिक फ्रूट फॉरेस्ट तैयार किया है। चंदेलकालीन तालाब की मिट्टी निकालकर उपयोग पौधरोपण में किया गया। दो हेक्टेयर में सिंचाई के लिए ड्रिप एरिगेशन की व्यवस्था है।

फॉरेस्ट के लिए बंजर जमीन को जिला प्रशासन ने अतिक्रमण मुक्त कराया था। अब महिलाओं, प्रशासन, ग्राम पंचायत के अधिकारियों के समन्वय की प्रशंसा हो रही है। समूह की अध्यक्ष कौशल्या रजक हैं और सचिव पार्वती रजक हैं। यहां फल एवं सब्जी का उत्पादन किया जा रहा है। रविवार को सीएम डॉ. मोहन यादव, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा ने मन की बात कार्यक्रम सुना। उन्होंने समूहों के प्रयास की प्रशंसा की।

मछली पालन बना आय का जरिया

डिंडोरी. रयपुरा के शारदा स्व-सहायता समूह की महिलाओं के जलसंरक्षण व मछली पालन से आत्मनिर्भर बनने के प्रयास का भी पीएम ने जिक्र किया है। 2014 में 10 एकड़ के जलाशय को समूह को पट्टे पर देकर करीब 32 हजार से एक लाख फिंगरलिंग डलवाए गए। महिलाओं ने मछली बेचना शुरू किया। एक दिन में 3-4 हजार की बिक्री कर लेती हैं।

'କ୍ରିଏଟ ଇନ ଇଣ୍ଡିଆ' ଆହ୍ୱାନ କରିଥାରେ ନିଜର ସୃଜନଶୀଳତାକୁ ଉଜାଗର କରନ୍ତୁ : ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ

متعدد ممالک ہندوستانی نوادرات کر رہے ہیں واپس ▫ ملک میں 20ہزار زبانیں اور بولیاں

తండ్రి స్ఫూర్తి.. హరిత దీప్తి!

Ahead of Mann ki Baat 10th anniv, PM highlights efforts to save water

Join 'Create in India' challenge, be a part of new sectors: PM

PM pat for U'khand village's swachh mission

भारत दुनिया में विनिर्माण का 'पावरहाउस' बना : मोदी

■ नई दिल्ली (भाषा)।

मन की बात के 10 साल पूरे

■ कहा, सभी देशों की नजरें हम पर हैं टिकी

■ त्योहारों पर 'मेड इन इंडिया' उत्पादों का दें उपहार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को कहा कि भारत आज दुनिया में विनिर्माण का 'पावरहाउस' बन गया है और सभी देशों की नजरें 'हम पर टिकी हैं' क्योंकि सरकार वैश्विक गुणवत्ता वाली चीजों के निर्माण के साथ ही स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 114वीं कड़ी में मोदी ने देशवासियों से त्योहारों के मौसम में उपहार स्वरूप 'मेड इन इंडिया' उत्पादों को एक-दूसरे को देने का आह्वान किया।

'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के 10 वर्ष पूरे होने का उल्लेख करते हुए मोदी ने कहा कि इस अभियान की सफलता में, देश के बड़े उद्योगों से लेकर छोटे दुकानदारों तक का योगदान शामिल है। उन्होंने कहा कि उन्हें यह देखकर बहुत खुशी मिलती है कि गरीब, मध्यम वर्ग और सूक्ष्म व मध्यम उद्योग को इस अभियान से बहुत फायदा मिल रहा है और इस अभियान ने हर वर्ग के लोगों को अपनी प्रतिभा सामने लाने का अवसर दिया है। मोदी ने कहा, आज, भारत विनिर्माण का पावरहाउस बन गया है और देश की युवा-शक्ति की वजह से दुनिया-भर की नजरें हम पर हैं। ऑटोमोबाइल्स हो, टेक्सटाइल्स हो या फिर उड्डयन का क्षेत्र या फिर इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा का क्षेत्र हो। हर क्षेत्र में देश का निर्यात लगातार बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का लगातार बढ़ना भी 'मेक इन इंडिया' की सफलता की गाथा कह रहा है। उन्होंने कहा कि देश अब वैश्विक गुणवत्ता वाली चीजों के निर्माण के साथ ही स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

महाराष्ट्र के भंडारा जिले में 50 से भी अधिक स्वसहायता समूहों की ओर से टसर सिल्क को संरक्षित करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह स्थानीय समुदायों को सशक्त बना रहे है और साथ ही 'मेक इन इंडिया' की भावना को भी दर्शा रही है। उन्होंने त्योहारों के इस मौसम में 'मेड इन इंडिया' उत्पाद को बढ़ावा देने का आह्वान करते हुए कहा, 'आप कुछ भी उपहार देंगे, वह 'मेड इन इंडिया' ही होना चाहिए।'

श्रोता ही 'मन की बात' के असली सूत्रधार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रोताओं को 'मन की बात' कार्यक्रम का असली 'सूत्रधार' करार देते हुए रविवार को कहा कि इस रेडियो कार्यक्रम ने साबित किया है कि देश के लोगों में सकारात्मक जानकारी की कितनी भूख है और सकारात्मक बातें एवं प्रेरणादायी उदाहरण उन्हें बहुत पसंद आते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता अभियान के महत्व को भी रेखांकित किया और लोगों से इसमें भाग लेने का आह्वान किया। मोदी ने कहा कि इस कार्यक्रम की लंबी यात्रा में ऐसे कई पड़ाव आए जिन्हें वह कभी भूल नहीं सकते। उन्होंने कहा, हमारी इस यात्रा के कई ऐसे साथी हैं जिनका हमें निरंतर सहयोग मिलता रहा है। 'मन की बात' के श्रोता ही इस कार्यक्रम के असली सूत्रधार हैं। आमतौर पर एक धारणा ऐसी गढ़ी गई है कि जब तक किसी कार्यक्रम में चटपटी और नकारात्मक बातें ना हों तब तक उसे ज्यादा तवज्जो नहीं मिल पाती।

■ मोदी ने कहा, सकारात्मक बातें लोगों को पसंद

अमृत विचार

Mann Ki Baat: पीएम मोदी ने की झांसी की जल सहेलियों की तारीफ, कहा- 'जल सहेली' ने घुरारी नदी को बचाया

दैनिक भास्कर

man ki bat: प्रधानमंत्री मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में जल-संरक्षण के लिए प्रदेश के महिला स्व-सहायता समूहों की पहल को सराहा

ET NOW स्वदेश

'Mann ki Baat' को दस साल पूरे; पीएम मोदी ने दिया धन्यवाद, बोले - श्रोता ही असली सूत्रधार

Hindustan Times

'Listeners are real anchors': PM Modi marks 10 years of 'Mann Ki Baat'

The Indian EXPRESS

Rise in FDI shows success of 'Make In India'; exports in every sector up: PM Modi

Jagran

जागरण संपादकीय: मन की बात के दस वर्ष... प्रधानमंत्री ने जनता को विभिन्न विषयों के प्रति किया जागरूक

खास खबर

'मन की बात' कार्यक्रम : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों को स्वच्छता, जन भागीदारी और वोकल फॉर लोकल का दिया संदेश

mid-day

'Mann Ki Baat' shows people like positive stories: PM Modi

नईदुनिया

Mann Ki Baat: मन की बात में पीएम मोदी ने सराहा छतरपुर की महिलाओं का काम, बोले- सूखा तालाब जिंदा कर दिया

Odishatv.in
We Report, You Decide

'Mann Ki Baat': PM Narendra Modi hails return of artefacts from US, calls it triumph for India's heritage

THE ECONOMIC TIMES

PM Modi urges creators to participate in 'Create in India' challenge in his 'Mann Ki Baat' address

ThePrint

भारत दुनिया में विनिर्माण का 'पावरहाउस' बना, सभी देशों की नजरें हम पर टिकी हैं: मोदी

The Statesman

PM lauds Jhansi women's contribution to water conservation in 'Mann Ki Baat' program

TIMES NOW
नवभारत

Mann ki Baat: 'मन की बात' के 10 साल पूरे, पीएम मोदी ने कहा- करोड़ों श्रोता इस कार्यक्रम के असली सूत्रधार; हर गांव में शुरू हो धन्यवाद प्रकृति अभियान

THE TIMES OF INDIA

Modi lauds U'khand village's unique cleanliness campaign in 'Mann Ki Baat'

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

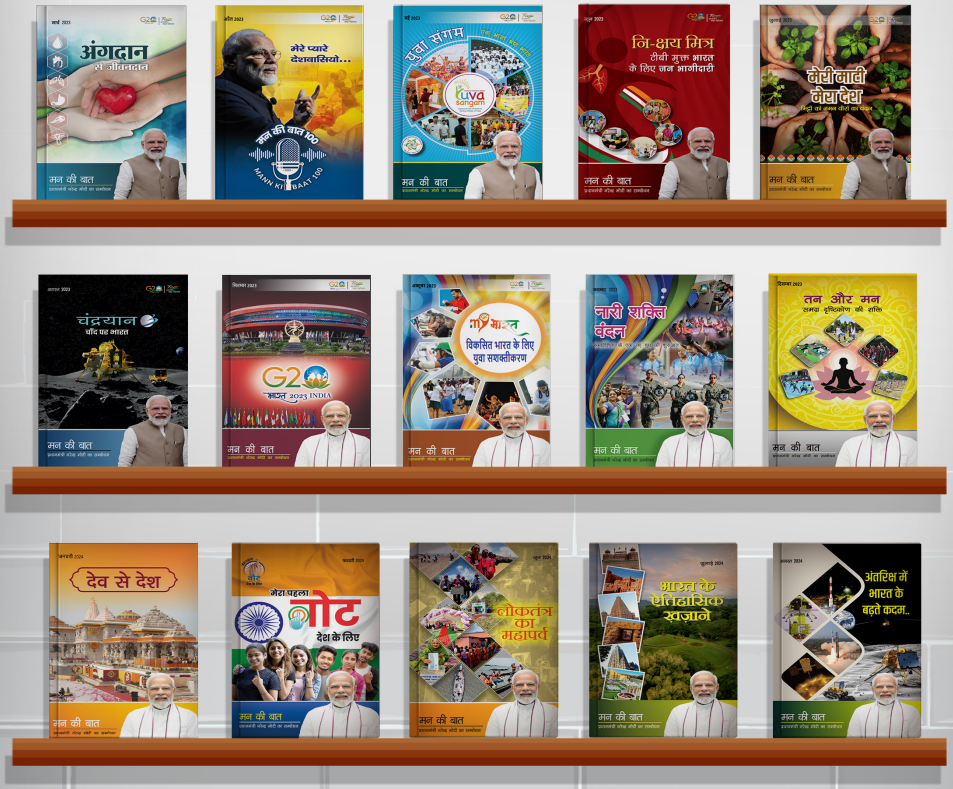

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार